प्रकाशन का सफलतम 17 वां वर्ष

सुविचार

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा,
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा..!

श्रीमद् भगवद् गीता

www.purvanchalsurya.com

पूर्वांचल सूर्य

आवाज आज की, नज़र कल पर

रांची ➤दिल्ली➤देवघर से प्रकाशित

RNI No.- JHAHIN/2007/24306

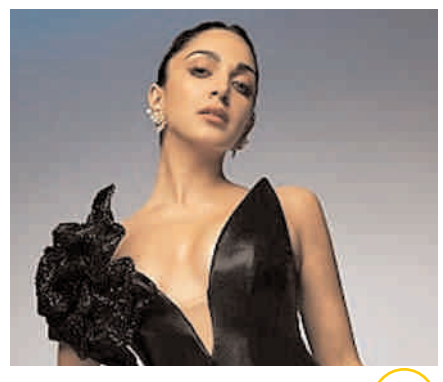

वर्ष - 17 | अंक 200 | दैनिक | रांची | सोमवार 04 मार्च 2024 | पृष्ठ - 12 | मूल्य : ₹ 4.00

दमन और दीव से चुनाव लड़ सकती हैं प्रियंका !

सस्पेंश के बीच कांग्रेस नेता केतन पटेल का है बड़ा दावा

दमन और दीव (एजेंसी)। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी आगामी लोकसभा चुनाव दमन और दीव से लड़ सकती हैं। केंद्र शासित प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष केतन पटेल ने रविवार को इसकी जानकारी दी। केतन ने कहा– प्रियंका गांधी यहां से संभावित उम्मीदवार हो सकती हैं, क्योंकि पार्टी आलाकमान ने उन्हें इसके लिए डेटा इकट्ठा करने के लिए कहा है। मैं इस प्रस्ताव का स्वागत करता हूं। केतन ने बताया, प्रियंका के आने से पूरा दक्षिण गुजरात जो हमेशा कांग्रेस के साथ रहा है और सौराष्ट्र जो दीव से सटा हुआ है, उसे यहां फायदा होगा। पार्टी जो डेटा कलेक्ट कर रही है उसमें जमीन हकीकत जैसे बिंदु शामिल हैं। इस दौरान मतदाताओं की पसंद और उम्मीदवारों के पिछले प्रदर्शन को देखा जाएगा। कांग्रेस की तरफ से फिलहाल लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की एक भी लिस्ट जारी नहीं की गई है। हालांकि प्रियंका गांधी के दमन और दीव के अलावा यूपी के रायबरेली से भी चुनाव लड़ने की चर्चा है। रायबरेली से मौजूदा सांसद सोनिया गांधी ने इस बार राज्यसभा के लिए नामांकन भरा है। ऐसे में कांग्रेस पार्टी सोनिया की सीट से परिवार के किसी सदस्य को ही टिकट दे सकती है।

पवन सिंह का इनकार, आसनसोल से नहीं लड़ेंगे चुनाव

बीजेपी ने कल ही बनाया था उम्मीदवार, टीएमसी का तंज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री के स्टार पवन सिंह ने आसनसोल लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया है। उन्होंने एक्स कर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी है। उन्होंने अपने संदेश में लिखा, भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का दिल से आभार प्रकट करता हूं। पार्टी ने मुझ पर विश्वास करके आसनसोल का उम्मीदवार घोषित किया, लेकिन किसी कारणवश मैं आसनसोल से चुनाव नहीं लड़ पाऊंगा। पवन सिंह के चुनाव लड़ने से इनकार करने पर तृणमूल कांग्रेस के महासचिव और ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने तंज कसा है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पवन सिंह के पोस्ट को रिपोस्ट करते हुए लिखा, यह पश्चिम बंगाल के लोगों की अदम्य भावना और शक्ति है। भाजपा के द्वारा कल ही 195 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की गई थी, जिसमें पवन सिंह का भी नाम शामिल था। बीजेपी ने उन्होंने पश्चिम बंगाल की आसनसोल सीट से उम्मीदवार बनाया था, जहां से टीएमसी से शत्रुघ्न सिन्हा सांसद हैं।

शहबाज शरीफ के हाथ होगी पाक की कमान

लगातार दूसरी बार बने प्रधानमंत्री, इमरान को बड़ा झटका

इस्लामाबाद (एजेंसी)। शहबाज शरीफ को पाकिस्तान के 24वें प्रधानमंत्री के रूप में चुना गया है। प्रधानमंत्री के चुनाव के लिए पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में वोटिंग हुई। नेशनल असेंबली के स्पीकर अयाज सादिक ने वोटों का रिकॉर्ड पेश किया। अयाज सादिक ने नतीजों की घोषणा करते हुए कहा कि शहबाज शरीफ 201 वोट पाकर दूसरी बार प्रधानमंत्री चुने गए हैं। तीन बार पंजाब के मुख्यमंत्री रहे शहबाज शरीफ साल 2022 में पहली बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के तौर पर उनका पहला कार्यकाल सिर्फ 16 महीने तक का ही रहा। अगस्त 2023 में अपनी सरकार का कार्यकाल पूरा होने पर शाहबाज शरीफ ने दावा किया था कि उन्होंने पाकिस्तान को डिफॉल्ट से बचाया। उन्होंने कहा कि जिन परिस्थितियों में उन्हें अर्थव्यवस्था मिली। उन्होंने 16 महीनों में जितना संभव हो सके उतना प्रयार किया है। अब एक बार फिर 9 फरवरी 2024 को चुनाव के नतीजों और नई नेशनल असेंबली के गठन के बाद उन्हें दूसरी बार पाकिस्तान का प्रधानमंत्री चुना गया है। पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के छोटे भाई शाहबाज शरीफ का जन्म 195 0 में लाहौर में हुआ था। शहबाज शरीफ को 1985 में लाहौर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का अध्यक्ष भी चुना गया था।

मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने गढ़वा में नवनिर्मित समाहरणालय भवन का किया उद्घाटन

विशेष संवाददाता

गढ़वा। मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने गढ़वा जिले में नव निर्मित समाहरणालय भवन, बिरसा मुंडा पार्क, अंतर -राज्यीय बस अड्डा और बहुद्देशीय नीलाम्बर- पीताम्बर सांस्कृतिक भवन का किया लोकार्पण मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर समाहरणालय भवन परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बिरसा मुंडा पार्क में भगवान बिरसा मुंडा और नीलांबर- पीतांबर सांस्कृतिक भवन के प्रांगण में अमर शहीद नीलाम्बर- पीताम्बर की नव स्थापित प्रतिमा का भी किया अनावरण। मुख्यमंत्री ने रंका मोड़ पर बाबा साहब डॉ भीमराव आम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दी श्रद्धांजलि।

यात्रियों की टेंशन खत्म! अब मिलेगी बड़ी सुविधा

देश भर में दौड़ेंगी अमृत भारत ट्रेनें, 1 हजार से अधिक का हो रहा निर्माण

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत आने वाले वर्षों में नई पीढ़ी की करीब 1,000 अमृत भारत ट्रेनों का निर्माण करेगा। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को खुद यह बात कही। उन्होंने बताया कि 250 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने वाली ट्रेन बनाने का काम जारी है। वैष्णव ने कहा कि रेलवे ने वंदे भारत ट्रेनों के निर्यात पर काम पहले ही करना शुरू कर दिया है और देश द्वारा पहला निर्यात अगले पांच वर्षों में किए जाने की उम्मीद है। नरेंद्र मोदी नीत सरकार के पिछले 10 वर्षों में रेलवे की ओर से की गई परिवर्तनकारी पहलों पर उन्होंने बयान दिया। दुनिया का सबसे ऊंचा रेल पुल भी तैयार है।

आज रेलवे स्टेशन 10 साल पहले की तुलना में बहुत अलग

रेल मंत्री ने कहा कि अन्य 12,000 करोड़ रुपये रखरखाव पर खर्च होते हैं और सभी मिलकर लगभग 2.40 लाख करोड़ रुपये होते हैं। वैष्णव ने कहा, हम इन सभी खर्चों को पूरा करने में सक्षम हैं क्योंकि टीम प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में बहुत कड़ी मेहनत कर रही है। आज रेलवे स्टेशन 10 साल पहले की तुलना में बहुत अलग हैं। स्टेशन और ट्रेनें साफ-सुथरी हैं और हर ट्रेन में जैव-टॉयलेट है। रेल मंत्री के मुताबिक, नई तकनीक के आने से वंदे भारत जैसी ट्रेनें युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय हो गई हैं।

विश्व स्तरीय है अमृत भारत ट्रेन की डिजाइनः वैष्णव

मंत्री ने कहा कि हमने अमृत भारत ट्रेन डिजाइन की है, जो एक विश्व स्तरीय ट्रेन है। इसके जरिए केवल 454 रुपये के खर्च पर 1,000 किलोमीटर की यात्रा की जा सकती है। वैष्णव ने कहा कि भारत आने वाले वर्षों में कम से कम 1,000 नई पीढ़ी की अमृत भारत ट्रेनों का निर्माण करेगा और 250 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने वाली ट्रेन बनाने का काम जारी है। उन्होंने रेलवे के कुल वार्षिक व्यय का ब्यौरा दिया। उन्होंने कहा कि पेंशन, वेतन, ऊर्जा खर्च और पट्टा-ब्याज भुगतान पर व्यय क्रमशः 55,000 करोड़ रुपये, 97,000 करोड़ रुपये, 40,000 करोड़ रुपये और 32,000 करोड़ रुपये है।

दंगों में नुकसान पर धामी सरकार का होगा सख्त ऐक्शन

वसूली के लिए उत्तराखंड में बनेगा सख्त कानून

देहरादून (एजेंसी)। दंगा, हड़ताल और विरोध-प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति को होने वाले नुकसान की भरपाई का कानून सोमवार को प्रस्तावित कैबिनेट बैठक में आ रहा है। पुष्कर सिंह धामी सरकार

उत्तराखंड में अध्यादेश के जरिए लागू कर सकती है। इस कानून के तहत सम्पत्ति को हुए नुकसान की भरपाई घटना के दिन वाले बाजार मूल्य के आधार पर उपद्रवियों से की जाएगी। विरोध-प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति को निशाने पर लेने की प्रवृत्ति पर लगाम कसने के लिए गृह विभाग ने वसूली कानून तैयार कर लिया है।

भारत में पाक से दोगुनी बेरोजगारी, मोदी ने छोटे व्यवसाय खत्म किए

- एमपी में भारत जोड़ो न्याय यात्रा का दूसरा दिन, ग्वालियर में राहुल का बड़ा वार

ग्वालियर (एजेंसी)। राहुल गांधी ने कहा, आज देश में पिछले 40 साल में सबसे ज्यादा बेरोजगारी है। यह पाकिस्तान की तुलना में दोगुनी है। हमारे पास बांग्लादेश-भूटान से भी अधिक बेरोजगार युवा हैं क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नोटबंदी और जीएसटी लागू करके छोटे व्यवसायों को खत्म कर दिया है। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल ने यह बात भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान रविवार को ग्वालियर में कही। उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा, अंबानी के यहां बेटे की शादी हो रही है। वहां दुनियाभर के लोग आ रहे हैं। यहां आप लोग भूखे मर रहे हैं। इससे पहले राहुल ने ग्वालियर के देवास गार्डन में अग्निवीरों और पूर्व सैनिकों से संवाद किया। मोहना में रोड शो किया। यात्रा के शेड्यूल में बदलाव के मुताबिक राहुल पहले दिल्ली और फिर वहां से बिहार की राजधानी पटना पहुंचे हैं। वे पटना में इंडिया गठबंधन की रैली में शामिल होंगे। बीजेपी सरकार ने बड़े-बड़े अरबपतियों का लाखों-करोड़ों का कर्ज माफ कर दिया।

किसान 6 मार्च को दिल्ली जाएंगे, 10 को ट्रेन रोकेंगे

- पंधेर बोले-देशभर से किसान आएंगे, पंजाब वाले शंभू-खनौरी बॉर्डर पर ही बैठेंगे

अंबाला (एजेंसी)। पंजाब-हरियाणा के शंभू-खनौरी बॉर्डर पर आंदोलन कर रहे किसान 6 मार्च को दिल्ली कूच करेंगे। 10 मार्च को दोपहर 12 से 4 बजे तक देशभर में ट्रेनें भी रोकी जाएंगी। ये ऐलान किसान नेता सरवण सिंह पंधेर ने रविवार (3 मार्च) को बठिंडा में शुभकरण सिंह की अंतिम अरदास के दौरान मंच से किया। पंधेर ने कहा कि हरियाणा-पंजाब के किसान खनौरी-शंभू बॉर्डर पर ही आंदोलन चलाएंगे, जबकि देश के बाकी हिस्सों से किसान उस दिन दिल्ली पहुंचेंगे। दूसरे राज्यों के किसान जैसे हो दिल्ली पहुंचें।

'जो काम 17 साल में नहीं हुआ, वह हमने 17 महीने में करके दिखाया'

जन विश्वास रैली में तेजस्वी यादव की ललकार, नीतिश पर कसा तंज

कहा-सीएम नीतिश कुमार जी का सम्मान करते हैं, वह जहां रहे खुश रहें

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में रविवार को महागठबंधन की 'जन विश्वास महारैली' में राज्य के पूर्व डिप्टी सीएम और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि जो काम 17 साल में नहीं हुआ, वह उन्होंने 17 महीने में अपनी सरकार में करके दिखाया था। उन्होंने नीतिश कुमार के एनडीए का दामन थामने पर तंज कसते हुए कहा, नीतिश जी का सम्मान करते हैं, वह जहां रहे खुश रहें। कुछ लोग लालच में घुटने टेकते हैं, जनता उनका जवाब देगी। उन्होंने कहा कि

कुछ विधायकों के इधर-उधर जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। तेजस्वी यादव ने कहा, बीजेपी वाले कहते हैं मोदी की गारंटी। मैं कहता हूं आप चाचा की गारंटी लेकर दिखाओ। बिहार सरकार को इंश्योरेंस करवा लेना चाहिए। चाचा की कोई गारंटी नहीं है। रितिक रोशन के फिल्म का गाना गाते हुए तेजस्वी ने नीतिश कुमार पर तंज कसा। उन्होंने इधर चला मैं, उधर चला, जाने कहां मैं फिसल गया। ऐसे हैं हमारे चाचा जी। तेजस्वी यादव ने कहा आरजेडी सबकी पार्टी है।

भारतीय नौसेना के जहाज से जम्मू का नौसैनिक लापता

कोच्चि (एजेंसी)। भारतीय नौसेना के जहाज से एक नौसैनिक पिछले 6 दिन से लापता है। नौसैनिक की पहचान सी मैन रैंक के साहिल वर्मा के रूप में की गई है। वे 27 फरवरी से लापता हैं। 19 साल के साहिल जम्मू के रहने वाले हैं। वे 2022 में भारतीय नौसेना में शामिल हुए थे। भारतीय नौसेना के पश्चिमी नौसेना कमान ने शनिवार (2 मार्च) को घटना की जानकारी दी। नौसेना ने बताया कि साहिल की तलाश के लिए जहाजों और विमानों के साथ बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया है। नौसेना ने नौसेना बोर्ड ऑफ इंक्वायरी को मामले की जांच के आदेश दिए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, साहिल जिस शिप से लापता हुए हैं, वह 25 फरवरी को कोच्चि से रवाना हुआ था। साहिल को आखिरी बार 25 फरवरी को शिप पर देखा गया था। उनके लापता होने की परिस्थितियां अभी तक स्पष्ट नहीं हैं। साहिल के लापता होने की जानकारी उनके परिवार को 29 फरवरी को दी गई।

अमेरिका के टेक्सास में लगी सबसे भीषण आग

छह दिनों से जल रहा है जंगल, दो लोगों की मौत

स्टिन्नेट (एजेंसी)। अमेरिका के टेक्सास राज्य में अग्निशामकों को राज्य के इतिहास की सबसे बड़ी जंगल की आग को पैनहैंडल शहर के बड़े हिस्से में फैलने से रोकने के लिए शनिवार को बढ़ते तापमान और तेज हवाओं जैसी कठिन मौसमी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। 'स्मोकहाउस क्रीक आग' को टेक्सास के इतिहास की सबसे बड़ी जंगल की आग माना जा रहा है। जंगल में आग सोमवार को लगी लेकिन अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह कैसे लगी। इसके बाद यह टेक्सास के कैनेडियन शहर के आसपास फैल गई। बुधवार तक आग पैनहैंडल में बड़े पैमाने पर खेतों तक फैल गई थी और बृहस्पतिवार तक यह राज्य की सबसे भीषण आग में तब्दील हो गई। आग पर काबू पाने की कोशिश में लगे अग्निशामकों की टीम के प्रवक्ता जेसन नेडलो ने बताया कि दमकलकर्मियों का लक्ष्य उत्तरी और पूर्वी सीमा पर आग पर काबू पाना है क्योंकि दक्षिण-पश्चिम से चल रही तेज हवाओं से आग की लपटों के कई एकड़ जमीन में फैलने का खतरा है।

कॉर्पोरेशन अमोंग कोऑपरेटिव की भावना से मजबूत होगा सहकारिता आंदोलनः अमित शाह

विशेष संवाददाता

रांची/नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में शहरी सहकारी बैंकों के अम्ब्रेला संगठन, नेशनल अर्बन कोऑपरेटिव फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनयुसीएफडीसी) का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अमित शाह ने कॉर्पोरेशन अमोंग कोऑपरेटिव की भावना को मजबूत करने पर बल दिया।

अपने संबोधन में अमित शाह ने कहा कि, जब तक सहकारी संस्थाओं के बीच सहकार और परस्पर आगे बढ़ाने की ताकत नहीं दी जाएगी, तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते। उन्होंने कहा कि लगभग 20 साल के संघर्ष के बाद आज नेशनल अर्बन कोऑपरेटिव फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन की स्थापना हो रही है और ये हम सबके लिए बहुत शुभ दिन है।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने कहा कि पहले सहकारिता मंत्रालय और सहकारिता क्षेत्र अनेक मंत्रालयों में बिखरा हुआ था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने आज़ादी के 75 वर्षों के बाद अलग सहकारिता मंत्रालय का गठन कर सहकारिता को एक नया जीवन दिया है। साथ ही उन्होंने कहा कि सहकारिता आंदोलन को एक अंब्रेला, सहकारिता मंत्रालय के रूप में मिला है। अमित शाह ने कहा कि सवा सौ साल तक सहकारिता क्षेत्र जूझता रहा और अपने अस्तित्व को बचाता रहा, लेकिन अब सरकारी व्यवस्था के सहयोग से ये द्रुत गति से चलेगा और देश के अर्थतंत्र में अपना सम्मान हासिल करेगा। साथ ही सहकारिता आंदोलन को जन आंदोलन के स्वरूप में बदलने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि, भारत जैसे विशाल देश में विकास का पैरामीटर सिर्फ आंकड़े नहीं हो सकते, बल्कि देश के विकास में कितने लोगों की सहभागिता है, ये बहुत बड़ा पैरामीटर होना चाहिए।

हर दिन सीखने की चाहत, सफल इंसान बनने में मददगार : अरविंद चतुर्वेदी

प्रतिनिधि, हजारीबाग। आईसेक्ट विश्वविद्यालय के तरबा-खरबा स्थित मुख्य कैंपस सभागार में सभी प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं एवं मटवारी स्थित सिटी ऑफिस सभागार में कार्यरत कर्मियों के साथ विश्वविद्यालय के प्रो चांसलर अरविंद चतुर्वेदी ने अलग अलग औपचारिक बैठक की और वर्तमान के विश्वविद्यालय गतिविधियों की बारीकी से जानकारी ली। साथ ही विद्यार्थी हित में कर्मियों से कई महत्वपूर्ण सुझाव भी लिए। इससे पूर्व प्रो चांसलर के आगमन पर आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ मुनीष गोविंद ने बुके देकर उनका स्वागत किया। बैठक के दौरान श्री चतुर्वेदी ने कहा कि हर काम को करते वक्त सीखने की चाहत जागृत रहनी चाहिए, इससे ना केवल कार्य बेहतर होते हैं बल्कि हममें परिपक्वता भी आती है। उन्होंने कहा कि आईसेक्ट विश्वविद्यालय अपने शुरुआती दिनों से ही विद्यार्थी हित को प्राथमिकता देते हुए कार्य कर रहा है, जिसका परिणाम है कि महज़ 8 वर्षों के दरम्यान ही नेशनल एजुकेशन अवार्ड, सीएसआर युनिवर्सीटी ऑफ इंडिया अवार्ड, एसोचैम एजुकेशन एक्सिलेंस सम्मिट कम अवार्ड, झारखंड का गौरव अवार्ड, झारखंड की शान अवार्ड, वर्ल्ड एजुकेशन सम्मिट अवार्ड सहित कई नेशनल के साथ साथ इंटरनेशनल अवार्ड अपने नाम किए हैं। उन्होंने आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ मुनीष गोविंद की प्रशंसा करते हुए कहा कि जिन उद्देश्यों के साथ आईसेक्ट विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी, उन उद्देश्यों को पूरा करने में विश्वविद्यालय निरंतर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि ना केवल पढ़ाई के क्षेत्र में बल्कि यूथ फेस्टिवल जैसे बड़े मंच पर भी यहां के विद्यार्थियों ने अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया है और खेलकूद में भी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बेहतर कर रहें हैं।

उन्होंने कहा कि आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीके नायक भी एकेडमिक क्षेत्रों में बेहतर कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं। बैठक करते हुए श्री चतुर्वेदी ने सभी प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं व कर्मियों से एक-दूसरे के साथ मिलकर सहयोग की भावना से काम करने की सलाह दी।

जॉय ई-बाईक ने देवघर में स्थापित की नई असेम्बली लाईन युनिट

देवघर। भारत में %जॉय ई-बाईक% ब्राण्ड के तहत इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन और जॉय ई-रिक% के तहत तिपहिया वाहन बनाने वाले प्रमुख निर्माताओं में से एक वार्डविजर्ड इनोवेशन्स एण्ड मोबिलिटी लिमिटेड ने झारखण्ड के देवघर में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के लिए अपनी नई असेम्बली लाईन युनिट का उद्घाटन किया।

उदघाटन समारोह का आयोजन डॉ निशिकांत दुबे, गोड्डा निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा सदस्य, श्री यतिन गुप्ता, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, वार्डविजर्ड इनोवेशन्स एण्ड मोबिलिटी लिमिटेड, आलोक जामदार, वाईस प्रेजीडेन्ट प्रोडक्शन, वार्डविज़र्स इनोवेशन्स एण्ड मोबिलिटी लिमिटेड तथा नई प्रोडक्ट डेवलपमेन्ट टीम के सदस्यों और अन्य दिग्गजों की मौजूदगी में किया गया।

15000 वर्गफीट में फैली यह नई युनिट, वर्तमान में गुजरात के वडोदरा में संचालित युनिट का विस्तार है। कंपनी इस नई युनिट में अपने हाई एवं लो स्पीड इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की असेम्बली शुरू करेगी। शुरूआत में भारत के पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्रों तथा नेपाल के निर्यात बाजार की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए 20000 युनिट्स से अधिक सालाना का लक्ष्य रखा गया है।यतिन गुप्ते, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, वार्डविज़र्ड इनोवेशन्स एण्ड मोबिलिटी लिमिटेड ने कहा कि भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को आधुनिक बनाने की प्रतिबद्धता के साथ झारखण्ड के देवघर में असेम्बली लाईन की नई युनिट का उदघाटन कर रहे है।।

कंपनी ने आगामी दो से तीन सालों में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की सेल्स बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। उत्तर और पूर्वी क्षेत्र इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के लिए महत्वपूर्ण बाजार हैं। हमने पाया है कि झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में मांग बहुत अधिक बढ़ रही है। अन्य राज्यों के समीप होने के कारण देवघर हमारे लिए अच्छी लोकेशन है।

भारतीय जनतंत्र मोर्चा का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित

- भ्रष्टाचार के कारण युवाओं का हक मारा जा रहा है: धर्मेंद्र तिवारी

विशेष संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू)। भारतीय जनतंत्र मोर्चा का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन स्थानीय पलामू क्लब में रविवार को आयोजित की गई। कार्यकर्ता सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष दिलीप पांडे ने किया। कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए केंद्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि भ्रष्टाचार के कारण युवाओं का हक मारा जा रहा है। प्रतियोगिता परीक्षा का क्वेश्चन पेपर बेच दिए जाते हैं, जिसके चलते योग्य व्यक्ति पीछे रह जाते हैं व अयोग्य उम्मीदवार का चयन हो जाता है। यह बहुत बड़ा भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के कारण बालू का टेंडर नहीं हो पा रहा है आज बालू के अभाव में 70 प्रतिशत व्यावसाय प्रभावित है। शहरी क्षेत्रों में बालू के कारण निर्माण कार्य ठप है। रोजगार के अभाव मजदूरों का भारी संख्या में पलायन हुआ है। भू माफिया प्रशासन की मिली भगत से तालाबों का अतिक्रमण कर रहे हैं। इससे जल स्रोत बाधित हो रहा हैं।यही नहीं अबुआ आवास में पंचायत से लेकर ब्लॉक तक बिचौलिए हावी हैं। भ्रष्ट पदाधिकारी पैसे के लालच में योग्य व्यक्ति का नाम सूची से हटा रहे हैं।योग्य लाभुक से भी अबुआ आवास में मन माने उगाही कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पलामू वीरों की भूमि है मेदिनी राय की भूमि है,नीलांबर- पीतांबर की भूमि है। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए लड़ना होगा।लडने के लिए भारतीय जनतंत्र मोर्चा को मजबूत करना होगा। ताकि भ्रष्टाचार से मुकाबला किया जा सके। मिथिलेश कुमार ने कहा महिला सशक्तिकरण की बात सरकार करती है पर महिलाओं को भ्रमित किया जा रहा है। खनन घोटाला, कोयला घोटाला, पत्थर घोटाला, बालू घोटाला, घोटालाओं का अंबार लग गया है। झारखंड में जमीन घोटाला के केस में हमारे मुख्यमंत्री की जेल में है,जिला अध्यक्ष दिलीप पांडे ने कहा संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग करने नहीं देंगे। कार्यकर्ता चुनाव के महाकुंभ में जुट गए हैं। चाहे नगरपालिका का चुनाव , विधानसभा, लोकसभा का चुनाव हो स्वच्छ छवि वालों को ही प्राथमिकता दी जाएगी। पार्टी के संरक्षक श्री सरयू राय जी के बताएं मंत्र संपर्क, समस्या, समाधान को लेकर जनता के बीच कार्य हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन हरिनारायण प्रजापति व धन्यवाद ज्ञापन ने किया। कार्यक्रम में जिला मंत्री अभिषेक पांडे, छोटू पांडे, दीप नारायण दुबे ओमप्रकाश सिंह सूरज राम विवेक कुमार अनीश कुमार महेंद्र पासवान दुर्गा राम केवट, जय किशोर केवट, रंजीत कुमार शामिल थे।

ईज माय ट्रिप का दमदार वित्तीय प्रदर्शन जारी

रांची। अग्रणी ट्रैवल प्लेटफॉर्म ईजमायट्रिप.कॉम का दमदार वित्तीय प्रदर्शन जारी है। वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में कंपनी का कुल राजस्व सालाना 18.1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बढ़कर 1,607.9 मिलियन रुपये हो गया। वहीं एबिटा सालाना 10.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 653.7 मिलियन रुपये रहा और कर बाद मुनाफा (पीएटी) सालाना 9.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बढ़कर 456.6 मिलियन रुपये हो गया। वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में कंपनी का सकल बुकिंग राजस्व (जीबीआर) 20,260.7 मिलियन रुपये रहा। एक सफल तिमाही के बाद, कंपनी ने ईसीओ होटल्स एंड रिसॉर्ट्स में लगभग 13 प्रतिशत की हिस्सेदारी ली है, जिससे ऑनलाइन यात्रा सेवाओं से परे कंपनी के पोर्टफोलियो में विविधता आ गई। कंपनी का यह फैसला यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र के भीतर पर्यावरण हितैषी व्यवहारों को बढ़ावा देते हुए ऑर्गेनिक और इन-ऑर्गेनिक विकास और स्थिरता के प्रति कंपनी की पहल को आगे बढ़ाता है। वहीं एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के तहत ईजमायट्रिप और उत्तराखंड सरकार ने लंदन में वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन के दौरान एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य उत्तराखंड की वैश्विक पर्यटन अपील को बढ़ाना है। एमओयू में यूके/यूरोप, मध्य पूर्व, एशिया, यूएसए कनाडा जैसे प्रमुख बाजारों को ध्यान में रखकर किए जाने वाले संयुक्त मार्केटिंग अभियान शामिल हैं, जो उत्तराखंड के पर्यटन क्षेत्र को मजबूत करने के लिए ईजमायट्रिप की वैश्विक पहुंच का लाभ उठाएंगे। पर्यटकों की जरूरतों के मुताबिक सेवाओं की पेशकश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए ईजमायट्रिप ने ईजी दर्शन की शुरुआत की है, जो पूरे भारत में यात्रियों की जरूरतों के मुताबिक तीर्थयात्रा पैकेज की सुविधा देता है। ये पैकेज सुरक्षा और सुविधा को प्राथमिकता देते हुए परेशानी मुक्त यात्रा, परिवहन, आवास, गाइडेड पर्यटन और विशेष पूजा की सुविधा मुहैया कराते हैं। इसके अतिरिक्त, %एक्सप्लोर भारत डिस्कवर द सोल ऑफ इंडिया÷ का लॉन्च विदेशी यात्रियों को ध्यान में रखते हुए हुए देश की समृद्ध विरासत, संस्कृति और परिदृश्य का प्रदर्शन करना है। ये पहल कंपनी के विशिष्ट ग्राहक वर्गों की जरूरतों को पूरा करते हुए उसकी सेवाओं में किए जा रहे लगातार विस्तार के बारे में बताता है। इसके अलावा, ईजमायट्रिप एक विशेष सदस्यता कार्यक्रम, ईजमायट्रिप प्लैटिनम, गोल्ड और सिल्वर कार्ड की पेशकश कर रहा है, जो हाई-नेट वर्थ व्यक्तियों को लक्जरी यात्रा अनुभव की पेशकश करता है। ये कार्ड विशेष सेवाएं, लाभ और विशेषाधिकार के साथ आते हैं, जो ग्राहकों की यात्रा अनुभव में इजाफा करते हैं।

बरही अनुमंडल के पुलिसकर्मियों को निष्पक्ष, भयमुक्त व पारदर्शी चुनाव कराने को लेकर दिया गया प्रशिक्षण

प्रतिनिधि, बरही। पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय नीरज कुमार ने आरएनवाईएम कॉलेज बरही में निर्वाचन आयोग के निर्देश पर निष्पक्ष, भयमुक्त व पारदर्शी चुनाव सम्पन्न कराने को लेकर पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण में पुलिस उपाधीक्षक नीरज कुमार ने चुनाव के दौरान निर्वाचन आयोग के नियमों को कड़ाई से पालन कराने के लिए निर्देश दिया। प्रशिक्षण में पुलिस अधिकारियों को चुनाव घोषणा से पूर्व, चुनाव घोषणा के बाद और मतदान दिवस को उनके कार्यो व दायित्वों से अवगत कराया गया। डीएसपी नीरज कुमार ने बताया कि लोकसभा आम चुनाव 2024 की तैयारियां प्रारंभ हो चुकी हैं। मतदान को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्वक संपन्न करवाये जाने एवं चुनाव पूर्व चुनावी प्रक्रिया सुनिश्चित की जाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार जिले के समस्त पुलिस अधिकारियों कर्मचारियों को चुनाव संबंधी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। चुनाव के संबंध में विशेष कानूनी प्रावधानों, संवेदनशील और अति संवेदनशील मतदान केंद्रों, चेकिंग नाका, मतदान केंद्रों पर की जानी वाली कार्रवाई के संबंध में प्रशिक्षण दिया। डीएसपी ने लोक प्रतिनिधित्व एक्ट, भारतीय दंड संहिता व अन्य आवश्यक अधिनियम सहित आदतन अपराधियों पर निरोधात्मक कार्यवाही करने की जानकारी दी। चुनाव आचार संहिता के तहत पुलिस को आदर्श आचरण करने और राजनीतिक पार्टियों पर आचार संहिता का उल्लंघन करने पर की जाने वाली कार्रवाई के संबंध में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में बरही इंस्पेक्टर सह थाना प्रभारी चंद्रशेखर कुमार, चौपारण थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह, बरकट्ठा थाना प्रभारी सुजीत चौधरी, सुशील कुमार, राहुल कुमार सिंह, दयानंद सरस्वती, शमशुद्दीन, शिवनाथ प्रसाद, संतोष सिंह, एएसआई दिनेश कुमार, अभय कुमार, संजय कुमार, आशिफ खान सहित बरही अनुमंडल के सभी थाना के पुलिस पदाधिकारी व पुलिसकर्मी मौजूद थे।

हजारीबाग में दम खम के साथ चुनाव लडेगी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी : भुवनेश्वर मेहता

- भारतीय जनता पार्टी के ताबुत में किल ठोकेगी देश की जनता: महेंद्र पाठक
- सर्वसम्मति से श्रीकांत मेहता बने प्रखंड सचिव

प्रतिनिधि, हजारीबाग। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कटकमसांडी प्रखंड के कार्यकर्ता सम्मेलन शिवकुमार प्रसाद मेहता की अध्यक्षता में हुई।जिसमें मुख्य रूप से पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता राज्य सचिव महेंद्र पाठक उपस्थित थे। लोकसभा चुनाव मे दमखम के सथ उतारने का निर्णय के साथ मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का निर्णय लिया गया।हजारीबाग के सांसद भवनेश्वर प्रसाद मेहता ने कहा कि हाथों में देश सुरक्षित नहीं है। देश के सारे सार्वजनिक संस्थाओं को कौड़ी के भाव में बेचा जा रहा है।धर्म के नाम पर राजनीति कर नफरत फैलाने की प्रयास कोशिश हो रही।भारतीय जनता पार्टी के कारण लोकतंत्र और संविधान दोनों खतरे में है, इसलिए मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण की जरूरत है।हजारीबाग लोकसभा दम खम के साथ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी लड़ेगी और चुनाव जीतेगी।भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव महेंद्र पाठक ने कहा कि भुनेश्वर प्रसाद मेहता जी ने लुपुग के नाम को देश के मानचित्र पर मांन नाम और सम्मान को बढ़ाया।एक मामूली किसान का बेटा इस गांव का भी नाम रोशन किया था, भारतीय जनता पार्टी कई जन विरोधी कानून बनाया, किसानों के मजदूरों के छात्र नौजवानों के ड्राइवर के लिए कई काले कानून को जबरन पास कराया उस देश की आम जनता में काफी उबाल है आज भी दिल्ली में लाखों किसान अपने हक और अधिकार के लिए भारतीय जनता पार्टी के फोर्स उन पर गोलियां चल रही है,पानी की बौछार कर रहे हैं,सड़कों पर किल गाड रहा है।आने वाले दिन में देश की जनता भारतीय जनता पार्टी के लिए ताबूत में किल ठोकेगी।सम्मेलन में पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता, राज्य सचिव महेंद्र पाठक, महेंद्र राम, शंभू कुमार, शिवकुमार मेहता,हकीम अंसारी, इम्तियाज अंसारी श्रीकांत मेहता बालेश्वर प्रसाद मेहता, अशोक कुमार मेहता,ईश्वर प्रसाद मेहता, बबलू मेहता, माधवराव दिलीप पासवान सत्येंद्र मेहता मजीद अंसारी, प्रभु रजक,प्रभु मेहता अजीत मेहता, कुंजल साहू सीताराम मिर्जा, नवल किशोर मिश्रा,सिराजुद्दीन अंसारी शामिल थे।

सनमार्गम फाउंडेशन ने काव्य को किया सम्मानित

वरीय संवाददाता रांची । सन्मार्गम फाउंडेशन के तत्वावधान में कांके निवासी काव्य शाहदेव को मोमेंटो और शॉल देकर सम्मानित किया गया। काव्य अभी जेवीएम श्यामली के कक्षा नौवां का छात्र है और वह गायकी के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है । सनमार्गम फाउंडेशन के अध्यक्ष रोशन कुमार ने बताया कि काव्य नाथ शाहदेव अपनी मेहनत से आगे बढ़ रहा है । अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहा है । सचिव सिद्धार्थ त्रिपाठी ने कहा कि उम्र छोटी है लेकिन काम बड़ा कर रहा है । जिससे हमारे देश और झारखंड का नाम रोशन होगा मुझे इस पर गर्व है । काव्य के माता-पिता सहित अन्य शुभचिंतकों ने खुशी का इजहार किया।

होली से पूर्व झारखंड आंदोलनकारियों का सम्मान व पेंशन राशि का भुगतान एरियर के साथ करें : पुष्कर महतो

वरीय संवाददाता रांची। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक एवं प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने कहा कि सरकार होली से पूर्व सभी झारखंड आंदोलनकारियों का सम्मान, पेंशन राशि का भुगतान एरियर के साथ करें। झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान, पेंशन राशि के भुगतान में जो विसंगतियां हैं उसे भी शीघ्र दूर किया जाना चाहिए। सम्मान से झारखंड आंदोलनकारी भी होली का पर्व एवं अन्य त्योहार हर्षो उल्लास व भाई चारा के साथ मना सकें।

श्री महतो ने एक प्रेस बयान जारी करते हुए उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि 2023 से ही झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान पेंशन राशि का भुगतान कई जिलों में लंबित है। जामताड़ा, धनबाद जिले में आठ माह से आंदोलनकारियों के राशि लंबित है। उन्होंने कहा कि सरकार गृह विभाग के अधिकारियों को निर्देश दे कि जल्द से जल्द झारखंड आंदोलनकारियों के लंबित सम्मान पेंशन राशि का भुगतान होली से पूर्व करे।

उन्होंने मांग की कि झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान राशि को पेंशन हेड से जोड़ा जाए, ताकि आंदोलनकारी के सम्मान राशि का भुगतान नियमित हो सके।

हजारीबाग लोकसभा से सदर विधायक को उम्मीदवार घोषित करने पर भाजपाइयों ने दी बधाई

प्रतिनिधि, बड़कागांव। हजारीबाग लोकसभा से सदर विधायक मनीष जायसवाल को भाजपा के प्रत्याशी बनाए जाने पर बड़कागांव पूर्वी उरीमारी मंडल के मंडल कार्यसमिति एवं सभी मंच मोर्चा के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ कार्यकर्ताओं, सभी सांसद प्रतिनिधिगण, सभी भाजपा समर्थकों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं मनीष जयसवाल को दी है एवं केंद्रीय नेतृत्व को आभार व्यक्त किया एवं कार्यकर्ताओं ने जीत सुनिश्चित करने का संकल्प लिया।

खुशी इजहार एवं बधाई देने वालों में मुख्य रूप से पुर्व विधायक लोकनाथ महतो, पुर्व प्रमुख टुकेश्वर प्रसाद, मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, सांसद प्रतिनिधि बेचन साव, श्रीकांत निराला, पुनम साहु, मुकुटधारी महतो, मनीष पांडे, महामंत्री दिनेश करमाली, इन्द्र भुषन, कोषाध्यक्ष ज्ञानचंद कुमार उर्फ ज्ञानी, उपाध्यक्ष अशोक साव, किशोर राणा, मंत्री बिनोद कुमार, कृष्णा गुप्ता, मीडिया प्रभारी मनोज प्रभाकर, एस टी मोर्चा अध्यक्ष जागेश्वर तुरी, शिवशंकर उर्फ शिबू, उदय मेहता, नरेश साव, नंदकिशोर मेहता, हीरालाल साव, समेत सैकड़ों कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों ने बधाई दी है।

महागठबंधन की जनविश्वास महारैली में शामिल हुईं

झारखंड प्रदेश राजद महिला प्रकोष्ठ की पदधारी व कार्यकर्ता

- बिहार में बदलाव की बयार हुई तेज : रानी कुमारी
- महागठबंधन के प्रति बढ़ा जनता का विश्वास: अमरजीत कौर

विशेष संवाददाता रांची/पटना। महागठबंधन द्वारा रविवार (तीन मार्च) को पटना के गांधी मैदान में प्रस्तावित जनविश्वास महारैली में झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल (महिला प्रकोष्ठ) की पदधारी व काफी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए।

राजद महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष रानी कुमारी ने बताया कि महारैली ऐतिहासिक रही। जन विश्वास रैली में जनसैलाब उमड़ पड़ा। महागठबंधन के प्रति बिहार की जनता के विश्वास में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

उन्होंने कहा कि बिहार की जनता का भाजपा से मोह भंग हो चुका है। आगामी लोकसभा और विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को व्यापक जन समर्थन मिलेगा। उन्होंने कहा कि राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में झारखंड प्रदेश राजद महिला प्रकोष्ठ संगठन विस्तार और पार्टी को मजबूत करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

उन्होंने रैली की सफलता के लिए महागठबंधन में शामिल सभी दलों के प्रति आभार व्यक्त किया। महारैली की ऐतिहासिक सफलता के लिए झारखंड प्रदेश राजद महिला प्रकोष्ठ की मुन्नी देवी, पुष्पा देवी, अंजली देवी, सुनीता देवी, गीता देवी, संगीता देवी, जिला अध्यक्ष अमरजीत कौर, कोडरमा धनबाद जिला अध्यक्ष अनवरी खातून, बेबी देवी, सुलेखा देवी, फुलवा देवी, सुनीता देवी, सोनी देवी, द्रोपदी देवी, बीना देवी, उषा देवी, कुंती देवी, शांति देवी, कविता देवी, फूल कुमारी देवी, सविता देवी, रूपा देवी, भाग्य देवी, प्रियंका कुमारी, प्रीति देवी, सीमा कुमारी, ज्योति कुमारी, मुस्कान देवी, पायल देवी, शबाना खातून बेगम सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने जनता के प्रति आभार व्यक्त किया है।

चुनाव का पर्व, देश का गर्व नारा को साकार करना है : डॉ ब्रजेश कुमार

वरीय संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा देश में होने वाले लोकसभा चुनाव के इस महापर्व में कई प्रकार के कार्यक्रम करने की योजना है। यह अभियान प्रत्येक महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय विभागों में चलाया जाएगा।

इस अभियान के अंर्तगत मेरा वोट देश के लिए, चुनाव का पर्व देश का गर्व विषय को लेकर आम युवाओं के बीच में सघन जागरुकता अभियान मार्च एवं अप्रैल माह में चलाया जाएगा। एनएसएस के माध्यम से चुनाव में युवाओं की सक्रिय भागीदारी हेतु निम्नलिखित कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा =

1. महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय विभागों में संगोष्ठी, युवा संवाद, नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया जाएगा।

2. महाविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा जिसके अंतर्गत भाषण, निबंध , पेंटिंग, कविता लेखन, मोबाइल फोटोग्राफी, वीडियो रील्स एवं क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

3. महाविद्यालय स्तर पर मतदाता शपथ, प्रभातफेरी, मतदाता जागरुकता रैली आदि का आयोजन किया जाएगा।

4. महाविद्यालय स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों का सोशल मीडिया के माध्यम से आम नागरिकों के बीच जागरुकता फैलाने का कार्य किया जाएगा।

5. महाविद्यालय द्वारा गोद लिये गाँवों में जाकर मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। जिसके अंतर्गत जन चौपाल, नुक्कड़ नाटक, मतदान के महत्व को लेकर जागरुकता रैली का आयोजन किया जाएगा।

6. महाविद्यालय स्तर पर संपन्न हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों के लिए विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन अप्रैल के प्रथम सप्ताह में किया जाएगा।

आज राँची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में आर. यू . के बेसिक साइंस बिल्डिंग परिसर में आगामी चुनाव पर्व को लेकर करके एन. एस. एस. कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार के अध्यक्षता में मतदाता शपथ, नुक्कड़ नाटक एवं मतदाता संकल्प सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर एन. एस. एस. कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने कहा कि चुनाव का पर्व, देश का गर्व यह केवल नारा ही नहीं बल्कि इसे साकार करना है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के इस महापर्व में सभी को मतदान प्रतिशत बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण कार्य करना है एवं युवाओं की सक्रिय भागीदारी हेतु अपना बहुमूल्य योगदान देना है।

आज के कार्यक्रम का संचालन एन.एस एस. टीम लीडर दिवाकर आनंद ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन सुरभि कुमारी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्रमशः पुरुषोत्तम, अतुल, त्रिकेश, अनिल, दीक्षा, दीपक, मेराज, अंकित सुमित, स्वरा, अक्षिता, प्रेरणा, सुजिता, आदित्य ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यूएस कांसुलेट जेनरल (कोलकाता) के अधिकारियों संग झारखण्ड चैंबर की वार्ता आयोजित

वरीय संवाददाता

रांची। यूएस कांसुलेट जेनरल (कोलकाता) के आर्थिक और राजनीतिकी मामलों के वाणिज्य दूत काजी रूम्मन दस्तमीर और राजनीतिक विशेषज्ञ टिंकू रॉय ने झारखंड प्रवास के दौरान रविवार को झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारियों के साथ इंफॉर्मल मुलाकात की। होटल रैडिशन ब्लू में हुई मुलाकात के दौरान झारखंड प्रदेश की अर्थव्यवस्था और विकास की सभावनाओं पर सकारात्मक चर्चा हुई और सुझावों का आदान प्रदान किया गया। काजी रूम्मन दस्तमीर ने झारखण्ड में औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए तैयार अनुकूल माहौल और यहां के कुशल श्रमबल की प्रशंसा की और अर्थव्यवस्था के विकास हेतु जरूरी संभावनाओं की लक्ष्य प्राप्ति के लिए उद्योग जगत को और किन संशाधनों में बेहतरी की आवश्यकता है, पर चैंबर का मंतव्य जाना।

इंफॉर्मल मीटिंग के दौरान चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री ने माईनिंग, टेक्सटाइल, सिल्क, वन उत्पाद, होर्टिकल्चर और एग्रीकल्चर के क्षेत्र में झारखण्ड के बढ़ते कदम पर संतोष जताते हुए कहा कि कुटीर उद्योग से जुडी महिला उद्यमियों को आगे बढाने की दिशा में भी चैंबर निरंतर प्रयासरत है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं द्वारा वन उत्पाद से निर्मित वस्तुओं को बेहतर मार्केट मिल सके, इस हेतु प्रत्येक जिले में महिला मार्केट की स्थापना की मांग सरकार से की गई है। यदि बेहतर मार्केट उपलब्ध कराने में सहयोग मिले तब कुटीर उद्योग से जुडी महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों को विश्वस्तरीय मार्केट मिल सकेगा। राज्य से पलायन को रोकने के लिए उन्होंने स्थानीय स्तर पर औद्योगिकीकरण को और अधिक प्रोत्साहन देने की बात कही।

यूएस कांसुलेट जेनरल (कोलकाता) के अधिकारियों ने राज्य के औद्योगिक विकास के लिए चैंबर के सुझावों को गंभीरता से सुना और उनके स्तर से होनेवाले कार्यों के लिए उन्होंने हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने झारखण्ड चैंबर के पदाधिकारियों को कोलकाता स्थित दूतावास कार्यालय में भी आमंत्रित किया। मुलाकात के दौरान चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री, उपाध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा, सदस्य आनंद कोठारी और प्रमोद चौधरी उपस्थित थे।

एकीकृत बागवानी मिशन के तहत किसानों के बीच पांच दिवसीय प्रशिक्षण

प्रतिनिधि,हजारीबाग। हजारीबाग जिला के दारू प्रखंड अंतर्गत रामदेव खारिका में पांच दिवसीय प्रखंड स्तरीय बागवानी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम झारखंड सरकार के कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के द्वारा किया जा रहा है।वही इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रायोजक जिला उद्यान कार्यालय के निर्देश पर यूनिक इंटरप्राइजेज के सहयोग से प्रशिक्षकों के द्वारा स्थानीय किसानों को एकीकृत बागवानी विकास के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र रामगढ के कृषि वैज्ञानिक डॉ इंद्रजीत ने किसानों को बताया कि आप विभिन्न प्रकार के सब्जियां और फल के पौधे को वैज्ञानिक तरीके से खेती कर कम लागत में ज्यादा उपज प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही साथ रोजगार के क्षेत्र में एक नया आयाम को भी देखा जा सकता है। वहीं इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीण महिलाओं की काफी रुचि देखी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किसान महिलाओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में विभाग के द्वारा ऐसे प्रशिक्षण उपलब्ध करवा कर एवं अनेकों प्रकार की योजना का लाभ देकर किसानों के बीच रोजगार के साधन बढ़ सकते हैं। इसके साथ ही दूसरे को भी प्रशिक्षण की जानकारी देकर कृषि के क्षेत्र में बढ़ावा लाया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की कई किसान महिलाएं शामिल थी।

इंटक केरेडारी शाखा के बीजीआर यूनिट की बैठक में बीजीआर माइनिंग कंपनी पर गहन चर्चा

प्रतिनिधि,केरेडारी। इंटक केरेडारी शाखा के बीजीआर यूनिट की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता हेवइ पंचायत के मुखिया पति सह समाजसेवी अमित दुबे और संचालन बीजी आर यूनिट के अध्यक्ष परमेश्वर कुमार ने की। बैठक में उपस्थित राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के प्रदेष प्रवक्ता सुरजीत नागवाला ने कहा कि केरेडारी कोल माइंस में बिचौलिया हावी है जिसके खिलाप एकजुट हो कर विरोध किया जा रहा है। वहीं समाजसेवी अमित दुबे ने कहा कि बीजीआर से मिलने वाली दैनिक मजदूरी दर 504 रुपए व कोल ट्रांसपोटिंग को लेकर जिला प्रशासन हजारिबाग से लिखित ज्ञापन देकर पहल कर हक अधिकार दिलाने का काम किया जायगा। वहीं बीजीआर माइनिंग यूनिट के इंटक अध्यक्ष प्रमेशवर कुमार ने कहा कि कंपनी के मनमानी नीतियों के खिलाप एकजुट हो कर विरोध करते

हुए रैयतों के हितों के लिए हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। साथ ही कंपनी के नीतियों का पुरजोर विरोध किया जा रहा है। बैठक में केरेडारी कोल माइंस के बिस्थापीत प्राभावित रैयतों के हितों और मांगों पर गहनता पूर्वक विचार किया गया। जिसमें दस सूत्री मांगों पर निर्णय लिया गया। जिसमें बीजीआर माइनिंग कंपनी में कार्यरत मज्जदूरों की मिलने वाली मजदूरी दर 504 रुपए से बढ़ाई जाय। मजदूरों की सुरक्षा मानकों की अनदेखी दूर हो,मुआवजा राशि में बढ़ोतरी कैसे हो,ट्रांसपोटिंग कंपनी के खिलाप एकजुट हो,विस्थापितों को कैसे लाभ मिले व विस्थापन राशि मिले,रोजगार से वंचित रैयतों को रोजगार से जोड़ा जाय, पेंशन राशि का भुगतान सभी को हो, प्रदूषण और भारी वाहनों के परिचालन के खिलाप आवाज बुलंद की जाय, स्थानीय लोगों को रोजगार में प्रथमिकता मिले, स्थानीय लोगों को जलावन के लिए कोयला उपलब्ध कराई जाय। मौके पर प्रमेश्वर कुमार, सागर कुमार,कांग्रेस नेता सुरजीत नगवाल, समाजसेवी अमित दुबे,बासदेव राणा, जय कुमार, अशोक कुमार समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

औद्योगिक क्षेत्र में प्रदूषण के खिलाफ ग्रामीणों में पनपा आक्रोश

बालमुकुंद स्पॉन्ज आयरन फैक्ट्री के खिलाफ किया प्रदर्शन

पूसू प्रतिनिधि,गिरिडीह। गिरिडीह के औद्योगिक इलाके में संचालित विभिन्न फैक्ट्रियों के द्वारा प्रदूषण नियत्रंण को लेकर नियम का पालन नही करने के कारण इलाके में प्रदूषण का ज़हर फैलता ही जा रहा है। जिससे जूझ रहे ग्रामीणों के सब्र का बाँध आखिरकार अब टूटने लगा है। रविवार को बालमुकुंद स्पोंज आयरन फैक्ट्री से निकलने वाले प्रदूषण के खिलाफ ग्रामीण गोलबंद होकर सड़क पर उतर आए और फैक्ट्री के गेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में स्थानीय ग्रामीणों में महिलाओं की संख्या अधिक है और वे काफी आक्रोशित भी हैं। हाथों में तख्तियां लिए फैक्ट्री और उससे होने वाले प्रदूषण के खिलाफ जोरदार नारेबाज़ी कर रही थी। ग्रामीणों में प्रदूषण को लेकर इतनी नाराजगी थी कि वे इस बार लोकसभा आम चुनाव में मजा चखाने की बात कह रहे थे। प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों की माने तो फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं लोगों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। कहा कि फैक्ट्रियों के संचालकों के द्वारा प्रदूषण नियत्रंण को लेकर किसी भी नियम का पालन नही किया जाता है, जिसका खामियाजा स्थानीय लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

सुबोधकांत सहाय ने किया कोल्हान यूथ वेलफेयर सोसाइटी के रक्तदान शिविर का शुभारंभ

कहा, पीड़ित मानवता के लिए रक्तदान महादान है

विशेष संवाददाता ,रांची/सरायकेला-खरसावां। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने सरायकेला-खरसावां जिलांतर्गत कपाली स्थित कोल्हान यूथ वेलफेयर सोसाइटी के रक्तदान शिविर का रविवार को शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा के प्रति रक्तदान सबसे बड़ा महादान है। रक्तदान जीवन दान के समान है। उन्होंने रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया। तत्पश्चात श्री सहाय चांडिल स्थित सर्किट हाउस पहुंचे। वहां उन्होंने कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कांग्रेस पार्टी झारखंड में अपना परचम लहराएगी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से पार्टी की नीतियों और सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का निर्देश दिया। साथ ही पार्टी के पदधारियों को जन समस्याओं के प्रति गंभीर रहने और उनके समाधान के लिए सतत प्रयासरत रहने की अपील की। इस अवसर पर काफी संख्या में कांग्रेस पार्टी के स्थानीय पदधारी और कार्यकर्ता मौजूद थे।

श्री कृष्ण प्रणामी ट्रस्ट का 138 वां अन्नपूर्णा भंडारा आयोजित

वरीय संवाददाता

रांची। गुरू महाराज के जनसेवा को समर्पित जीवन के स्वर्णिम 51 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रविवार को शहर के पुंदाग स्थित संस्था के निर्माणाधीन मंगल राधिका सदानंद दिव्यांग आश्रम के प्रांगण मे स्थित श्री कृष्ण प्रणामी (राधा-कृष्ण) मंदिर के प्रांगण मे संस्था के पवन पोद्दार अमन अग्रवाल, सरीता अग्रवाल,अनुभा खेतान धीर खेतान द्वारा वहां के जरूरतमंद ग्रामीण मंदिर के आस पास के रहने वाले श्रद्धालुओं,जरुरतमंद परिवार के सदस्यों मंदिर के सामने के गुजरने वाले राहगीरों एवं बच्चों के बीच 138 वें निःशुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा भोजन भंडारे का विधिवत

उद्घाटन कर वितरण शुरू किया गया।

संस्था के सदस्यों ने श्री राज श्यामा जी (राधा-कृष्ण) भगवान माता अन्नापूर्णा एव गुरू महाराज की फोटो पर चंदन वंदन कर अन्नपूर्णा भंडारे का प्रसाद अर्पित कर वहा उपस्थित महिलाओ और पुरूष श्रद्धालुओ को चंदन का तिलक करने भजन संकीर्तन कर आज के 138 वें निःशुल्क श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा भंडारे मे संस्था ने पुडी आलु टमाटर मिश्रित सब्जी, भेजिटेबल पुलाव एवं केसरीया खीर का वितरण शुरू कर लगभग 1100 श्रद्धालुओ ने माता अन्नापूर्णा का प्रसाद ग्रहण किया। अन्नपूर्णा भोजन प्रसाद भंडारे की सेवा के महान कार्य में विशेष रूप संस्था के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, पुरणमल सर्राफ,ओमप्रकाश सरावगी,अमन अग्रवाल,धीर खेतान,विशाल जालान,कैलाश बाबु,शिव भगवान अग्रवाल, ज्ञान प्रकाश शर्मा,पवन पोद्दार (ताउ), अंजनी अग्रवाल,आरव अग्रवाल, धीरज कुमार गुप्ता, चन्द्रदिप साहु, प्रेम कुमार, महिला समिति की विधा देवी अग्रवाल, सरीता अग्रवाल, अनुभा खेतान,अमिता जालान, सुनीता अग्रवाल, शकुन्तला केजरीवाल,सुधा सुल्तानिया सहित अन्य उपस्थित थे। यह सभी जानकारी संस्था के उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल (राजु अग्रवाल) ने दी।

मोहराबादी मैदान में इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर का शुभारंभ

सांसद संजय सेठ और डॉ महुआ माजी ने किया उद्घाटन

11 मार्च तक चलेगा ट्रेड फेयर

विशेष संवाददाता

रांची। मोहराबादी मैदान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर का उद्घटान शनिवार को लोकसभा सांसद संजय सेठ और राज्यसभा सांसद डॉ महुआ माजी ने संयुक्त रूप से किया। मौके पर श्री सेठ ने कहा कि रांची में ट्रेड फेयर होने से कारोबार बढ़ता है। इसका ज्यादा लाभ व्यापारियों के साथ स्थानीय लोगों को भी होता है। ट्रेड फेयर कई नए उत्पादों को देखने और समझने का एक माध्यम है। श्री सेठ ने

कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी कहते हैं कि झारखंड और बंगाल में सबसे अधिक मेला लगता है। मेला के लगने से राज्य का आर्थिक विकास होता है। सांसद डॉ महुआ माजी ने कहा कि ट्रेड फेयर में बाहर के देशों के उत्पाद देखने को मिल रहा है। रांचीवासी अब विदेशी वस्तुएं भी खरीद सकते हैं। जीएस मार्केटिंग एसोसियेट्स के चिद्रुप

शाह ने बताया कि यह ट्रेड फेयर बीटूसी और बीटूबी के लिए बेहतर मंच है। झारखण्ड चैंबर, बंगाल चैंबर और जीएस मार्केटिंग के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दस वर्षों से लगाये जा रहे ट्रेड फेयर को रांचीवासियों ने खूब सराहा है। शहरवासियों के सामने प्रत्येक वर्ष नई चीजों को लाने की हमारी कोशिश रहती है। टर्की के लैंप, थाईलैंड के एक्सेसरीज, बांग्लादेश की साडी, ईरान की हनी और सैफ्रौन समेत अन्य वस्तुएं इस ट्रेड फेयर के मुख्य आकर्षण हैं। ट्रेड फेयर के माध्यम से हमारा प्रयास है कि प्रत्येक देश की विशेषता को झारखण्डवासियों के सामने आसानी से उपलब्ध कराया जा सके। ट्रेड फेयर में झारखण्ड सरकार के उद्योग, श्रम और टूरिज्म विभाग द्वारा स्टॉल्स में भी लगाया गया है। इस अवसर पर चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री ने कहा कि हमारे द्वारा किया जा रहा यह प्रयास केवल ट्रेड फेयर नहीं वरन् राज्य के विकास में गति देने का प्रयास है। अंतर्राष्ट्रीय देश के स्टॉलधारकों के आने से स्थानीय व्यापारियों-उद्यमियों के विचारों का आदान-प्रदान संभव होगा और इससे व्यापार-उद्योग की संभावनाएं बनेंगी। ट्रेड फेयर में प्रत्येक दिन गणमान्य अतिथियों को आमंत्रित किया जायेगा। आगंतुकों के मनोरंजन के लिए ऑर्केस्ट्रा की भी व्यवस्था है।

फेयर में लगे है 375 स्टॉल्स : झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स और जीएस मार्केटिंग एसोसियेट्स के तत्वावधान में आयोजित ट्रेड फेयर 11 मार्च तक चलेगा। आगंतुकों के लिए सुबह 11 बजे से रात 9 बजे तक फेयर खुला रहेगा। फेयर में लगभग 375 स्टॉल्स लगाये जा रहे हैं। फेयर में थाईलैंड, ईरान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, टर्की, घाना, मलेशिया समेत अन्य कुल 12 देश और 20 राज्यों के स्टॉल्स लगाये जा रहे हैं। इस अवसर पर चैंबर के उपाध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा, महासचिव परेश गट्टानी, संयुक्त सचिव अमित शर्मा, शैलेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष ज्योति कुमारी, संजय अखौरी, पूर्व अध्यक्ष ललित केडिया, विकास सिंह समेत अन्य लोग मौजूद थे।

बालूमाथ में तुरी समाज का होली मिलन समारोह 10 मार्च को

प्रतिनिधि, बालूमाथ। बालूमाथ प्रखंड अंतर्गत चेताग पंचायत के कोठाटांड़ में तुरी समाज का प्रखंड स्तरीय होली मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है।उक्त जानकारी देते हुए, तुरी समाज के प्रखंड अध्यक्ष अजय तुरी ने बताया कि उक्त समारोह में राजमुनि व्यास जी को आमंत्रित किया गया है। जिनके माध्यम से सामाजिक जन कल्याण के उद्देश्य से गीत संगीत के माध्यम से समाज को जागरूक किया जाएगा।उन्होंने

आगे बताया कि इस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि झारखंड प्रदेश तुरी समाज के अध्यक्ष चंदन तुरी,प्रदेश कोषाध्यक्ष नागेश्वर तुरी,प्रदेश महासचिव परशुराम तुरी,बोकारो जिला प्रवक्ता मनोज तुरी शामिल रहेंगे।अजय तुरी ने लातेहार जिला तुरी समाज से समारोह में शामिल होकर सफल बनाने का अपील किया है।

रांची जिला राजद के कार्यकर्ता जन विश्वास महारैली में भाग लेने पटना पहुंचे

महारैली को मिला व्यापक जन समर्थन - धर्मेन्द्र महतो

विशेष संवाददाता ,रांची। पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में रविवार को आयोजित महागठबंधन के जन विश्वास महारैली में भाग लेने के लिए रांची जिला राजद के अध्यक्ष धर्मेंद्र महतो के नेतृत्व में विभिन्न प्रखंडों और पंचायत के हजारों कार्यकर्ता पटना पहुंचे। पटना में श्री महतो के नेतृत्व में रांची जिला राजद के कार्यकर्ताओं ने राजद नेता तेजस्वी यादव के समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। श्री यादव ने झारखंड से आए कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए उन्हें गांधी मैदान पहुंचने का आग्रह किया। उल्लेखनीय है कि जन विश्वास महारैली में भाग लेने के लिए जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र महतो के साथ प्रदेश के महासचिव भास्कर वर्मा भी कार्यकर्ताओं के साथ पटना गये हैं। राजद कार्यकर्ता रविवार को महारैली में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

पलामू लोकसभा क्षेत्र से बीडी राम को तीसरी बार टिकट मिलने पर भाजपाइयों में जश्न

प्रतिनिधि,बिशुनपुरा(गढ़वा)। पलामू लोकसभा क्षेत्र से तीसरी बार विष्णु दयाल राम को टिकट मिलने की हुई घोषणा। जहां बिशुनपुरा मण्डल के अध्यक्ष अवध बिहारी गुप्ता के द्वारा अपने आवास पर कार्यकर्ता लोगो के साथ एक दूसरे को मिठाई खिलाई और बम पटाखे फोड़कर मनाई जश्न। वहीं उपस्थित कार्यकर्ताओ ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार भी प्रकट किया। जिसमें भाजपा महामंत्री जगदीश चंद्रवंशी, संयोजक सुमंत मेहता, ओबीसी अध्यक्ष महेंद्र सोनल, उदय प्रसाद, कुन्दन चौरसिया, संजीव पाण्डेय, विश्वनाथ गुप्ता, सोशल मीडिया प्रभारी राकेश केशरी सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जल मीनार का टंकी फटने से प्रतिदिन हजारों लीटर पानी हो रही बर्बाद

प्रतिनिधि, बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के चेचकपी पंचायत अंतर्गत आदिवासी बहुत क्षेत्र डुमरडीहा में वर्ष 2020 लॉकडाउन के समय पीएचडी विभाग से बना मुख्यमंत्री नल जल योजना का पानी का टंकी फट जाने से हजारों लीटर पानी रोजाना बर्बाद हो रहा है। इस संबंध में है डूमरडीहा निवासी महेश मुर्मू ने बतलाया कि जब से टांकी बना है उसके कुछ माह बाद से ही टंकी फट गया है और डेली पानी बहता रहता है। वहीं स्थानीय निवासी संगीता कुमारी ने बतलाया कि हम लोग इसकी जानकारी लोगों को दिए हैं, लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ है।रात में टंकी में पानी रुकता ही नहीं है क्योंकि टंकी फटा हुआ है। वही छोटकी देवी ने कहा सुबह धूप निकलते ही पानी बहने चालू हो जाता है जो शाम तक लगातार बहते रहता है । पानी बह जाने से यहां अगल-बगल के जमीन काफी दलदल हो गया है। हम लोग झारखंड सरकार से यह टंकी बदलने की मांग कर रहे हैं। वही चेचकपी पंचायत के मुखिया रीता देवी और प्रतिनिधि डेगलाल साव ने कहा इस समस्या के संबंध में जानकारी मिली है। इसे आगामी बैठक में पास कर पोर्टल पर अपलोड कर जल्द से जल्द इस टंकी को बदलने का कार्य करूंगी।

भाजपा नेता ने निरी गांव में परिक्रमा यात्रा निकाला

प्रतिनिधि,बड़कागांव। हजारीबाग जिला अंतर्गत परिक्रमा यात्रा रविवार को भाजपा सुदुरवर्ति अति पिछड़ा क्षेत्र निरी गांव में जाकर सभी गांव वासियों से ग्राम परिक्रमा यात्रा के शुभ अवसर पर सभी निरि गांव क्षेत्र वासियों को नरेंद्र मोदी के योजनाओं को बहुत करीब से बताने का काम किया। भाजपा रामगढ़ जिला प्रभारी राजू साव के नेतृत्व मे जन जन तक केंद्र सरकार की योजनाओ के लाभार्थीओ से मिलकर बात कर आदान-

प्रदान का अवसर प्राप्त हुआ।और सभी भाजपा के कार्यकर्ता सुदुरवर्ति क्षेत्र में हर बुथ का भी जायजा लिए। तथा मेरा बुथ सबसे मजबूत का नारा दिया और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जो बुलंद आवाजो को मजबूत करना। वहीं लोगों ने ठाना है कि अबकी बार 400 पार वह जनता ने धरातल पर दिखाने का काम करेगी। मौके पर मुख्य रूप से तिलक गंझू,नागेश्वर गंझू,जोधन गंझू,मुखी गंझू,महेंद्र गंझू,जादव गंझू,बुधन गंझू,चैता गंझू,राजेंद्र गंझू,यादव गंझू इत्यादि लोग उपस्थित थें।

हजारीबाग लोकसभा के भाजपा सांसद प्रत्याशी बने विधायक मनीष जायसवाल, रामगढ़ मांडू और हजारीबाग विधानसभा में हुआ जोरदार स्वागत

वर्षों की सेवा, समर्पण और सक्रियता को मिला इनाम, मुझ जैसे छोटे कार्यकर्ता पर विश्वास जताने के लिए बीजेपी शीर्ष नेतृत्व को धन्यवाद- मनीष जायसवाल

प्रतिनिधि, हजारीबाग। हजारीबाग से लगातार दो बार के बीजेपी सदर विधायक मनीष जायसवाल को भारतीय जनता पार्टी ने आगामी लोकसभा चुनाव-2024 के लिए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र का उम्मीदवार घोषित किया है। बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व ने भरोसा जताते हुए शनिवार को इसकी विधिवत घोषणा प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से की। इधर विधायक श्री जायसवाल को बीजेपी का पार्टी से हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र का प्रत्याशी बनाए जाने पर पूरे हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में भाजपा कार्यकर्ता और उनके समर्थकों में जबरदस्त उत्साह और उमंग देखने को मिला।इधर टिकट का घोषणा होते ही विधायक मनीष जयसवाल अपने परिवार वालों के साथ खुशियां मनाने लगे और हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के चहुंओर भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक सड़कों पर आतिशबाजी करके, एक- दूजे को मिठाई खिलाकर और रंग गुलाल लगाकर खुशियां मनाने में जुट गए। टिकट की घोषणा होने के बाद हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से बीजेपी के सांसद उम्मीद्वार बने मनीष जायसवाल रविवार को राजधानी रांची से रामगढ़ के पतरातु होते हुए हजारीबाग लौटें तो जगह जगह उनका भव्य स्वागत हुआ। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के रामगढ़, मांडू और हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र में करीबी दो दर्जन से अधिक जगहों पर उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी बनाने के बाद पहली बार अपने विशेश्वर दयाल जायसवाल पथ स्थित आवास पहुंचे मनीष जायसवाल अपने परिवार पहुंचें तो सबसे पहले अपने पिता ब्रजकिशोर जायसवाल का पैर छूकर आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात उन्होंने अपने समर्थकों के साथ जश्न मनाया।रांची से रामगढ़ - मांडू विधानसभा होते हुए हजारीबाग पहुंचते ही उनका विराट स्वागत ढोल- तासे, गाजे- बजे के साथ फूल माला पहनाकर और नाचते झूमते हुए किया। इस दौरान बीजेपी कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने कई बार अपने चहेते नेता को कंधे पर उठा लिया और उनके समर्थन में गर्मजोशी से नारा लगाते हुए फूल मालाओं से लाद दिया। भाजपा कार्यकर्ता और मनीष जयसवाल के समर्थकों ने फूल माला पहनाकर, मिठाई खिलाकर, बुके भेंट कर, हाथ मिलाकर और गले मिलकर उनका स्वागत और अभिनंदन किया। हजारीबाग के पुराना बस स्टैंड के समीप धरती बाबा भगवान बिरसा मुंडा और गाड़ीखाना चौक पर बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा में माल्यार्पण कर उन्हें मनीष जायसवाल ने नमन किया।पूरे हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में जश्न का माहौल बन गया और लोग गली-मोहल्ले में मनीष जायसवाल को बीजेपी द्वारा हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र का उम्मीदवार बनाए जाने पर खुशियां मनाने में जुट गए।इधर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र का उम्मीदवार बनाए जाने पर विधायक मनीष जायसवाल ने कहा की विगत कई वर्षों से जिस तत्परता और सक्रियता से मैंने लोगों की सेवा समर्पण भाव से की और क्षेत्र का विकास किया इसकी सूचना भाजपा शीर्ष नेतृत्व को भी है। उन्होंने कहा कि पुनः एक बार भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने मुझ जैसे छोटे कार्यकर्ता पर विश्वास जताकर जिस आशा और उम्मीद के साथ हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र का उम्मीदवार बनाया है निश्चित रूप से मैं उस पर शत-प्रतिशत खरा उतरने का प्रयास करूंगा। मनीष जायसवाल ने कहा की पिछले कई वर्षों से मैंने हजारीबाग और रामगढ़ जिले की लोगों की सेवा एक नेता नहीं बल्कि एक बेटा के रूप में किया है। उन्होंने कहा की अब पीएम मोदी के विकसित भारत के तर्ज़ पर जनता का आशीर्वाद मिला तो सांसद बनकर विकसित हजारीबाग बनाऊंगा और हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनहित के मामले को लोकसभा के स्तर पर पुरजोर तरीके से उठाऊंगा।

एकीकृत बागवानी मिशन के तहत किसानों के बीच पांच दिवसीय प्रशिक्षण

प्रतिनिधि ,हजारीबाग। हजारीबाग जिला के दारू प्रखंड अंतर्गत रामदेव खारिका में पांच दिवसीय प्रखंड स्तरीय बागवानी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम झारखंड सरकार के कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के द्वारा किया जा रहा है।वही इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रायोजक जिला उद्यान कार्यालय के निर्देश पर यूनिक इंटरप्राइजेज के सहयोग से प्रशिक्षकों के द्वारा स्थानीय किसानों को एकीकृत बागवानी विकास के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र रामगढ के कृषि वैज्ञानिक डॉ इंद्रजीत ने किसानों को बताया कि आप विभिन्न प्रकार के सब्जियां और फल के पौधे को वैज्ञानिक तरीके से खेती कर कम लागत में ज्यादा उपज प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही साथ रोजगार के क्षेत्र में एक नया आयाम को भी देखा जा सकता है। वहीं इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीण महिलाओं की काफी रुचि देखी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किसान महिलाओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में विभाग के द्वारा ऐसे प्रशिक्षण उपलब्ध करवा कर एवं अनेकों प्रकार की योजना का लाभ देकर किसानों के बीच रोजगार के साधन बढ़ सकते हैं। इसके साथ ही दूसरे को भी प्रशिक्षण की जानकारी देकर कृषि के क्षेत्र में बढ़ावा लाया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की कई किसान महिलाएं शामिल थी।

बाल विकास विद्यालय के 38 वीं वार्षिक महोत्सव धूमधाम से मनाई गई

जिंदगी के हर कदम पर प्रतियोगिता से जूझने वाले इस घोर प्रतियोगी युग में बच्चों को अच्छी शिक्षा अति आवश्यक है-उपप्राचार्य

प्रतिनिधि, विष्णुगढ़। विष्णुगढ़ प्रखंड क्षेत्र के बाल विकास विद्यालय में रविवार को 38 वीं वार्षिक महोत्सव पूरे धूमधाम से मनाई गई। इस दौरान काफी संख्या में गांव के गण्यमान्य व्यक्ति एवं अभिभावक मौजूद थे। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्राचार्य नवल किशोर वर्मा, उपप्राचार्य राजेंद्र प्रसाद सिंह,नकुल मंडल,मुरली प्रसाद बरनवाल,मधुसूदन प्रसाद ने संयुक्त रूप से दीपप्रज्ज्वलित कर किया। महोत्सव पर संस्कृति कार्यक्रम डांस प्रतियोगिता में विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी अपनी कला का जवला दिखाकर लोगों का मन मोह लिया।कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य नवल किशोर वर्मा ने कहा कि बाल विकास विद्यालय की स्थापना 1986 में हुई थी। उस समय इस इलाके में शिक्षक तो थे, लेकिन शिक्षित बनाने के लिए कोई निजी विद्यालय नहीं था। जहां से बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।संयोग वश तत्कालीन विधायक स्व.टेकलाल महतो की प्रेरणा से इस बाल विकास विद्यालय की नींव उन्ही की द्वारा रखी गई। उस समय महज दो कमरे, दो शिक्षक 17 बच्चों से विद्यालय की शुरुआत की गई।जो आज तक अविरल यात्रा जारी है और आज 38 वीं वार्षिक महोत्सव यह विद्यालय मना रही है। हमारे सहयोगी शिक्षकों और अभिभावकों के कठोर मेहनत का ही परिणाम है कि इस विद्यालय से पढ़कर सैकड़ो छात्र-छात्राएं अपनी परचम प्रखंड, राज्य, देश में ही नहीं विदेशों में भी लहरा रहे हैं।जिसमें अनेक डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, स्वास्थ्य के क्षेत्र में, रेलवे, झारखंड पुलिस, बिहार पुलिस, आईटी सेक्टर तथा देश की सुरक्षा में लगे अनेकों सैनिक शामिल है। मौके पर उपप्राचार्य राजेंद्र प्रसाद सिंह ने कहा कि जिंदगी के हर कदम पर प्रतियोगिता से जूझने वाले इस घोर प्रतियोगी युग में बच्चों को अच्छी शिक्षा अति आवश्यक है। जिसमें बच्चे बिना भटकाव के अपने लक्ष्य को हासिल कर सके।इस विद्यालय की ओर से अपील है कि आप लोग हमें सहयोग दें। जिससे विद्यालय अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा की बुनियाद दे सके।कार्यक्रम में चेडरा पसंस मुन्नी देवी, विजय कुमार बरनवाल उर्फ (गुड्डू सर) पूनम देवी, जसवंत मिश्रा, महेश पांडेय, अमित कुमार, अनीता देवी, रेनू सिंह, वरुण कुमार, बिजेंद्र प्रसाद, कृष्णा कुमार, मनोज पाठक, छोटी नाथ गोस्वामी, संजना मिश्रा, पूजा सिंह, अलका गुप्ता, प्रमिला देवी, रिया कुमारी समेत काफी संख्या में महिला पुरुष मौजूद थे।

चौपारण पुलिस को मिली बड़ी सफलता, भारी मात्रा में तस्करी कर ले जाते शराब की बड़ी खेप पकड़ी गई

प्रतिनिधि,चौपारण। चौपारण (हजारीबाग) नवनियुक्त थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह फुल एक्शन मूड में हैं. उनका कहना है कि जो भी अवैध कारोबार करेगा, उसे परिणाम भुगतना होगा। पकड़े जाने पर किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जायेगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस अधीक्षक हजारीबाग को सुबह गुप्त सूचना मिली कि एक काले रंग की स्विफ्ट डिजायर गाड़ी संख्या जेएच10जेड-8113 अवैध रूप से बरही की ओर से चौपारण होते हुए बिहार की ओर जा रही है। अंग्रेजी शराब लोड कर तस्करी के लिए बिहार ले जाया जा रहा है। इस सूचना पर चोरदाहा चेक पोस्ट पर बैरिकेडिंग लगा दी गई और बरही की ओर से आने वाले सभी वाहनों की जांच शुरू कर दी गई। इसी बीच सुबह करीब 03.50 बजे उक्त वाहन आता दिखायी दिया. जिसे सशस्त्र बलों ने रुकने का इशारा किया। लेकिन स्विफ्ट डिजायर के चालक ने चोरदाहा चेक पोस्ट के पीछे अपनी गाड़ी रोक दी और गाड़ी से उतरकर अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकला। जब्त वाहन की तलाशी लेने पर वाहन के अंदर 22 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद हुई। जिसमें रॉयल स्टैग कंपनी के 375 एमएल के 20 बॉक्स एवं इंपीरियल ब्लू कंपनी के 375 एमएल के 02 बॉक्स मिले। इस संबंध में चौपारण थाना कांड संख्या 57/24 दिनांक 03/03/24 धारा 270/272/273/290/414/34 भा0द0वि0 एवं 47(ए) उत्पाद अधिनियम दर्ज कर अनुसंधान किया जा रहा है। साथ ही जप्त सामानो का विवरण एक काले रंग की स्विफ्ट डिजायर गाड़ी नंबर- छ॥10ॅ-8113, रॉयल स्टैग कंपनी का 375 एमएल का 20 बॉक्स कुल 480 बोतल व 02 पेटी इम्पिरियल ब्लू कम्पनी का 375 द्रव्य कुल 48 बोतल जब्त की गई। छापामारी दल में पु0अ0नि0 दीपक कुमार सिंह थाना प्रभारी चौपारण थाना, स0अ0नि0 मनोज कुमार सिंह चौपारण थाना और चौपारण थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

बिशुनपुरा में मनाई गई संत शिरोमणि रविदास जयंती

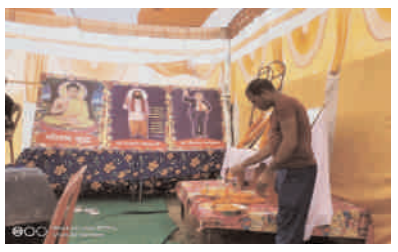

प्रतिनिधि,बिशुनपुरा(गढ़वा)। बिशुनपुरा प्रखंड मुख्यालय के झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक समीप गोलू भोजनालय के पास मनाई गई संत शिरोमणि रविदास की 647 वीं जयंती। जहां कार्यक्रम में उपस्थित लोगों के द्वारा मोमबत्ती जलाकर तथा मल्यार्पण कर की गई पूजा। वहीं कार्यक्रम में उपस्थित बिशुनपुरा पंचायत के समाजसेवी नवल किशोर गुप्ता ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि संत शिरोमणि रविदास एक भगवान के रुप थे। आज उनके बताए हुए मार्गो पर हमें चलने की आवश्यकता है। वहीं उन्होंने कहा कि आज मेरा समाज नशा की ओर अग्रसर है, जिसे हमसब को त्यागना होगा तथा खुद को एवं अपने भविष्य बच्चों को शिक्षा की ओर आगे आना होगा। जिससे हमारी भविष्य की सुधार हो पाएगी। वहीं कार्यक्रम में मिशन गायकों द्वारा एक पर एक गीत की प्रस्तुति की गई। वहीं कार्यक्रम में मनोज रवि, मंजू राम, विकाश राम, मुन्ना कुमार, श्री राम कुमार, ललित मेहता, रामाधार राम, फेकू ठाकुर, सत्यनारायण विभूति ठाकुर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

अखिल भारतीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा द्वारा नवनिर्मित मंदिर के शिव प्राण प्रतिष्ठा कलश यात्रा में सम्मिलित हुए बरही विधायक उमाशंकर अकेला

प्रतिनिधि,बिगहा(चौपारण)। अखिल भारतीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा द्वारा बिगहा मैं नवनिर्मित शिव मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा यज्ञ के निमित्त रविवार को भव्य कलश यात्रा निकाली गई जिसमें सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कलश यात्रा के इस पावन अवसर पर बरही विधायक सह निवेदन समिति सभापति उमाशंकर अकेला एवं चौपारण भाग 2 के जिला परिषद सदस्य रवि शंकर अकेला सम्मिलित हुए। इस अवसर पर मंदिर निर्माण एवं यज्ञ समिति के सदस्यों के द्वारा श्री अकेला को अंग वस्त्र प्रदान कर स्वागत किया गया। विधायक उमाशंकर अकेला ने कलश देकर कलश यात्रा का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में प्रखंड प्रमुख पूर्णिमा देवी, चौपारण भाग 1 के जिला परिषद सदस्य राकेश रंजन, आरती कौशल, प्रीति गुप्ता, मुखिया संघ अध्यक्ष वीरेंद्र रजक सहित कई पंचायत के मुखिया एवं समिति सदस्य कई राजनीतिक एवं सामाजिक लोगों के साथ-साथ क्षेत्र के गणमान्य लोग सम्मिलित हुए।

सीएम चंपाई ने क्यों कहा, लातेहार वासियों को जल्द मिलेगी खुशखबरी

लातेहार, प्रतिनिधि। राज्य के मुखिया चंपाई सोरेन सड़क मार्ग से रांची से गढ़वा जा रहे थे। इसी क्रम में वे परिसदन में कुछ समय के लिए रूके। इस अवसर पर उनका लातेहार परिसदन में पहुंचने पर जिले के उपायुक्त गरिमा सिंह ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। साथ ही इस अवसर पर लातेहार विधायक बैद्यनाथ राम ने लातेहार आगमण पर सीएम चंपाई सोरेने का भव्य स्वागत किया। इसके बाद सीएम पत्रकारों से भी मुखाबित हुए। पत्रकारों के सवाल के जवाब देते हुए झारखंड के मुख्यमंत्री चम्पई सोरेन ने कहा आज झारखंड विकास की लंबी लकीर खिंचने का काम काम कर रही है। जिले में जटिल से जटिल समस्या का निदान भी किया जा रहा है वही डिग्री कॉलेज के साथ साथ जिले में चल रहे विकास योजनाओं में तेजी लाने का प्रयास किये जा रहे है। जब उनसे पत्रकारों ने पुछा की लातेहार जिले में कोल खनन किया जा रहा है पर स्थानीयल लोगों के स्थान पर बाहरियों को नौकरी पर रखा जा रहा है तो उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने सभी जिलों में स्थानीय को नौकरी पर रखने की प्राथमिकता दी है और 75 प्रतिशत लोगों को रखने का नियम बनाया है इसे जल्द लागू कर स्थानीय लोगों को नौकरी मुहैया कराया जाएगा।

सीएम ने किया भाजपा पर प्रहार : पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि बहुत कुछ करना है और हमने सदन में कहां है और नीचे स्तर से शुरुआत करना है।

आज झारखंड अलग बने 24 साल हो गए है। इस दौरान राज्य में सबसे ज्यादा समय तक भाजपा ने सरकार चलाई है और पर हमें लगता है कि या तो भाजपा को झारखंड की भौगोलिक स्थिति पता नहीं या वह यहां के लोगों को का विकास करना ही नहीं चाहती, केवल उन्हें दिलाता देने का कार्य किया है। हमारी सरकार बड़ी मजबूती के साथ पूरे झारखंड क्षेत्र में भौगोलिक स्थिति को देखते हुए जन भावना के अनुसार योजनाओं को धरातल पर उतारने का कार्य करेगी और कोई भी ऐसा जिला नहीं होगी जो अपने आप को छला महसूस करेगा, जैसा भाजपा ने किया। भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सही से काम नहीं करने दे रही है।

आप सभी को जल्द मिलेगी खुशखबरी

वहीं जब पत्रकारों ने सीएम से पूछा की लातेहार के स्थानीय विधायक बैद्यनाथ राम का मंत्री बनने के लिस्ट में नाम होने के बावजुद उन्हें मंत्री नहीं बनाया गया तो उन्होंने कहा कि जल्द ही आप सभी को खुशखबरी मिलेगी। इस अवसर पर सीएम चंपाई सोरेन के साथ मंत्री मिथलेश ठाकुर, थी उनके साथ गढ़वा जा रहे थे। इधर सीएम के स्वागत के लिए परिसदन में भारी संख्या में झामुमो कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिए परिसदन पहुंचे थे।

जेल का फाटक टूटेगा हेमंत हमारा छूटेगा : राजेंद्र

पूसू प्रतिनिधि

मेदिनीनगर (पलामू)। रांची स्थित बापू वाटिका मे झारखंड मुक्ति मोर्चा के सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता झामुमो पलामू के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिन्हा के नेतृत्व में उपवास किया। भाजपा द्वारा केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर, हेमंत सोरेन जी के अलोकतांत्रिक तरीके से गिरफ्तारी के विरोध में उपवास कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। पलामू से गए सभी नेताओं ने बापू वाटिका के समक्ष उपवास धारण किया। अध्यक्ष श्री सिन्हा ने बताया ÷आज हम सबों ने बापू वाटिका के समझ उपवास धारण किया है, आज झामुमो के सभी कार्यकर्ता और झारखंड की जनता भाजपा के कुकृत्य से तंग आ चुके हैं। भाजपा केंद्रीय एजेंसियों को तोता बना कर रखी है, भाजपा के संगठन की तरह ईडी काम कर चुकी है, और देश में जैसे अघोषित आपातकाल है। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन जी को जिस तरीके से षड्यंत्र कर भाजपा ने इस्तीफा देने को मजबूर किया है और जेल में रखा है, झारखंड ही नहीं पूरी देश की जनता जान चुकी है की ये लोग हेमंत सोरेन से डर चुके हैं। जब झारखंड में पहली बार किसी सरकार

ने विकास करने का कार्य शुरू किया तो भाजपा झामुमो की सरकार की बढ़ती लोकप्रियता से घबरा गई और अपने पॉकेट एजेंसियों के साथ मिल कर षड्यंत्र किया। भाजपा लाख चालें चल ले लेकिन ये आंदोलनकारी राज्य झारखंड झुकेगा नहीं।÷ इस कार्यक्रम में सचिव सन्नू सिद्धिकी, कोषाध्यक्ष रमेश सिंह, केंद्रीय समिति सदस्य संजीव तिवारी, सुनील तिवारी, गोपाल सिन्हा, चंदन सिन्हा, मनोज गुप्ता, उपाध्यक्ष राकेश सिन्हा, कमाल खान, असफर रब्बानी, बालकिशुन उरांव, वरिष्ठ नेता अविनाश देव, अमित सिन्हा, बबलू शाहनवाज, रिशु अग्रवाल, प्रदीप सिंह, संगठन सचिव अनुराग सिंह,विवेकानंद सिंह, उमा सिंह, महिला मोर्चा अध्यक्ष सुशीला मिश्रा, नगर अध्यक्ष रंजीत जयसवाल, सचिव छोटू त्रिपाठी, उपाध्यक्ष मोनू सिन्हा, युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अरविंद चौधरी, कोषाध्यक्ष देवानंद भारद्वाज, छात्र मोर्चा सचिव सैयद फैजल, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष फजायल अंसारी, कोषाध्यक्ष मन्नत बग्गा, सचिव नन्हे खान, इकबाल अंसारी, चैनपुर प्रखंड अध्यक्ष कमरुद्दीन अंसारी, सचिव नीतीश कुमार, अनिल चंद्रवंशी, अल्ताफ रजा, आशीष सिंह चेरो, दीनानंथ सिंह, पांडू प्रखंड अध्यक्ष इरफान खान, विक्रम चंद्रवंशी, सुदेश्वर प्रजापति, पाटन प्रखंड अध्यक्ष रंजीत सिंह, दीनदयाल सिंह, रामगढ़ प्रखंड अध्यक्ष उदय भुइया, संजय राम, रामनाथ सिंह, धीरज जयसवाल, संतोष भुइया, दीपक कोरबा, अनिल राम, मनातू प्रखंड अध्यक्ष बसंत सिंह, महेंद्र यादव, रामचंद्र भुइया, टूटू अग्रवाल, पांकी प्रखंड अध्यक्ष मुन्ना सिन्हा, रेहान अहमद, योगेंद्र मेहता, संजय यादव, संतोष कुमार, हुसैनाबाद के मुन्ना कुमार देव, प्रकाश कुमार पासवान, बादल कुमार, जयप्रकाश पासवान, रिंकू कुमारी सहित सैकड़ों लोग उपाथित थे।

इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर में उमड़ी भीड़

झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एवं जीएस मार्केटिंग ने लगाया ट्रेड फेयर

वरीय संवाददाता

रांची। मोरहाबादी मैदान में चल रहे इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर के दूसरे दिन रविवार को लोगों की भीड़ खरीदारी करने के लिए जुटी। झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एवं जीएस मार्केटिंग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ट्रेड फेयर में देश और विदेश के व्यापारियों के करीब 375 से अधिक स्टॉल सजाए गए हैं। लोगों का दोपहर से ही आना शुरू हो गया, जो देर शाम तक आने जाने का सिलसिला चलरा रहा। लोगों ने कई उत्पादों को देखा और खरीदारी की। यहां गर्म कपड़ों का खास कलेक्शन हैं। कश्मीरी साड़ी व शॉल लोगों को खास पसंद आ रहे हैं। 250 से ज्यादा कारीगरों की कलाकृतियां लोगों को लुभा रही हैं। लोगों को कश्मीरी शॉल व साड़ी खास पसंद आ रही हैं। खासकर महिलाए इन्हें

खरीद रही हैं। साड़ी व शॉल पर की गई कलमकारी और कनकरी पेंटिंग आकर्षक हैं। अचार-पापड़ का स्टॉल लगाया है। गुजराती हैंडबैग भी लोगों को पंसद आ रहे हैं। जड़ी-बूटी के स्टॉल पर कई बीमारियों की दवा उपलब्ध हैं। साथ ही बॉडी मसाज से लेकर रसोई घरों में प्रयोग होने वाली सामाग्रियों का भी पूरा कलेक्शन है। इनके अलावा बच्चों के लिए किड्स जोन और फूड जोन बनाए गए हैं। यह मेला 11 मार्च तक चलेगा।

तीन हजार रूपये की खरीदारी पर निश्चित उपहार : वहीं, जीएस मार्केटिंग की ओर से तीन हजार रूपये या इससे अधिक की खरीदारी करने पर उन्हें सुनिश्चित उपहार दिये जा रहे हैं। जीएस मार्केटिंग के स्टॉल पर लोग बिल दिखा कर उपहार प्राप्त कर सकते हैं। ट्रेड फेयर में लोगों को कई उत्पादों पर ऑफर भी दिये जा रहे हैं।

झारखंड चैंबर के अध्यक्ष किशोर मंत्री और महासचिव परेश गट्टानी ने संयुक्त रूप से कहा कि रविवार के दिन होने से फेयर में लोगों की अच्छी खासी भीड़ रही। लोग अपने परिवार के साथ फेयर देखने पहुंचे और जरूरत के अनुसार खरीदारी की। शाम को टिकट काउंटर पर लंबी लाइन भी देखने को मिली। लोग ट्रेड फेयर की सराहना कर रहे हैं। राज्य के आर्थिक विकास में फेयर अपनी भूमिका निभा रहा है। फेयर को सफल बनाने में चैंबर के उपाध्यक्ष राहुल साबू, आदित्य मल्होत्रा, महासचिव परेश गट्टानी, संयुक्त सचिव अमित शर्मा, शैलेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष ज्योति कुमारी, कार्यकारिणी समिति के रोहित पोद्दार, राम बांगड, संजय अखौरी, साहित्य पवन, नवीन गाड़ोदिया, कुणाल विजयवर्गीय, मनोज मिश्रा, राजेश चौधरी समेत अन्य लोग लगे हुए हैं।

नगर परिषद ने किया दो पहिया वाहन पार्किंग का शुभारंभ

प्रतिनिधि, पाकुड़। रविवार को पूर्वाह्न 11¬30 बजे नगर परिषद द्वारा स्थापित नगर थाना के नजदीक दो पहिया वाहन पार्किंग स्टैंड का शुभारंभ प्रशिक्षु डीएसपी सह नगर थाना प्रभारी अजय आर्यन एवं नगर परिषद के प्रशासक कमल मिश्रा के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काट कर एवं नारियल फोड़कर शुरूआत किया। वही इस मामले में नगर परिषद के प्रशासक ने बताया कि शहर में जाम की समस्या से समाधान हेतु पार्किंग स्टैंड स्थापित किया गया है जो अनुमंडल कोर्ट परिसर, नगर थाना के समीप एवं टीनबंगला में है जहां लोग अपने वाहनों को पार्क कर पायेंगे। इससे जाम और चोरी से आम जनों को राहत मिलेगी। मासिक शुल्क 200 रुपए एवं प्रति 3 घंटा ?5 रुपए मात्र प्रति वाहन लिया जाएगा। वही इस मामले पर प्रशिक्षु डीएसपी अजय आर्यन ने बताया कि सभी लोगों को मार्केटिंग करने के दरमियान अपने वाहनों को पार्किंग स्थल पर ही लगाए इससे आपकी वाहन सुरक्षित रहेगी साथ ही सड़क में चलने वालों को भी दिक्कतें नहीं आएगी। आए दिन कोर्ट कैंपस में दो पहिया वाहनों के कारण सभी को परेशानी होती है, अब पार्किंग चालू हो जाने से कोर्ट परिसर सहित शहर के चौक चौराहा पर भीड़ भाड़ एवं जाम जैसी स्थिति नहीं होगी। मौके पर नगर थाना कि पुलिस, नगर परिषद के कर्मी, संवेदक सहित अन्य लोग मौजूद थे।

लोकसभा चुनाव को लेकर उपायुक्त ने किया महत्वपूर्ण बैठक

सरकारी अथवा गैर सरकारी कर्मचारी मैगनेटिक स्टीकर लगाकर करेंगे कार्य : उपायुक्त

प्रतिनिधि, पाकुड़। शनिवार को समाहरणालय सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त मृत्युंजय कुमार बरणवाल की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, कोल कम्पनी के प्रतिनिधि, बार एसोसिएशन, मीडिया प्रतिनिधि एवं विभिन्न उपक्रम के साथ बैठक की। बैठक में उपायुक्त मृत्युंजय कुमार बरणवाल ने संबंधित अधिकारियों को कहा कि आपके जितने भी कर्मी है सभी का वोटर आईडी कार्ड बना रहना चाहिए। इसे हर हाल में सुनिश्चित किया जाए। उपायुक्त ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी को निर्देश दिया कि जिले में 650 पीडीएस डीलर है। सभी पीडीएस डीलर को voter helpline app डाउनलोड करायें। साथ ही 4 मार्च 2024 को सभी मतदान केन्द्रों पर चलने वाले सोशल मीडिया अभियान #IamVerifiedVoter में शामिल हो। उपायुक्त ने कोल कम्पनियों के प्रतिनिधियों को चुनाव का पर्व, देश का गर्व से संबंधित लोगो 8 हजार मैगनेटिक स्टीकर बनाने का निर्देश दिया। ये स्टीकर जिला के सभी पदाधिकारी एवं कर्मी, मीडिया कर्मी, कोल कम्पनियों के प्रतिनिधि, पेट्रोल पंप के स्टाफ, रेलवे के स्टाफ आदि सभी लोग प्रतिदिन स्टीकर लगाकर कार्यालय जाएंगे, वोटिंग के दिन तक लगाना है। कोल कम्पनी के प्रतिनिधियों को निर्देश दिया कि सभी हाइवा में चुनाव से संबंधित पोस्टर लगाए। साथ ही उपायुक्त ने श्रम अधीक्षक को निर्देश दिया कि सभी श्रमिकों को एसएमएस भेजकर वोटिंग के दिन अपने मतदान केंद्र पर आकर वोट करें। वहीं शिक्षा विभाग को निर्देश दिया कि के.के एम कालेज एवं पॉलिटेक्निक कॉलेज में सभी छात्र छात्राओं को वोटर हेल्पलाइन डाउनलोड करवायें।

मौके पर सहायक समाहर्ता डॉ कृष्णकांत कनवाड़िया, सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल, निदेशक आइटीडीए श्री अरुण कुमार एक्का, उप निर्वाचन पदाधिकारी राजीव कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी संजय पीएम कुजूर, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल कुमार, जिला शिक्षा अधीक्षक नयन कुमार, श्रम अधीक्षक रमेश प्रसाद सिंह समेत अन्य उपस्थित थे।

विधायक सुनीता चौधरी ने हेमतपुर से सोसोकलाँ भाया जांगी तक पथ सुदृढ़ीकरण कार्य का किया शिलान्यास

प्रतिनिधि, गोला (रामगढ़)। रामगढ़ विधायक सुनीता चौधरी के द्वारा रविवार को झारखंड सरकार के ग्रामीण कार्य विभाग के तहत् मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत हेमतपुर से सोसोकलाँ भाया जांगी तक पथ सुदृढ़ीकरण कार्य का शिलान्यास शिलापट्ट का अनावरण करते हुए विधिवत नारियल फोड़ कर किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि उक्त मार्ग लंबे अरसे से खराब था जिससे ग्रामीणों को आने जाने में काफी परेशानी होती थी तथा ये ग्रामीणों की चिरप्रतीक्षित माँग थी तथा इस मार्ग के बन जाने के बाद लोगों को आवागमन में काफी सुविधा होगी। रामगढ़ विधान सभा क्षेत्र को चहुँमुखी विकास करना मेरा लक्ष्य है। मौके पर जिला परिषद् अध्यक्ष सुधा चौधरी, जिला परिषद् सदस्य सरस्वती देवी, मुखिया नीता देवी, समाज सेवी चंदर महतो, अशोक महतो, दिनेश महतो, त्रिभुवन महतो, पूर्व मुखिया बजरंग महथा, बालगोविंद महतो तथा संवेदक सहित कई लोग मौजूद थे।

फर्जी कागजात से कोयला लेजाते 4 चालक व उपचालक को जेल

एनएच 19 पर जाली पेपर पर कोयले के परिवहन करते पकड़े गए थे, 2 ट्रकों में 58 टन कोयला लोड था

प्रतिनिधि, डुमरी। अवैध कोयले के परिवहन पर रोकथाम हेतु निर्देशानुसार चलाये जा रहे चेकिंग के दौरान जीटी रोड एनएच 19 पर कुलगो टॉल प्लॉजा के समीप कोयला लदे दो ट्रक को डुमरी थाना पुलिस के द्वारा पकड़ा गया था। मामले में चार लोगों को रविवार को जेल भेज दिया गया।उक्त दोनों ट्रको के चालक द्वारा ट्रक में लोड कोयला से संबंधित कागजात उपलब्ध कराया गया। जिसे जिला खनन कार्यालय, गिरिडीह से विधिवत जाँच कराया गया। जाँच के क्रम में कागजात फर्जी पाए गए। इस संबंध में खान निरीक्षक, जिला खनन कार्यालय, गिरिडीह के द्वारा अवैध कोयला परिवहन से संबंधित दिये गये आवेदन पर ट्रक सं बीआर-04जीए-5466 व ट्रक सं डब्लूबी-37ई-2870 के चालक, सह-चालक, मालिक तथा अवैध कोयला कारोबार में संलिप्त व्यक्तियों के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की गई।

वहीं मौके से पुलिस ने ट्रक सं बीआर-04जीए-5466 के चालक अमरजीत सिंह (उम्र करीब 30 वर्ष) पिता सुभाष सिंह ग्राम उड़वाडीह, थाना हाथा, जिला कुशीनगर (उप्र). और सह-चालक बताया नाम दीपक कुमार (उम्र करीब 21 वर्ष) पिता अशोक कुमार ग्राम उड़वाडीह, थाना हाथा, जिला कुशीनगर (उप्र) तथा ट्रक नं डब्लूबी-37ई-2870 के चालक पंकज कुमार (उम्र करीब 23 वर्ष) पिता लाटो यादव ग्राम संसारपुर,

थाना गिद्धौर, जिला जमुई (बिहार),सह-चालक दीपक कुमार (उम्र करीब 20 वर्ष) पिता सुनील यादव ग्राम संसारपुर, थाना गिद्धौर, जिला जमुई (बिहार) को गिरफ्तार कर लिया।जिन्हे जेल भेज दिया गया।

साथ ही उक्त दोनों ट्रकों को जब्त कर लिया गया।जिसमें करीब 58 टन स्टीम कच्चा कोयला लोड था।

नवनियुक्त एसडीपीओ से है सदर अनुमंडल क्षेत्र को उम्मीद :दीपक

पूसू प्रतिनिधि

मेदिनीनगर (पलामू)। झामुमो नेता दीपक तिवारी, प्रतिष्ठित व्यवसायी धनंजय सोनी ने किया नवनियुक्त एसडीपीओ का स्वागत, कहा समाज का सहयोग पुलिस की ताकत। पलामू में नव पदास्थापित एसडीपीओ मणि भूषण प्रसाद का अनुभव पलामू मुख्यालय मेदिनीनगर के लिए उपयोगी साबित होगा। अपराध मुक्ति के साथ सोशल पुलिसिंग वाला जिला है पलामू, जहां नवनियुक्त एसडीपीओ के अनुभव का लाभ आम जनमानस को मिलेगा। ये बातें कहीं झामुमो के युवा नेता दीपक तिवारी ने। पदास्थापना के उपरांत नवनियुक्त अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी मणि भूषण प्रसाद से मुलाकात कर सदर एवं शहरी क्षेत्र में शांति व्यवस्था पर एक दूसरे का अनुभव साझा किया। मौके पर दीपक तिवारी ने कहा कि पुलिस अधीक्षक की कार्यतालिका पलामू में सशक्त पुलिसिंग के तौर पर स्थापित है। जनमानस के साथ तालमेल बैठाना पुलिस के लिए आवश्यक है, जिसमें सदर अनुमंडल पदाधिकारी को महारत हासिल है। आमजन के लिए सरल एवं सुलभ रहेंगे, तो अपराध पर नियंत्रण पाने में सफलता मिलेगी। स्वच्छ समाज के लिए सोशल होना आवश्यक है, जो कि पलामू पुलिस का एक चेहरा सोशलिंग रहा है। वहीं एसडीपीओ मणि भूषण प्रसाद ने भी समाजसेवी दीपक तिवारी एवं व्यवसायी धनंजय सोनी को

समाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक कार्यकर्ता, व्यवसायी वर्ग को सुरक्षित रखने का भरोसा दिया। साथ ही बताया कि समाज का सहयोग ही पुलिसिंग की ताकत है। पलामू सशक्त एवं संपन्न जिला है, यहां अपराध की चूनौति को निपटने के लिए पलामू पुलिस सदैव तत्पर रहेगी। मौके पर सोना महल के कर्ताधर्ता प्रतिष्ठित व्यवसायी धनंजय सोनी ने बताया कि पलामू का व्यवसाय जगत पलामू पुलिस के भरोसे सुरक्षित एवं समृद्ध रहा है। अनुभवी पुलिस पदाधिकारी का लाभ पलामू प्रमंडलीय मुख्यालय को मिलेगा, एवं इनके कार्यकाल में व्यवसाय जगत फलेगा फूलेगा ऐसी आशा है। इस दौरान झामुमो युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष राकेश तिवारी, झामुमो नेता परवेज अख्तर ने भी नवनियुक्त अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को पलामू आगमन पर शुभकामना दी।

आजसू के प्रखण्ड अध्यक्ष ने थाना प्रभारी को बुके भेंट कर किया स्वागत

प्रतिनिधि, पाकुड़। आजसू पार्टी के पाकुड़ प्रखंड अध्यक्ष रफिक अहमद ने मुफस्सिल थाना परिसर पहुंच कर नवपदस्थापित थाना प्रभारी संजीव झा को बुके भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर नये थाना प्रभारी संजीव झा ने कहा कि मुफस्सिल थाना क्षेत्र में शांति और अमन चैन कायम रहे यही सभी जनप्रतिनिधियों और समाजसेवी से सहयोग की अपेक्षा है। साथ हीं उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र में अपराध फैलाने वाले लोगों पर उनकी पैनी नज़र रहेगी। अवैध कारोबार को किसी हालत में नहीं चलने देंगे। मौके पर जिला मीडिया प्रभारी अहमादुल्ला, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रखंड अध्यक्ष प्रिंस साहेब, प्रखंड उपाध्यक्ष बादशाह शेख, विक्रम मंडल और प्रखंड कोषाध्यक्ष मोसारफ भी शामिल थे।

एग्रोटेक किसान मेला में परिभ्रमण हेतु 50 किसानों को भेजा गया रांची

प्रतिनिधि, पाकुड़। आत्मा के द्वारा रविवार को सभी प्रखंड से किसानों का चयन कर कुल पचास किसानों को बस से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची में आयोजित एग्रोटेक किसान मेला 2024 में परिभ्रमण हेतु भेजा गया। किसानों एवं कृषि उद्यमियों को उन्नत कृषि, पशुपालन, वानिकी एवं कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों से संबंधित उपयुक्त तकनीकों की नवीनतम जानकारी देने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची द्वारा एग्रोटेक किसान मेला का आयोजन कांके विश्वविद्यालय के प्रांगण में किया गया है जिसमें सभी किसान सोमवार को कृषि से नवीनतम तकनीक से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे। टीम लीडर के रूप में अभिजीत कुमार शील, सहायक तकनीकी प्रबंधक को किसानों के साथ में भेजा गया।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम द्वारा बरलंगा थाना क्षेत्र में खोली जाएगी पेट्रोल पंप

प्रतिनिधि, गोला (रामगढ़)। गोला प्रखंड के बरलंगा थाना क्षेत्र अंतर्गत हेठबरगा मौजा के मूंगा टांड में एक सौ फीट लंबा एक सौ फीट चौड़ा एरिया में जीतू महतो के द्वारा एचपी पेट्रोल पंप खोला जाएगा। उक्त पैट्रोल पंप को खोलने में संजय तात्ती का 6 डिसमिल जमीन के अलावा जीतू महतो के द्वारा अपने खरीदे हुए जमीन जमीन में पैट्रोल पंप खोल रहे है। यहाँ पेट्रोल पंप खुलने की बात को सुनते ही क्षेत्र के लोगों ने काफी उत्सुकता दिखाई। इस दौरान बरलंगा पंचायत के मुखिया पति त्रिलोचन प्रजापति ने कहा कि पैट्रोल पंप खोलने में जमीन की अगर और आवश्यकता पड़े तो उन्होंने जमीन देने की इच्छा जागृत किया। उन्होंने आगे बताया कि उक्त पेट्रोल पंप के खुलने क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलेगा तथा गोला से झालदा से जाने में वाहन चालकों को पेट्रोल व डीजल के लिए परेशान होना नहीं पड़ेगा। जमीन की सही मापी कराने के लिए चितरपुर के सोंढ बस्ती से अमीन कामेश्वर महतो को बुलाया गया था जिन्होंने जमीन का संतोष जनक मापी किया और पेट्रोल पंप के लिए जमीन का सीमांकन किया। मौके पर निर्मल महतो,जीतू महतो, संजय तांती,गोविंद तांती,आशीर्वाद तांती के अलावा गांव के कई लोग मौजूद थे।

भव्य कलश यात्रा के साथ रुद्र महायज्ञ का हुआ शुभारम्भ

पूसू प्रतिनिधि, गिरीडीह। गांडेय के राताबहितार में आयोजित सात दिवसीय महायज्ञ व श्री श्री 1008 प्राण प्रतिष्ठा सह शिव-पार्वती विवाह महोत्सव महायज का शुभारंभ आज भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ। कलश यात्रा में ग्यारह सौ महिला एवं युवतियों ने कलश उठाया। जबकि यात्रा में 2 हजार से अधिक लोग शामिल हुए। कलश यात्रा राताबहितार शिव मंदिर प्रांगण से शुरू हुआ और राताबहितार गांव भ्रमण करते हुए झरघटा पंचायत के गांव होते हुए दुखिया महादेव मंदिर प्रांगण के समीप नदी पहुंची। दुखिया महादेव मंदिर का भ्रमण करते हुए यात्रा नदी पहुंची। नदी से जल उठाने के बाद कलश यात्रा वापस राताबहितार स्थित यज्ञ स्थल पहुंची. कलश यात्रा के दौरान पूरा माहौल भक्तिमय बना रहा और धार्मिक नारों के साथ जय जयकारा गूंजता रहा। बताया गया कि इस 7 दिवसीय यज्ञ विभिन्न स्थानों से पुरोहित और पंडित भाग लेंगे. महायज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए कथा वाचिका पूज्य किशोर साक्षी दीदी वृन्दावन, (उ.प्र.),यज्ञाचार्य श्री जयकुमार वैध जी अपनी टीम के साथ पहुंचे। यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद पूड़ी बुंदिया का प्रबंध किया गया था। कलश यात्रा में शामिल महिला श्रद्धालुओं समेत अन्य लोगों के लिए चैती दुर्गा नवयुवक समिति, राताबहियार द्वारा प्रसाद, शर्बत और पानी की व्यवस्था की। मौके पर दिनेश यादव, कोडरमा सांसद प्रतिनिधि,दिलीप वर्मा,प्रदेश मंत्री, नंतू ताह ,इंजीनियर विनय कुमार सिंह,प्रकाश यादव,यदुनंदन पाठक,राज कुमार पाठक ,शिक्षक अशोक मोदी आदि हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सिमरिया विधायक के द्वारा मुरुमदाग से राजबर पथ का किया गया शिलान्यास

प्रतिनिधि, इटखोरी। इटखोरी (चतरा) प्रखंड में रविवार को सिमरिया विधानसभा के लोकप्रिय विधायक के द्वारा इटखोरी प्रखंड में मुरुम दाग से राजभर तक जाने वाली सड़क के निर्माण का शिलान्यास किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सिमरिया विधानसभा के लोकप्रिय विधायक किशुन कुमार दास जी, तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजयुमो चतरा जिला प्रभारी अधिराज नारायण रहे उपस्थित। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला महामंत्री मृत्युंजय कुमार सिंह मंडल अध्यक्ष देव कुमार सिंह जिला ओबीसी मोर्चा उपाध्यक्ष सुधीर कुमार राय विधायक प्रतिनिधि निरंजन कुमार सिंह टोनाटाड़ मुखिया बद्री यादव मंडल मंत्री अनुज दांगी भाजयुमो मंडल अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह मंडल महामंत्री आशीष मिश्रा ओबीसी प्रखंड अध्यक्ष ज्ञानी यादव पिंटू सिंह सिकंदर राम मुंशी राम मंडल अध्यक्ष युवा मोर्चा गणेश कुमार सिंह मंडल महामंत्री युवा मोर्चा आशीष मिश्रा आदित्य कुमार आशीष कुमार देंगे धीरेंद्र कुमार धर्मेंद्र कुमार किशोरी कुमार देंगे तथा भारतीय जनता पार्टी के सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

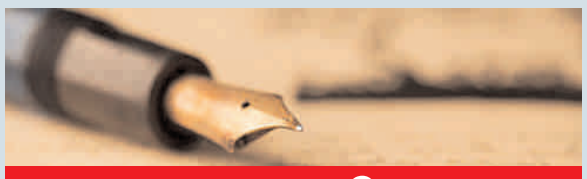

संपादकीय

महंगाई और प्रति व्यक्ति खर्च बढ़ना एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था की निशानी

अर्थव्यवस्था के तेज विकास और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने के दावों के बीच हकीकत यह है कि पिछले बारह-तेरह सालों में लोगों का घरेलू खर्च बढ़ कर दोगुने से अधिक हो गया है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के ताजा घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण के मुताबिक मौजूदा कीमतों पर शहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति औसत घरेलू खर्च 2011-12 के 2,630 रुपए से बढ़ कर 2022-23 में दोगुने से अधिक यानी 6,459 रुपए हो गया है। इसी तरह ग्रामीण इलाकों में यह 1,430 रुपए से बढ़कर 3,773 रुपए हो गया है। इसमें यह भी जाहिर हुआ है कि गैर-खाद्य वस्तुओं पर खर्च बढ़ा है, जबकि खाद्यान्न पर खर्च पहले की तुलना में कम हुआ है। फलों, सब्जियों, दूध, मछली, खाद्य तेल आदि पर खर्च बढ़ा है। इसी तरह शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, वस्त्र और दूसरी जरूरी उपभोक्ता वस्तुओं पर खर्च बढ़ा है। इसकी एक वजह तो यह बताई जा रही है कि कोविड के समय शहरों से गांवों की तरफ लौटे लोगों के कृषि क्षेत्र में समाहित हो जाने से उस क्षेत्र का औसत उपभोग खर्च बढ़ा है। मगर यही तर्क शहरी खर्च बढ़ने पर लागू नहीं होता। यह तब है, जब सरकार लगातार महंगाई पर काबू पाने का प्रयास कर रही है। इन आंकड़ों के समांतर दावा यह भी है कि गरीबी में पांच फीसद की कमी आई है। बहुआयामी गरीबी से करीब तेईस करोड़ लोगों के बाहर निकलने का आंकड़ा भी कुछ दिनों पहले चर्चा में था। इन सबके बीच एक तथ्य यह भी है कि प्रति व्यक्ति आय में कोई उल्लेखनीय बढ़ोतरी नहीं हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति मासिक आय भी लगभग उतनी ही है, जितना प्रति व्यक्ति मासिक खर्च है। मगर इससे प्रति व्यक्ति आय और प्रति व्यक्ति खर्च का समीकरण संतुलित नहीं होता। ज्यादातर परिवारों में एक ही व्यक्ति कमाने वाला होता है, जबकि उस पर निर्भर औसतन तीन लोग होते हैं। इन्हीं आंकड़ों के बीच सरकार का दावा है कि वह बयासी करोड़ लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराती है। यानी प्रति व्यक्ति मासिक घरेलू व्यय के औसत में इस आबादी का हिस्सा भी शामिल है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि चूंकि यह सर्वेक्षण ग्यारह सालों बाद आया है, इसलिए इसमें प्रति व्यक्ति खर्च ऊंचे स्तर पर नजर आ रहा है। महंगाई और प्रति व्यक्ति खर्च बढ़ना एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था की निशानी माना जाता है। मगर इसके साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय में भी समतुल्य बढ़ोतरी दर्ज होना आवश्यक है। विचित्र है कि प्रति व्यक्ति आय उस अनुपात में नहीं बढ़ रही है, जिस अनुपात में महंगाई और घरेलू खर्च बढ़ रहा है।

दो दशक के भीतर बदल गयी लोगों की मानसिकता, अब खान-

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा)

एनएसएस की रिपोर्ट का समग्र विश्लेषण किया जाए तो खाने-पीने की वस्तुओं में चाहे शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण, दोनों ही जगह ब्रेवरेज यानि की पेय पदार्थों और प्रोसेस्ड फूड यानी की डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों का उपयोग बढ़ा है। नेशनल सैंपल सर्वे की हालिया रिपोर्ट में रहन-सहन और खान-पान के प्रति देशवासियों में जबरदस्त बदलाव देखने को मिल रहा है। जहां एक ओर 1999-00 से 2022-23 के दौरान खाने-पीने की वस्तुओं पर खर्चे में तेजी से कमी देखी जा रही हैं वहीं खाने-पीने से इतर अन्य पर खर्च में बड़ा उछाल सामने आ रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि यह बदलाव केवल शहरी क्षेत्रों में हो ऐसा नहीं हैं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव की बयार लगभग समान ही नहीं अपितु शहरी क्षेत्र से अधिक ही है। ऐसा नहीं है कि इस दौरान प्रति व्यक्ति व्यय में कमी आई हो अपितु प्रति व्यक्ति व्यय में लगातार बढ़ोतरी ही देखने को मिल रही है। यह रुझान तेजी से बदलती प्राथमिकताओं को भी स्पष्ट करता है।

एक और तथ्य यह है कि कि खाद्यान्न के उपयोग में कमी आई हैं वहीं अखाद्य सामग्री की खरीद में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। दरअसल यह बदलाव बदलते परिदृश्य को भी स्पष्ट करता है। एनएसएस की रिपोर्ट का समग्र विश्लेषण किया जाए तो खाने-पीने की वस्तुओं में चाहे शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण, दोनों ही जगह ब्रेवरेज यानि की पेय पदार्थों और प्रोसेस्ड फूड यानी की डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों का उपयोग बढ़ा है पर इन्हें भी शामिल कर लिया जाये तो भी खान-पान पर होने वाला व्यय 1999-00 की तुलना में 2022-23 आते आते बहुत कम हो गया है वहीं अखाद्य वस्तुओं पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों द्वारा दिल खोलकर पैसा खर्च किया जा रहा है। लगता है जैसे अब लोगों की समान रूप से प्राथमिकताएं बदल गई हैं। बल्कि यह कहना अधिक युक्तिसंगत होगा कि अब रहन-सहन और सुख सुविधाओं के उपयोग में गांव किसी तरह से भी शहरों से पीछे नहीं रहे हैं। बल्कि रिपोर्ट से तो यही उभर कर आता है और यह स्पष्ट हो गया है कि माल संस्कृति के बावजूद अब उत्पादकों को ग्रामीण क्षेत्र में अच्छा बाजार मिलने लगा है। इसे अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत भी माना जा सकता है तो दूसरी और मानें या ना मानें पर सर्वे से तो यही स्पष्ट हो रहा है कि अब गांव गांव नहीं रहे और वह शहरों से कहीं पीछे नहीं रहना चाहते। यही कारण है कि उत्पादकों द्वारा अब ग्रामीण क्षेत्र को भी टारगेट बनाकर रणनीति तैयार की जाने लगी है।

देश में दो दशक में ही आये ड्रास्टिक बदलाव को आंकड़ों की भाषा में समझें तो ग्रामीण क्षेत्र में 1999-00 में खाद्य सामग्री पर 59.40 प्रतिशत राशि व्यय की जा रही थी वहीं 2022-23 आते आते यह घटकर 46.38 प्रतिशत ही रह गई। खास बात यह कि इसमें तेजी से बदलाव खासतौर से पिछले एक दशक में देखा गया है। इसी तरह से शहरी क्षेत्र की बात की जाए तो 1999-00 में खाद्यान्न पर खर्चा 48.06 प्रतिशत राशि की जाती थी जो 2022-23 आते आते कम होते हुए 39.17 प्रतिशत रह गई। सबसे खास बात यह कि खाद्यान्न में जो कमी आई है भले ही उसके पीछे विशेषज्ञ एक कारण सरकार द्वारा खाद्य सामग्री का निःशुल्क व कम कीमत पर वितरण माना जा रहा है पर यह गले उतरने वाली बात इसलिए नहीं है क्योंकि खाद्य सुरक्षा के तहत एक सीमा तक ही निःशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण हो रहा है। हां कुछ हद तक खाने-पीने के बदलाव की बात कही जाती है पर यह भी सही नहीं मानी जा सकती क्योंकि डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों के उपयोग में उतनी बढ़ोतरी नहीं दिख रही जितनी खाद्यान्न के उपयोग में कमी आई है। लगता है जैसे खाद्यान्न से लोगों का मोहभंग होता जा रहा है। पर इसे भविष्य के लिए शुभ संकेत भी नहीं माना जा सकता।

1999-00 में ग्रामीण क्षेत्र में खाद्यान्न व खाद्यान्न के विकल्पों पर 22.23 प्रतिशत राशि व्यय होती थी जो दो दशक में ही कम होते होते इकाई की संख्या यानी कि 6.92 प्रतिशत पर आ गई है। यह तो गांवों की स्थिति है। शहरों में भी खाद्यान्न व खाद्यान्न उत्पादों पर होने वाला व्यय 12.39 से कम होकर 4.51 प्रतिशत रह गया है। दूसरी और खाद्य सामग्री में ही ब्रेवरेज और प्रोसेस्ड फूड को लिया जाये तो इसका उपयोग शहरी क्षेत्र में 6.35 प्रतिशत से बढ़कर 10.64 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 4.19 प्रतिशत से बढ़कर 9.62 प्रतिशत हो गया है। दूसरी ओर अखाद्य वस्तुओं की खरीद की बात की जाए तो ग्रामीण क्षेत्र में 40.60 प्रतिशत से बढ़कर 53.62 प्रतिशत हो गई तो शहरी क्षेत्र में 51.94 प्रतिशत से बढ़कर 60.83 प्रतिशत तक पहुंच गया है। इसमें भी ज्यादा उछाल ड्यूरेबल आइटम्स में देखा जा रहा है। लोगों की रुचि वाहन, एसी, फ्रीज, ओवन, फ्लैट्स या मकान आदि की ओर बढ़ा है। तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि कपड़े-जूते और इसी तरह की निजी उपयोग की वस्तुओं पर व्यय में कमी आई है।

दरअसल यह दो दशक में देशवासियों के बदलते मिजाज की तस्वीर है। पर खाने पीने की वस्तुओं के उपयोग में कमी आना, डिब्बा बंद व पेय पदार्थों के उपयोग में बढ़ोतरी चिंता का विषय होनी चाहिए। इसी तरह से ड्यूरेबल आइटम्स के लिए जिस तरह से पर्सनल और अन्य तरह के लोन लेने व क्रेडिट कार्ड के उपयोग के कारण कर्ज के बोझ तले दबने को भी उचित नहीं कहा जा सकता। देखा जाए तो इनसे आज की पीढ़ी व आज के लोग तनाव, कुंठा, प्रतिस्पर्धा आदि को भी बिना किसी तरह का दाम चुकाये प्राप्त करने लगे हैं। एक समय था जब दो टाइम की दाल रोटी पहली आवश्यकता व प्राथमिकता होती थी, वह दो दशक में ही नेपथ्य में चली गई लगती है। सर्वे से

1902 में स्वामी श्रद्धानंद जी ने शुरू किया था गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

मुंशी अमन सिंह की जमींदारी हरिद्वार से सटे पहाड़ियों में स्थित कांगड़ी गांव में थी। कांगडी स्थापना के समय बिजनौर जनपद का हिस्सा था। ऐसी ही जगह पहाड़ियों में महात्मा पंजाब के आर्य सन्यासी मुंशीराम का गुरुकुल बनाने का सपना और संकल्प था। उनके सपने और संकल्प को पूरा करने का काम बिजनौर के मुंशी अमर सिंह अपनी कांगडी गांव की पूरी जमींदारी दान करने पूरा किया। 19वीं शताब्दी में भारत में दो प्रकार की शिक्षा पद्धतियाँ प्रचलित थीं। पहली पद्धति ब्रिटिश सरकार द्वारा अपने शासन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित की गई सरकारी स्कूलों और विश्वविद्यालयों की प्रणाली थी और दूसरी संस्कृत, व्याकरण, दर्शन आदि भारतीय वाङ्मय की विभिन्न विद्याओं को प्राचीन परंपरागत विधि से अध्ययन करने की पाठशाला पद्धति।

अशोक मधुप

यूपी के बिजनौर में चौधरी अमन सिंह की जमीन पर बना गुरूकुल विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय देश का जाना- माना विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना 04 मार्च 1902 को स्वामी श्रद्धानंद जी ने की थी। आज इसमें कई हजार छात्र वैदिक और प्राचीन विद्याओं के साथ आधुनिक शिक्षा भी ग्रहण करते हैं। गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय ज्वालापुर का केम्पस हरिद्वार से चार किलोमीटर दूर दक्षिण में है। इसके तीन संभाग है। मुख्य कैम्पस हरिद्वार(केवल पुरुषों के लिए है),2. कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार/ केवल कन्याओं के लिए है, 3. कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून- केवल कन्याओं के लिए, 4 अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी संकाय (बहारदराबाद, हरिद्वार) - केवल लड़कों के लिए है। आज इसमें हजारों छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं। इसका अपना बहुत बड़ा संकाय है, किंतु इसके अध्ययन करने वाले यह नहीं जानते कि इसकी स्थापना के लिए बिजनौर के रहने वाले चौधरी अमन सिंह ने अपना 1200 बीघा जमीन का कागड़ी गांव और अपने पास एकत्र सम्पूर्ण राशि ?11000 इसकी स्थापना के समय इस विद्यालय को दान की थी।

मुंशी अमन सिंह की जमींदारी हरिद्वार से सटे पहाड़ियों में स्थित कांगड़ी गांव में थी। कांगडी स्थापना के समय बिजनौर जनपद का हिस्सा था। ऐसी ही जगह पहाड़ियों में महात्मा पंजाब के आर्य सन्यासी मुंशीराम का गुरुकुल बनाने का सपना और संकल्प था। उनके सपने और संकल्प को पूरा करने का काम बिजनौर के मुंशी अमर सिंह अपनी कांगडी गांव की पूरी जमींदारी दान करने पूरा किया।

19वीं शताब्दी में भारत में दो प्रकार की शिक्षा पद्धतियाँ प्रचलित थीं। पहली पद्धति ब्रिटिश सरकार द्वारा अपने शासन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित की गई सरकारी स्कूलों और विश्वविद्यालयों की प्रणाली थी और दूसरी संस्कृत, व्याकरण, दर्शन आदि भारतीय वाङ्मय की विभिन्न विद्याओं को प्राचीन परंपरागत विधि से अध्ययन करने की पाठशाला पद्धति। अतः सरकारी शिक्षा पद्धति में भारतीय वाङ्मय की घोर उपेक्षा करते हुए अंग्रेजी तथा पाश्चात्य साहित्य और ज्ञान विज्ञान के अध्ययन पर बल दिया गया। इस शिक्षा पद्धति का प्रधान उद्देश्य मेकाले के शब्दों में भारतीयों का एक ऐसा समूह पैदा करना था, जो रंग तथा रक्त की दृष्टि से तो भारतीय हो, परंतु रुचि, मति और अचार-विचार की दृष्टि से अंग्रेज हो। इसलिए यह शिक्षापद्धति भारत के राष्ट्रीय और धार्मिक आदर्शों के प्रतिकूल थी। दूसरी शिक्षा प्रणाली, पंडितमंडली में प्रचलित पाठशाला पद्धति थी। इसमें यद्यपि भारतीय वाङ्मय का अध्ययन कराया जाता था, तथापि उसमें नवीन तथा वर्तमान समय के लिए आवश्यक ज्ञान विज्ञान की घोर उपेक्षा थी। उस समय देश की बड़ी आवश्यकता पौरस्त्य एवं पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान का समन्वयय करते हुए दोनों शिक्षा पद्धतियों के उत्कृष्ट तत्वों के सामंजस्य द्वारा एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना था। इस महत्वपूर्ण कार्य का संपन्न करने में गुरुकुल काँगड़ी ने बड़ा सहयोग दिया। गुरुकुल के संस्थापक महात्मा मुंशीराम पिछली शताब्दी के भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण में असाधारण महत्व रखने वाले आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद (1824-1883 ई.) के सुप्रसिद्ध ग्रंथ %सत्यार्थ प्रकाश में प्रतिपादित शिक्षा संबंधी विचारों से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने 1897 में अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक द्वारा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया। 30 अक्टूबर 1898 को उन्होंने इसकी विस्तृत योजना रखी। नवंबर, 1898 ई. में पंजाब के आर्य समाजों के केंद्रीय संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया। महात्मा मुंशीराम ने यह प्रतिज्ञा की कि वे इस कार्य के लिए, जब तक 30,000 रुपया एकत्र नहीं कर लेंगे, तब तक अपने घर में पैर नहीं रखेंगे। तत्कालीन परिस्थितियों में इस दुस्साध्य कार्य को अपने अनवरत उद्योग और अविचल निष्ठा से उन्होंने आठ मास में पूरा कर लिया। 16 मई 1900 को पंजाब के गुजराँवाला स्थान पर एक वैदिक पाठशाला के साथ गुरुकुल की स्थापना कर दी गई। किन्तु महात्मा मुंशीराम को यह स्थान उपयुक्त प्रतीत नहीं हुआ। वे शुक्ल यजुर्वेद के एक मंत्र (26.15) उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत के अनुसार नदी और पर्वत के निकट कोई स्थान चाहते थे। इसी समय बिजनौर के रहने वाले नजीबाबाद में बसे धर्मनिष्ठ रईस मुंशी अमनसिंह जी के मन में शिक्षा के लिए अपनी 1200 बीघे की जमींदारी दान करने की इच्छा हुई । उन्होंने इस कार्य के लिए महात्मा मुंशीराम जी संपर्क किया और 1,200 बीघे का अपना कांगड़ी ग्राम दान दिया। हिमालय की उपत्यका में गंगा के तट पर सघन रमणीक वनों से घिरी कांगड़ी की भूमि गुरुकुल के लिए आदर्श थी। अत- यहाँ घने जंगल साफ कर कुछ छप्पर बनाए गए और होली के दिन सोमवार, चार मार्च 1902 को गुरुकुल गुजराँवाला से कांगड़ी लाया गया। गुरुकुल का आरम्भ 34 विद्यार्थियों के साथ कुछ फूस की झोपड़ियों में किया गया। पंजाब की आर्य जनता के उदार दान और सहयोग से इसका विकास तीव्र गति से होने लगा। 1907 ई. में इसका महाविद्यालय विभाग आरंभ हुआ। 1912 ई. में गुरुकुल कांगड़ी से शिक्षा समाप्त कर निकलने वाले स्नातकों का पहला दीक्षान्त समारोह हुआ। सन 1916 में गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी की स्थापना हुई। आरम्भ से ही सरकार के प्रभाव से सर्वथा स्वतंत्र होने के कारण ब्रिटिश सरकार गुरुकुल कांगड़ी को चिरकाल तक राजद्रोही संस्था समझती रही। 1917 ई. में वायसराय लार्ड चेम्ज़फ़ोर्ड के गुरुकुल आगमन के बाद इस संदेह का निवारण हुआ। 1921 ई. में आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसका विस्तार करने के लिए वेद, आयुर्वेद, कृषि और साधारण (आर्ट?स) महाविद्यालय बनाने का निश्चय किया। 1923 ई. में महाविद्यालय की शिक्षा और परीक्षा विषयक व्यवस्था के लिए एक शिक्षापटल बनाया गया।

प्रारम्भ से ही गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती थी। विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन आदि विषय भी हिन्दी में ही पढ़ाए जाते हैं। जब सन 1907 में महाविद्यालय विभाग खुला तो उसमें भी हिन्दी को ही माध्यम रखा गया। उस समय हिन्दी में उच्च शिक्षा देना एक असम्भव बात समझी जाती थी। क्योंकि उस समय उच्च शिक्षा की किताबें हिंदी में नहीं थीं। गुरुकुल ने इसे कार्यरूप में परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विद्वानों की पुस्तकें हिन्दी में नहीं थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहले-पहल इस क्षेत्र में काम किया और गुरुकुल के अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रकाशित हुए। प्रो. महेशचरण सिंह की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो. साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो. रामशरणदास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो. सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र, प्रो. प्राणनाथ का अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र और राजनीतिशास्त्र, प्रो. बालकृष्ण का अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र और प्रो. सुधाकर का मनोविज्ञान हिन्दी में अपने-अपने विषय के पहले ग्रन्थ हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक ग्रन्थों की रचना ही गुरुकुल द्वारा प्रारम्भ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित हुए। प्रो. रामदेव ने भारतीय इतिहास के संबंध में मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध भारतवर्ष का इतिहास प्रकाशित किया।

लोकसभा चुनाव 2024: झारखंड के सिंहभूम लोकसभा सीट पर कभी एक पार्टी का वर्चस्व नहीं रहा

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी ने ही जीत दर्ज की थी लेकिन इस बार झारखंड पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदल दिया था। इस बार यहां से हरिचरण सोय ने इस सीट पर जीत दर्ज की। उन्हें कुल 29.6 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाखों बोथरा को 26.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से निर्दलीय प्रत्याशी के बिरजू ने जीत दर्ज की थी, जिन्हें कुल 21.8 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय जनसंघ को 19.3, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.7 और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। 1971 की हुए लोकसभा चुनाव में ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी। उन्हें कुल 38.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। यहां से मोरन सिंह पूर्ति ने जीत दर्ज की थी जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर देवेंद्र नाथ चैंपियन को 24.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1977 की लोकसभा चुनाव में यहां से ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि, इस बार ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव किया था। बेगम समुराई को 70 फीसदी मत प्राप्त हुए थे जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़े मोहन सिंह पूर्ति को 13.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1980 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम से जनता पार्टी की जीत हुई। यहां से बेगम समुराई ने 31.20 मत प्राप्त कर सीट पर जीत दर्ज की। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आई के खाते में 21.4 फीसदी मत मिले थे।

लोकसभा चुनाव का बिगुल कभी भी बज सकता है। इसकी हलचल भी तेज हो गई है। राज्य में प्रमुख राजनीतिक दल अधिकाधिक सीटों पर जीत का दावा भी ठोक रहे हैं लेकिन कोल्हान प्रमंडल के सिंहभूम लोकसभा सीट का गणित कुछ अलग ही है। यह सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। यह संसदीय क्षेत्र कभी झारखंड पार्टी का गढ़ हुआ करता था लेकिन अब यहां के मतदाता किसी एक पार्टी या उम्मीदवार पर लगातार भरोसा नहीं दिखाते हैं। इसलिए यह कहा नहीं जा सकता कि यहां किसका पलड़ा भारी है। सिंहभूम लोकसभा क्षेत्र में सरायकेला, चाईबासा, मझगांव, जगन्नाथपुर, मनोहरपुर और चक्रधरपुर विधानसभा सीटें शामिल हैं। सिंहभूम लोकसभा सीट पर पहली बार 1957 में लोकसभा चुनाव हुए थे। 1952 में देश में पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम लोकसभा सीट शामिल नहीं थी। 1957 में हुए चुनाव में यहां से झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। शंभू चरण ने 51.80 मत प्राप्त किया था जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर सीढ़ियां हेंब्रम ने 15.7 फीसदी मत प्राप्त किया था।

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी ने ही जीत दर्ज की थी लेकिन इस बार झारखंड पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदल दिया था। इस बार यहां से हरिचरण सोय ने इस सीट पर जीत दर्ज की। उन्हें कुल 29.6 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाखों बोथरा को 26.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से निर्दलीय प्रत्याशी के बिरजू ने जीत दर्ज की थी, जिन्हें कुल 21.8 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय जनसंघ को 19.3, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.7 और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1971 की हुए लोकसभा चुनाव में ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी। उन्हें कुल 38.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। यहां से मोरन सिंह पूर्ति ने जीत दर्ज की थी जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर देवेंद्र नाथ चैंपियन को 24.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1977 की लोकसभा चुनाव में यहां से ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि, इस बार ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव किया था। बेगम समुराई को 70 फीसदी मत प्राप्त हुए थे जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़े मोहन सिंह पूर्ति को 13.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। 1980 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम से जनता पार्टी की जीत हुई। यहां से बेगम समुराई ने 31.20 मत प्राप्त कर सीट पर जीत दर्ज की। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आई के खाते में 21.4 फीसदी मत मिले थे।

कांग्रेस ने 1984 में पहली बार जीत दर्ज की: 1984 में पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सीट पर जीत दर्ज की। जब उन्होंने बेगम समुराई को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से टिकट दिया। इस बार कांग्रेस को 42.6 फीसदी मत यहां प्राप्त हुए जबकि निर्दलीय के तौर पर देवेंद्र मांझी को 17.7 फीसदी, झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) को 8.6 फीसदी और भाजपा को 8.3 फीसदी मत प्राप्त हुए। 1989 की लोकसभा चुनाव में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ही यहां से जीत दर्ज की। बेगम समुराई को 29.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि जनता दल को 22.4 झामुमो को 22 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

झामुमो ने 1991 में दर्ज की जीत: 1991 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट पर झामुमो ने जीत दर्ज की थी। इस सीट से कृष्णा मरांडी ने 35.30 प्रतिशत मत हासिल कर इस सीट पर कब्जा किया था जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोए कोई 21.8 फीसदी और भाजपा को 20 फीसदी मत मिले थे।

भाजपा 1996 में पहली दर्ज की जीत: 1996 की हुए लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से भाजपा ने जीत दर्ज की। इस सीट पर चंद्रसेन सिंकू ने जीत दर्ज किया। इन्हें कुल 20.1 फीसदी वोट मिले थे जबकि झामुमो को 12.5 और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 11.2 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

कांग्रेस ने 1998 में फिर किया कब्जा: 1998 की लोकसभा चुनाव में एक बार फिर सिंहभूम सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोय को 35.4 फीसदी वोट मिले जबकि भाजपा को 33.4 फीसदी वोट मिले। झामुमो 23.7 फीसदी मत हासिल किए। 1999 की हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा ही इस सीट पर जीती। हालांकि, इस बार भाजपा ने अपने उम्मीदवार को बदला था और लक्ष्मण गिलुआ को इस सीट से मैदान में उतारा था। भाजपा को 1999 के चुनाव में कुल 45.9 फीसदी वोट मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 30.9 और झामुमो को 14.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

बिहार से अलग होने के बाद पहली बार 2004 में लोकसभा के चुनाव हुए। पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम की सीट फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खाते में चली गई। यहां से बेगम समुराई ने जीत दर्ज की। यहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 42.6 फीसदी वोट मिले। जबकि भाजपा के लक्ष्मण गिलुओ को 31.20 मत ही प्राप्त हुए। जबकि आजसू पार्टी को 2004 के लोकसभा चुनाव में कुल 14 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

निर्दलीय उम्मीदवार मधु कोड़ा 2009 में जीते: 2009 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट से निर्दलीय उम्मीदवार मधु कोड़ा विजयी हुए जबकि भाजपा ने अपने उम्मीदवार को बदलकर बरकुरवार गागराई को मैदान में उतारा। भाजपा को कुल 28.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.5 फीसदी वोट मिले थे।

लक्ष्मण गिलुआ ने 2014 में दर्ज की जीत: 2014 में मोदी के लहर का असर सिंहभूम सीट पर भी दिखा और एक बार फिर भाजपा ने लक्ष्मण गिलुआ ने जीत हासिल की। इस बार भाजपा ने यहां से 38.8 फीसदी मत प्राप्त किया जबकि जय भारत समता पार्टी की गीता कोड़ा ने 27.1 प्रतिशत मत प्राप्त किया था। हालांकि, इससे पहले निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर गीता कोड़ा के पति मधु कोड़ा ने 2009 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर जीत दर्ज किया था।

सांसद गीता कोड़ा के लिए जीत की राह आसान नहीं

2019 के लोकसभा चुनाव में इस सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गीता कोड़ा ने जीत दर्ज की। गीता कोड़ा को कुल 49.8 फीसदी वोट मिले जबकि भाजपा को 40.9 फीसदी मत प्राप्त हुए। हालांकि, अब गीता कोड़ा 26 फरवरी को भाजपा में शामिल हो गई हैं। सांसद गीता कोड़ा के भाजपा में जाने के बाद कोल्हान प्रमंडल में भाजपा को एक मजबूत नेता तो मिल गया है, लेकिन गीता कोड़ा को यदि भाजपा 2024 में लोकसभा चुनाव में सिंहभूम से उम्मीदवार बनाती है, तो यह जीत दर्ज करा पाएंगी यह कह पाना वर्तमान स्थिति को देखते हुए मुश्किल कहा जा सकता है। क्योंकि, सीएम चम्पाई सोरेन भी कोल्हान प्रमंडल के सरायकेला विधानसभा से 2005 से चुनाव जीतते आ रहे हैं। ऐसे में चम्पाई सोरेन का प्रभाव इस पूरे क्षेत्र में है। हालांकि, पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा और उनकी पत्नी गीता कोड़ा का भी कोल्हान प्रमंडल के कई विधायकों से अच्छे संबंध है। अब देखना यह है कि जिस राह पर गीता कोड़ा चली हैं वह इतनी आसन नहीं है।

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान के चक्र को (इकालाजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

जैविक खेती

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान का चक्र श्ष्श्द्यश्द्दद्बष्ड्डद्य ह्य4ह्यह्लद्गद्व निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रांथों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे-धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह-तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुध्द रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरको एवं कीटनाशक का उपयोग करना पड़ता है जिससे सीमान्य व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्यधिक लागत लग रही है और जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे है। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षो से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिध्दान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, जिसे प्रदेश के कृषि विभाग ने इस विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए, बढ़ावा दिया जिसे हम ÷जैविक खेती÷ के नाम से जानते है। भारत सरकार भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रचार-प्रसार कर रही है।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद एवं दवाईयाँ

जैविक खादें

नाडेप
बायोगैस स्लरी
वर्मी कम्पोस्ट
हरी खाद
जैव उर्वरक (कल्चर)
गोबर की खाद
नाडेप फास्फो कम्पोस्ट
पिट कम्पोस्ट (इंदौर विधि)
मुर्गी का खाद
भभूत अमतपानी
अमृत संजीवनी
मटका खाद
गौ-मूत्र
नीम- पत्ताी का घोल/निबोली/खली
मट्ठा
मिर्च/लहसु
लकड़ी की राख
नीम व करंज खली

जैविक खेती से होने वाले लाभ

कृषकों की दृष्टि से लाभ –

भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृध्दि हो जाती है।
सिंचाई अंतराल में वृध्दि होती है।
रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है।
फसलों की उत्पादकता में वृध्दि।

जैविक खेती, की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है अर्थात जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णत- सहायक है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक लाभदायक है। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है तथा अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, शुध्द वातावरण रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पध्दतियाँ को अपनाना होगा जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

मिट्टी की दृष्टि से

जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं।
भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से

भूमि के जल स्तर में वृध्दि होती हैं।
मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण मे कमी आती है।
कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है।

फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृध्दि

अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ताा का खरा उतरना।

केंचुआ खाद से मृदा सुधार

हम सभी अच्छी तरह जानते हैं कि भूमि में पाये जाने वाले केंचुए मनुष्य के लिए बहुपयोगी होते हैं। मनुष्य के लिए इनका महत्व सर्वप्रथम सन् 1881 में विश्व विख्यात जीव वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने अपने 40 वर्षो के अध्ययन के बाद बताया। इसके बाद हुए अध्ययनों से केंचुओं की उपयोगिता उससे भी अधिक साबित हो चुकी है जितनी कि डार्विन ने कभी कल्पना की थी।

केंचुआ खाद से मृदा सुधार-जानें केचुओं से सम्बंधित कुछ तथ्य

भूमि में पाये जाने वाले केंचुए खेत में पढ़े हुए पेड़-पौधों के अवशेष एवं कार्बनिक पदार्थों को खा कर छोटी-छोटी गोलियों के रूप में परिवर्तित कर देते हैं जो पौधों के लिए देशी खाद का काम करती है। इसके अलावा केंचुए खेत में ट्रैक्टर से भी अच्छी जुताई कर देते हैं जो पौधों को बिना नुकसान पहुँचाए अन्य विधियों से सम्भव नहीं हो पाती। केंचुओं द्वारा भूमि की उर्वरता उत्पादकता और भूमि के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों को लम्बे समय तक अनुकूल बनाये रखने में मदद मिलती है।

केंचुओं की कुछ प्रजातियां भोजन के रूप में प्रायः अपघटनशील व्यर्थ कार्बनिक पदार्थों का ही उपयोग करती हैं। भोजन के रूप में ग्रहण की गई इन कार्बनिक पदार्थों की कुल मात्रा का 5 से 10 प्रतिशत भाग शरीर की कोशिकाओं द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है और शेष मल के रूप में विसर्जित हो जाता है जिसे वर्मीकास्ट कहते हैं। नियंत्रित परिस्थिति में केंचुओं को व्यर्थ कार्बनिक पदार्थ खिलाकर पैदा किए गये वर्मीकास्ट और केचुओं के मृत अवशेष, अण्डे, कोकून, सूक्ष्मजीव आदि के मिश्रण को केंचुआ खाद कहते हैं। नियंत्रित दशा में केंचुओं द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन की विधि को वर्मीकम्पोस्टिंग और केंचुआ पालन की विधि को वर्मीकल्चर कहते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट का रासायनिक संगठन मुख्य रूप से उपयोग में लाये गये अपशिष्ट पदार्थों के प्रकार, उनके स्रोत व निर्माण के तरीकों पर निर्भर करता है। सामान्य तौर पर इसमें पौधों के लिए आवश्यक लगभग सभी पोषक तत्व सन्तुलित मात्रा तथा सुलभ अवस्था में मौजूद होते हैं। वर्मीकम्पोस्ट में गोबर के खाद की अपेक्षा 5 गुना नाइट्रोजन, 8 गुना फास्फोरस, 11 गुना पोटाश और 3 गुना मैग्निशियम तथा अनेक सूक्ष्म तत्व सन्तुलित मात्रा मे पाये जाते हैं।

कृषि में केंचुओं का योगदान

यद्यपि केंचुआ लंबे समय से किसान का अभिन्न मित्र हलवाहा के रूप में जाना जाता रहा है। सामान्यतः केंचुए की महत्ता भूमि को खाकर उलट-पुलट कर देने के रूप में जानी जाती है जिससे कृषि भूमि की उर्वरता बनी रहती है। यह छोटे एवं मझोले किसानों तथा भारतीय कृषि के योगदान में अहम् भूमिका अदा करता है। केंचुआ कृषि योग्य भूमि में प्रतिवर्ष 1 से 5 मि.मी. मोटी सतह का निर्माण करते हैं। इसके अतिरिक्त केंचुआ भूमि में निम्न ढंग से उपयोगी एवं लाभकारी है।

भूमि की भौतिक गुणवत्ता में सुधार

केंचुए भूमि में उपलब्ध फसल अवशेषों को भूमि के अंदर तक ले जाते हैं और सुरंग में इन अवशेषों को खाकर खाद के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा अपनी विष्ठा रात के समय में भू सतह पर छोड़ देते हैं। जिससे मिट्टी की वायु संचार क्षमता बढ़ जाती है। एक विशेषज्ञ के अनुसार केंचुए 2 से 250 टन मिट्टी प्रतिवर्ष उलट-पलट कर देते हैं जिसके फलस्वरूप भूमि की 1 से 5 मि.मी. सतह प्रतिवर्ष बढ़ जाती है। केंचुओं द्वारा निरंतर जुताई व उलट-पलट के कारण स्थायी मिट्टी कणों का निर्माण होता हैजिससे मृदा संरचना में सुधार एवं वायु संचार बेहतर होता है जो भूमि में जैविक क्रियाशीलता, ह्यूमस निर्माण तथा नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए आवश्यक है।

संरचना सुधार के फलस्वरूप भूमि की जलधारण क्षमता में वृद्धि होती है तथा रिसाव एवं आपूर्ति क्षमता बढ़ने के कारण भूमि जल स्तर में सुधार एवं खेत का स्वतः जल निकास होता रहता है।

मृदा ताप संचरण व सूक्ष्म पर्यावरण के बने रहने के कारण फसल के लिए मृदा जलवायु अनुकूल बनी रहती है।

भूमि की रासायनिक गुणवत्ता एवं उर्वरता में सुधार

पौधों को अपनी बढ़वार के लिए पोषक तत्व भूमि से प्राप्त होते हैं तथा पोषक तत्व उपलब्ध कराने की भूमि की क्षमता को भूमि उर्वरता कहते हैं। इन पोषक तत्वों का मूल स्रोत मृदा पैतृक पदार्थ फसल अवशेष एवं सूक्ष्म जीव आदि होते हैं। जिनकी सम्मिलित प्रक्रिया के फलस्वरूप पोषक तत्व पौधों को प्राप्त होते हैं। सभी जैविक अवशेष पहले सूक्ष्मजीवों द्वारा अपघटित किये जाते हैं। अर्द्धअपघटित अवशेष केंचुओं द्वारा वर्मीकास्ट में परिवर्तित होते हैं। सूक्ष्म जीवों तथा केंचुआ सम्मिलित अपघटन से जैविक पदार्थ उत्तम खाद में बदल जाते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं।

भूमि की जैविक गुणवत्ता में सुधार भूमि में उपस्थित कार्बनिक पदार्थ, भूमि में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीव तथा केंचुओं की संख्या एवं मात्रा भूमि की उर्वरता के सूचक हैं। इनकी संख्या, विविधता एवं सक्रियता के आधार पर भूमि के जैविक गुण को मापा जा सकता है। भूमि में मौजूद सूक्ष्म जीवों की जटिल श्रृंखला एवं फसल अवशेषों के विच्छेदन के साथ केंचुआ की क्रियाशीलता भूमि उर्वरता का प्रमुख अंग है। भूमि में उपलब्ध फसल अवशेष इन दोनों की सहायता से विच्छेदित होकर कार्बन को उर्जा स्त्रोत के रूप में प्रदान कर निरंतर पोषक तत्वों की आपूर्ति बनाये रखने के साथ-साथ भूमि में एन्जाइम, विटामिन्स, एमीनो एसिड एवं ह्यूमस का निर्माण कर भूमि की उर्वरा क्षमता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

भूमि की रासायनिक गुणवत्ता एवं उर्वरता में सुधार

पौधों को अपनी बढ़वार के लिए पोषक तत्व भूमि से प्राप्त होते हैं तथा पोषक तत्व उपलब्ध कराने की भूमि की क्षमता को भूमि उर्वरता कहते हैं। इन पोषक तत्वों का मूल स्रोत मृदा पैतृक पदार्थ फसल अवशेष एवं सूक्ष्म जीव आदि होते हैं। जिनकी सम्मिलित प्रक्रिया के फलस्वरूप पोषक तत्व पौधों को प्राप्त होते हैं। सभी जैविक अवशेष पहले सूक्ष्मजीवों द्वारा अपघटित किये जाते हैं। अर्द्धअपघटित अवशेष केंचुओं द्वारा वर्मीकास्ट में परिवर्तित होते हैं। सूक्ष्म जीवों तथा केंचुआ सम्मिलित अपघटन से जैविक पदार्थ उत्तम खाद में बदल जाते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं।

भूमि की जैविक गुणवत्ता में सुधार भूमि में उपस्थित कार्बनिक पदार्थ, भूमि में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीव तथा केंचुओं की संख्या एवं मात्रा भूमि की उर्वरता के सूचक हैं। इनकी संख्या, विविधता एवं सक्रियता के आधार पर भूमि के जैविक गुण को मापा जा सकता है। भूमि में मौजूद सूक्ष्म जीवों की जटिल श्रृंखला एवं फसल अवशेषों के विच्छेदन के साथ केंचुआ की क्रियाशीलता भूमि उर्वरता का प्रमुख अंग है। भूमि में उपलब्ध फसल अवशेष इन दोनों की सहायता से विच्छेदित होकर कार्बन को उर्जा स्त्रोत के रूप में प्रदान कर निरंतर पोषक तत्वों की आपूर्ति बनाये रखने के साथ-साथ भूमि में एन्जाइम, विटामिन्स, एमीनो एसिड एवं ह्यूमस का निर्माण कर भूमि की उर्वरा क्षमता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

केंचुओं का जीवन चक्र व जीवन से संबंधित जानकारियाँ

केंचुए द्विलिंगी होते हैं अर्थात एक ही शरीर में नर तथा मादा जननांग पाये जाते हैं।

2. द्विलिंगी होने के बावजूद केंचुओं में निषेचन दो केंचुओं के मिलन से ही सम्भव हो पाता है क्योंकि इनके शरीर में नर तथा मादा जननांग दूर-दूर स्थित होते हैं और नर शुक्राणु व मादा शुक्राणुओं के परिपक्व होने का समय भी अलग-अलग होता है। सम्भोग प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद केंचुए कोकून बनाते हैं। कोकून का निर्माण लगभग 6 घण्टों में पूर्ण हो जाता है।

3. केंचुए लगभग 30 से 45 दिन में वयस्क हो जाते हैं और प्रजनन करने लगते हैं।

4. एक केंचुआ 17 से 25 कोकून बनाता है और एक कोकून से औसतन 3 केंचुओं का जन्म होता है।

5. केंचुओं में कोकून बनाने की क्षमता अधिकांशतः 6 माह तक ही होती है। इसके बाद इनमें कोकून बनाने की क्षमता घट जाती है।

6. केंचुओं में देखने तथा सुनने के लिए कोई भी अंग नहीं होते किन्तु ये ध्वनि एवं प्रकाश के प्रति संवेदनशील होते हैं और इनका शीघ्रता से एहसास कर लेते हैं।

7. शरीर पर श्लैष्मा की अत्यन्त पतली व लचीली परत मौजूद होती है जो इनके शरीर के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती है।

8. शरीर के दोनों सिरे नुकीले होते हैं जो भूमि में सुरंग बनाने में सहायक होते हैं।

9. केंचुओं में शरीर के दोनों सिरों (आगे तथा पीछे) की ओर चलने की क्षमता होती है।

10. मिट्टी या कचरे में रहकर दिन में औसतन 20 बार ऊपर से नीचे एवं नीचे से ऊपर आते हैं।

11. केंचुओं में मैथुन प्रक्रिया लगभग एक घण्टे तक चलती हैं।

12. केंचुआ प्रतिदिन अपने वजन का लगभग 5 गुना कचरा खाता है। लगभग एक किलो केंचुए (1000 संख्या) 4 से 5 किग्रा0 कचरा प्रतिदिन खा जाते हैं।

13. रहन-सहन के समय संख्या अधिक हो जाने एवं जगह की कमी होने पर इनमें प्रजनन दर घट जाती है। इस विशेषता के कारण केंचुआ खाद निर्माण के दौरान अतिरिक्त केंचुओं को दूसरी जगह स्थानान्तरित कर देना अत्यन्त आवश्यक है।

14. केंचुए सूखी मिट्टी या सूखे व ताजे कचरे को खाना पसन्द नहीं करते अतः केंचुआ खाद निर्माण के दौरान कचरे में नमीं की मात्रा 30 से 40 प्रतिशत और कचरे का अर्द्ध-सड़ा होना अत्यन्त आवश्यक है।

15. केंचुए के शरीर में 85 प्रतिशत पानी होता है तथा यह शरीर के द्वारा ही श्वसन एवं उत्सर्जन का पूरा कार्य करता है।

16. कार्बनिक पदार्थ खाने वाले केंचुओं का रंग मांसल होता है जबकि मिट्टी खाने वाले केंचुए रंगहीन होते हैं।

17. केंचुओं में वायवीय श्वसन होता है जिसके लिए इनके शरीर में कोई विशेष अंग नहीं होते। श्वसन क्रिया (गैसों का आदान प्रदान) देह भित्ति की पतली त्वचा से होती है।

18. एक केंचुए से एक वर्ष में अनुकूल परिस्थितियों में 5000 से 7000 तक केंचुए प्रजनित होते हैं।

19. केंचुए का भूरा रंग एक विशेष पिगमेंट पोरफाइरिन के कारण होता है।

20. शरीर की त्वचा सूखने पर केंचुआ घुटन महसूस करता है और श्वसन (गैसों का आदान-प्रदान) न होने से मर जाता है।

21. शरीर की ऊतकों में 50 से 75 प्रतिशत प्रोटीन, 6 से 10 प्रतिशत वसा,कैल्शियम, फास्फोरस व अन्य खनिज लवण पाये जाते हैं अतः इन्हें प्रोटीन एवं ऊर्जा का अच्छा स्रोत माना गया है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ भाजपा का प्रखंड मुख्यालयों में हल्ला बोल आज

पूसू प्रतिनिधि,जमशेदपुर। भाजपा झारखंड प्रदेश ने झारखंड की झामुमो-कांग्रेस और राजद गठबंधन सरकार में व्यापत भ्रष्टाचार और जेएसएससी नियुक्त घोटाले को लेकर 4 मार्च को पूरे राज्यभर के प्रखंड कार्यालय पर प्रदर्शन की घोषणा की है। प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार सोमवार को होने वाले विरोध-प्रदर्शन की सफलता को लेकर पिछले दिनों भाजपा जमशेदपुर महानगर की विधानसभा वार बैठक सम्पन्न हुई। भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में कांके के पूर्व विधायक एवं जमशेदपुर महानगर के प्रभारी डॉ जीतू चरण राम, भाजपा जिला पदाधिकारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष एवं जमशेदपुर महानगर अंतर्गत चारों विधानसभा के मंडल अध्यक्षगण शामिल हुए।

इस दौरान जमशेदपुर महानगर अंतर्गत चारों प्रखंड मुख्यालयों पर विरोध-प्रदर्शन की सफलता के विभिन्न पहलुओं को लेकर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया। इस सबंध में जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा ने बताया कि सोमवार को भाजपा कार्यकर्ता जमशेदपुर अंतर्गत करनडीह प्रखंड कार्यालय, पोटका प्रखंड कार्यालय, बोड़ाम प्रखंड कार्यालय एवं पटमदा प्रखंड कार्यालय पर सुबह 10:30 बजे से पूरे राज्य में सत्ता संरक्षित भ्रष्टाचार, जेएसएससी नियुक्ति घोटाला, ध्वस्त विधि व्यवस्था, वादाखिलाफी और खनिज संपदाओं की खुली लूट को उजागर करते हुए जोरदार विरोध-प्रदर्शन करेंगे। सुधांशु ओझा ने बताया कि विरोध-प्रदर्शन में पटमदा एवं कमलपुर मंडल के कार्यकर्ता पटमदा प्रखंड कार्यालय, बोड़ाम मंडल के कार्यकर्ता बोड़ाम प्रखंड कार्यालय एवं पोटका, कौवाली और आसनबनी मंडल के कार्यकर्ता पोटका प्रखंड कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन में शामिल होंगे। इसके साथ ही, सीतारामडेरा, गोलमुरी, टेल्को, बारीडीह, बिरसानगर, बर्मामाइंस, साकची पूर्वी, साकची पश्चिम, कदमा, सोनारी, बिस्टुपुर, मानगो, उलीडीह, आजादनगर,जुगसलाई, गोविंदपुर, परसुडीह, घोड़ाबांधा, एम जी एम, सुंदरनगर, बागबेड़ा एवं घाघीडीह मंडल के कार्यकर्ता करनडीह स्थित जमशेदपुर प्रखंड कार्यालय पर विरोध-प्रदर्शन करेंगे। जिलाध्यक्ष सुधांशु ओझा ने जमशेदपुर महानगर के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं से प्रखंड कार्यालय पर होने वाले विरोध-प्रदर्शन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर सभी मोर्चों पर विफल साबित हुई स्वार्थी झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन सरकार को उखाड़ फेंकने की अपील की है।

आजसू पार्टी का तेजी से बढ़ रहा कद, बिरसानगर में सैकड़ों ने थामा दामन

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। बिरसानगर विश्वकर्मा मैदान में आजसू पार्टी का मंडल गठन सह मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित की गई। यहां सैकडों युवाओं ने आजसू की सदस्यता ग्रहण की। जिसमें काफी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं। झामुमो और कांग्रेस छोड़ काफी संख्या में युवाओं ने आजसू का दामन थामा। पार्टी के जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह, प्रवक्ता अप्पू तिवारी, केंद्रीय सचिव चंद्रगुप्त सिंह, संगीता कुमारी, जिला उपाध्यक्ष चंद्रेश्वर पांडेय, जिला सोशल मीडिया प्रभारी शैलेन्द्र सिन्हा आदि पार्टी में नये आगंतुकों को पार्टी का पट्टा भेंटकर स्वागत किये तथा सबों को शुभकामनाएं दिये। बाद में बिरसानगर प्रखंड की नई कमेटी की घोषणा की गई।

जिलाध्यक्ष ने आकाश सिन्हा का पीठ थपथपाया

हाल ही में आजसू में शामिल हुए आकाश सिंहा द्वारा लगातार भारी संख्या में युवाओं को पार्टी से जोड़ने की पहल की जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह ने सराहना की। उन्होंने कहा कि आकाश सिंहा का समाज के प्रति सेवा भाव काबिले तारीफ है। उन्होंने श्री सिन्हा को भविष्य का बड़ा नेता बताया।

कार्यक्रम का संचालन हेमंत पाठक ने किया जबकि अध्यक्षता आकाश सिंहा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रमोद चौबे ने दिया।

बिरसानगर मंड़ल की नई कमेटी

अध्यक्ष - धर्मा लोहार, सचिव - विकास सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष - विवेक सिंह, उपाध्यक्ष - सुप्रियो बनर्जी, श्याम बोईपाई, महेंद्र प्रमाणिक, अशोक मुखी, मिंटू मुखी, कोषाध्यक्ष राहुल गौंडर संगठन सचिव संजय मुखी, दीपक कुमार, सह कोषाध्यक्ष - लॉरेंस गोस्वामी, प्रवक्ता योगेश कुमार पांडेय, सह सचिव माधव गोराई,अजय गोराई, राजू गोराई, विशाल प्रमाणिक, मंडल कार्यसमिति सदस्य -भूषण मुखी, अभिषेक मिंज , उत्तम कुमार, रिक्की हेंब्रम, विभिन्न दलों को छोड़ कर निम्न हुए आजसू में शामिल।

आजसू पार्टी में ये हुए शामिल

प्रेम कुमार मिश्रा, चंदन कुमार पांडेय, आर्यन कुमार, राहुल कुमार मिश्रा, सागर सामंतो, अमनदीप सिंह, युवराज प्रसाद, पंकज गिल, शिवम कुमार बेरा, आयुष कुमार , रश्मि लोहार के नेतृत्व में बॉबी लोहार, पदमा कर्मकार, जिया कर्मकार, जया कर्मकार, शोभा कर्मकार, सारा कर्मकार, काव्या लोहार, कौशल्या कर्मकार,सुनीता लोहार, सीता लोहार, मधु लोहार, ,चंचला लोहार, कमला लोहार, पार्वती लोहार, मनीष कुमार पांडेय , सुमित कुमार, दीपक लोहार, आदित्य लोहार, विशाल पाल, रौशन लोहार, बुलेट लोहार, रोबिन लोहार, घनश्याम बारला, मधुसूदन बारला, रोहित लम्हे, अनिल लम्हे, डायमंड जानसन समेत अन्य लोगो ने आजसू की सदस्यता ग्रहण किये।

पार्ट-2 भी जल्द जेल जाएगा-कन्हैया सिंह

बिरसानगर में आयोजित मिलन समारोह को संबोधित करते हुए आजसू के पूर्वी सिंहभूम जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह ने कहा कि झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन अपने कार्यकाल में कहा करते थे मैं ये करूंगा , मैं वो करूंगा । पर उन्होंने जनता के लिए कुछ नहीं किया। हां अपने लिए बहुत कुछ कर लिया। नतीजा है कि अब वो जेल में है। उन्होंने कहा कि आजकल खूब प्रचार हो रहा है अबुआ आवास का। आज अबुआ आवास बबुआ आवास बन गया है। जो झामुमो का चापलूसी कर रहा है उसे आवास मिल रहा है वह भी एक नहीं दो - दो । बस यूं समझ लीजिए मेहनत का मेहताना दे रहे हैं विधायक। बोडाम और पटमदा से ऐसी सूचना मिली है। उन्होंने बालू के मामले में सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि झारखंड में सबसे ज्यादा बालू निकलता है । ट्रैक्टर में 2500 , हाइवा में 30 हजार रुपये में बालू बिक रहा है। यह जनता के साथ लूट नहीं तो और क्या है? झामुमो के शासन के साढ़े चार सालों में बालू का आजतक टेंडर नहीं हुआ। आज झामुमो के लोग बालू निकाल रहे हैं। आगे उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन आपने भाषणों में कहा करते हैं वर्तमान सरकार हेमंत बाबू की पार्टी - 2 है। मैं कहता हूं पार्ट वन जेल में है पार्ट टू भी जेल जाएगा। बस समय का इंतजार कीजिए। उन्होंने स्थानीय समस्याओं को लेकर जुस्को को एक ज्ञापन सौंपे जाने की बात कही। साथ ही कहा कि 86 बस्तियों के नाम पर सबों ने वोट लिया और राजनीति किया। मैं यह नहीं कहता हूं कि मैं मालिकाना हक दिला दूंगा लेकिन इसके लिए संघर्ष में कहीं पीछे नहीं रहूंगा। क्यों आंदोलन ही हमारी पार्टी की पहचान है। उन्होंने जुस्को से गरीब बस्तियों में फ्री बिजली , फ्री सार्वजनिक नल देने की बात दोहराई। कार्यक्रम को केंद्रीय सचिव चंद्रगुप्त सिंह ने भी संबोधित किया।

भाजपा ने संकल्प पत्र 2024 के लिए जनता से सुझाव लेने के लिए शुरु किया अभियान

➲ भाजपा तीसरी बार सरकार बनाने मोदी का गारंटी अभियान प्रारंभ

पूसू प्रतिनिधि, जगन्नाथपुर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) केंद्र में तीसरी बार सरकार बनाने में जुट गई है। इसी कड़ी में रविवार को जगन्नाथपुर सिंह मार्केट समीप इस कार्य में जगन्नाथपुर विधानसभा संयोजक धीरज सिंह की अध्यक्षता में 'विकसित भारत मोदी जी की गारंटी' अभियान शुरू की गई। इसमें जनता से संकल्प पत्र के लिए एक पेटी में सुझाव लिए गये।भाजपा के इस कार्यक्रम जगन्नाथपुर विधानसभा संयोजक धीरज सिंह ने 'विकसित भारत मोदी की गारंटी' कार्यक्रम में पत्रकारों को बताया कि अभियान के दौरान जनता से प्राप्त सुझावों को होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए पार्टी के संकल्प पत्र में शामिल किया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत जनता को मोदी सरकार की बीते 10 वर्षों की उपलब्धियों से अवगत कराया गया। साथ ही अपनी समस्याओं को मोदी जी को भेज सकते है। वही इस अभियान के संबंध में जगन्नाथपुर विधानसभा में पत्रकार वार्ताओं का आयोजन किया गया। लोगों से सुझाव लेने के लिए विभिन्न स्थानों, पार्टी की बैठकों, कार्यक्रमों में सुझाव पेटियां लगाई गयी। इसके अलावा 9090902024 पर मिस्ड कॉल करके अथवा नमो एप डाउनलोड करके भी लोग अपने सुझाव दे सकेंगे। यह कार्यक्रम 3 से 6 मार्च तक घर-घर जनसंपर्क अभियान आयोजित की जायेगी। उसके बाद सुझाव पत्रों को संकल्प पत्र के लिए भेजा जाएगा। इस मौके पर एसटी-एससी मोर्चा के जिला अध्यक्ष मंजीत कोड़ा, जिला कार्यसमिति सदस्य जितेंद्र गुप्ता, विस्तरक बासुदेव तिर्की,सुशिला नायक, सवी दी, मोहित सिंह मुंडा,पिंटु सिंह,दिपेंद्र सिंह, चंचल यादव,नितिया बारिक,संतोष पान,राजकुमार शर्मा, अमन निषाद,प्रदीप रजक सहित अन्य उपास्थित थे।

झारखंड आंदोलनकारियों को कई महीनों से नहीं मिल रहा सम्मान पेंशन-पुष्कर महतो

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक एवं प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने कहा कि सरकार होली से पूर्व सभी झारखंड आंदोलनकारियों की सम्मान पेंशन राशि का भुगतान एरियर के साथ जल्द करे। सम्मान राशि नहीं मिलने से आंदोलकारी हर्ष एवं उल्लास के पर्व से वंचित रह जाएंगे। उन्होंने कहा कि सम्मान पेंशन राशि के भुगतान में अभी भी काफई विसंगतियां हैं। सरकार उसे भी शीघ्रता शीघ्र दूर करे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 से ही झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान पेंशन राशि का भुगतान कई जिलों में लंबित है। जिसमें जामताड़ा, धनबाद जिले में आठ माह से पेंशन नहीं मिला है।

जबकि रांची, गिरिडीह, कोडरमा, हजारीबाग, पलामू, लातेहार, धनबाद, दुमका, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, खूंटी, रामगढ़ सहित राज्य के अन्य जिलों में भी सम्मान पेंशन राशि का भुगतान नियमित रुप से नहीं हो रहा है। जिसके कारण आंदोलनकारियों के आश्रित परिवार को अतिरिक्त परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण अंचल के आंदोलनकारियों का दवा का खर्च भी समान पेंशन राशि के द्वारा ही चलता है। सरकार की ओर से आंदोलनकारी के लिए विशेष चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था नहीं की गई है। आंदोलनकारियों को अपनी परेशानियों को लेकर काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि राज्य में मुख्यमंत्री, मंत्री, आंदोलनकारी के दो-दो पुत्र, आश्रित पत्नी मंत्री हैं। ऐसे में अगर आंदोलनकारियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है तो यह बिडंबना की बात है। सरकार गृह विभाग के अधिकारियों को निर्देश दे कि जल्द से जल्द झारखंड आंदोलनकारियों के लंबित सम्मान पेंशन राशि का भुगतान होली से पूर्व करें।

पेंशन हेड से जोड़ा जाय सम्मान राशि

उन्होंने मांग की कि झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान राशि को पेंशन हेड से जोडा जाए, ताकि आंदोलनकारी के सम्मान राशि का भुगतान नियमित हो सके। प्रत्येक माह उन्हें अतिरिक्त परेशानियों का सामना न करना पड़े। आंदोलनकारियों को राज्य गठन की तिथि से ही सम्मान पेंशन की राशि मिलनी चाहिए। जबकि वर्ष 2021 से जो भुगतान मिल रहा है। इसे सुधारने की जरुरत है। कहा कि गृह विभाग के अधिकारी इसे स्वयं कलार्कियल मिस्टेक बताते हैं। सरकार इसे संज्ञान में ले और दुरुस्त करें एवं एरियर के साथ होली से पूर्व प्रत्येक आंदोलनकारी को सम्मान पेंशन राशि का भुगतान करे।

भ्रष्टाचार के खिलाफ कांग्रेस की पदयात्रा सात को

पूसू प्रतिनिधि, पोटका। कांग्रेस के जिला कमिटी व प्रखंड कमिटी के तत्वाधान में पोटका अंचल कार्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं आम जनता के कार्य मे उदासीनता बरतने को लेकर आगामी 7 मार्च को हल्दीपोखर बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण के बाद एक पद यात्रा के द्वारा जमशेदपुर उपायुक्त कार्यालय तक निकाला जाएगा। डीसी को एक ज्ञापन दिया जाएगा। इसकी जानकारी सचिन होटल में एक प्रेस मिट के जरिये दिया गया।

प्रेस मीट में कांग्रेस के नेताओ ने बताया कि पोटका अंचल कार्यालय में आम जनता के कोई भी काम नही हो रहा है। चाहे वह ऑन लाइन के मामला हो या म्यूटेशन का, साधारण एलपीसी जातीय आवासीय के लोग भी प्रखंड के चक्कर लगा रहे है। जिला सचिव जयराम हांसदा ने कहा कि अंचल विभाग बालू के वसूली में लगे हुए है। ओड़िसा के तिरिग के रास्ते दर्जनों हाइवा अवैध बालू का परिवहन पोटका में हो रहा है। जिसका लाखो रुपये के अवैध कमाई अंचल को जाता है। प्रेस मीट में सुबोध सिंह सरदार, सौरव चटर्जी, सोमेन मंडल, लासा मुर्मू, उदय नाथ मुर्मू, लालटू दास, समीउल्लाह, आनंदो पाल, मैन सिंह मुर्मू, उत्पल साहू, शंकर दत्ता आदि उपस्थित थे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार का मेगा विधिक सशक्तिकरण शिविर का समापन

पूसू प्रतिनिधि, चाईबासा। जिला मुख्यालय चाईबासा स्थल पिल्ई हाल में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित विधिक सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्रधान जिला न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार विश्वनाथ शुक्ला, उपायुक्त पश्चिम सिंहभूम सह उपाध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार कुलदीप चौधरी, प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय चाईबासा योगेश्वर मीणा, जिला एवं अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रथम ओमप्रकाश, जिला एवं अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वितीय सूर्य भूषण ओझा, उप विकास आयुक्त संदीप कुमार मीणा, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राहुल देव बड़ाईक, सहित जिला स्तरीय अन्य पदाधिकारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

प्रधान जिला न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार विश्वनाथ शुक्ला ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि आम लोगों को किसी भी विभाग से संबंधित कोई समस्या

हो तो, उसका समाधान हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकार से संपर्क कर सकते हैं। किसी भी प्रकार का सरकारी लाभ, किसी समस्या में किसी के विरुद्ध केस दर्ज करने में आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी संपर्क कर सकते हैं। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर आम जनमानस जिला विधिक सेवा प्राधिकार की कार्यालय में आकर लिखित आवेदन दर्ज कर सकते हैं, जिस पर प्रत्येक महीने दर्ज शिकायतों पर रिव्यू मीटिंग भी की जाती है। अपने हक अधिकार हेतु केस लड़ने के लिए उचित वकील भी जिला विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा मुहैया कराया जाता है। उन्होंने कहा कि किसी भी बिचौलियों के चक्कर में ना आए किसी भी समस्या हेतु सीधे जिला विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यालय में संपर्क करें। उन्होंने मोटर व्हीकल एक्ट के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी दी कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उपायुक्त पश्चिम सिंहभूम सह उपाध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार श्री कुलदीप चौधरी ने कहा कि प्रधान जिला न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार विश्वनाथ शुक्ला सर की अध्यक्षता में आज का संपूर्ण

कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य पूरे जिले मे विधिक सशक्तिकरण और जागरूकता विभिन्न रूप में लगातार संचालित किया जाता रहा है। इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य लोक अदालत के माध्यम से वादों का निपटारण का कार्य सतत रूप से किया जाता रहा है। जिसमें दोनों पछ के लोगो को आमने-सामने करते हुए अध्यक्ष महोदय की उपस्थिति में संबंधित पदाधिकारी की मौजूदगी में कम समय में वाद का निपटारा किया जाता है। उपायुक्त में बताया कि पारा लीगल वॉलिंटियर्स क्षेत्र में जाकर लीगल अवेयरनेस का कार्य करते हैं। उनके द्वारा देश के संविधान के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है। साथ ही साथ सरकारी जनकल्याणकारी योजनाओं का जानकारी कैसे लेना हैं उस संबंध में भी उनके द्वारा जानकारी उपलब्ध कराते हुए लोगों को जागरूक किया जाता है। जिस कार्य का भी निगरानी जिला विधिक सेवा के द्वारा किया जाता है। उपायुक्त के द्वारा उपस्थित सभी आम जनमानस से अपील किया गया कि अपने स्तर से भी जिला विधिक सेवा प्राधिकार के संबंध में लोगों को जागरूक करें ताकि आम जनमानस संबंधित सुविधा का लाभ उठा सकें।

कार्यक्रम में जिला पशुपालन, विभाग जिला गव्य विकास विभाग, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, जिला भूमि संरक्षण कार्यालय, जेएसएलपीएस, जिला कृषि विभाग, जिला आपूर्ति विभाग, जिला समाज कल्याण विभाग, जिला सामाजिक सुरक्षा विभाग, अग्रिम जिला प्रबंधक सहित अन्य विभागों के द्वारा परी संपत्ति का भी वितरण किया गया। उसके उपरांत सभी गणमान्य अतिथियों के द्वारा विभिन्न विभागों के द्वारा लगाए गए स्टॉल का भी निरीक्षण किया गया। आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के मध्यनजर प्रधान जिला न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार श्री विश्वनाथ शुक्ला की अध्यक्षता में स्वीप कार्यक्रम के तहत उपस्थित सभी लोगों को मतदाता प्रतिज्ञा दिलाई गयी। उसके उपरांत हस्ताक्षर अभियान और सेल्फी प्वाइंट का भी शुभारंभ किया गया।

संक्षिप्त खबरें

आंगनबाड़ी सहायिकाओं को कुपोषण दूर करने के लिए मिला प्रशिक्षण

पूसू प्रतिनिधि, डुमरिया। डुमरिया प्रखंड सभागार में आंगनबाड़ी सहायिका को कुपोषण दूर करने के चल रहा दो दिवसीय प्रशिक्षण रविवार को समाप्त हो गया। उक्त प्रशिक्षण सहायिकाओं को टाटा स्टील फाउंडेशन के एआईएफ की ओर से मानसी प्लस परियोजना के तहत सहायिकाओं को बच्चों में पोषण को कैसे बढ़ाया जाए और कुपोषण को कैसे दूर किया जा सके, इस पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। इस दौरान स्थानीय स्तर पर मौजूद साग और सब्जियों से विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की भी प्रशिक्षण भी दी गई। साथ ही मडुआ का आटा और टीएचआर को मिलाकर विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाना भी सिखाया गया। इससे आंगनबाड़ी आने वाले बच्चों को समुचित पोषाहार मिल सके। टाटा स्टील फाउंडेशन की कोऑर्डिनेटर उषा रानी महतो, रुक्मणी हांसदा, निलमनी हांसदा, सुशीला सरदार, यमुना किस्कू, पुर्णिमा नायक ने संयुक्त रूप से सहायिका को प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण में लगभग 90 आंगनबाड़ी केंद्र की सहायिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त की। बीडीओ सह सीओ चंचला कुमारी ने प्रशिक्षण के दौरान बनाए गए व्यंजनों को चखा और प्रशंसा की।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने निकाली लाभार्थी जन संपर्क यात्रा

पूसू प्रतिनिधि, चाकुलिया। चाकुलिया प्रखंड क्षेत्र के कुचियाशोली पंचायत के जिरापाडा में रविवार को भाजपा कार्यकर्ताओ ने बूथ कमेटी के सदस्यों ने पूर्व जिलाध्यक्ष सरोज महापात्र के नेतृत्व में लाभार्थी जन संपर्क यात्रा निकाली। इस दौरान केन्द्र में नरेंद्र मोदी की सरकार के द्वारा चलाई गई जनकल्याणकारी योजनाओं को लाभार्थियों के घर-घर जाकर जनसम्पर्क कर जानकारी दी गई । साथ ही केंद्र में फिर से नरेंद्र मोदी को देश में एक बार फिर से प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा का सांसद बनाने का अनुरोध किया गया। साथ ही मोदी की गारंटी के बारे में भी लोगों को बताया गया। इस दौरान लखिनदर कपाट,त्रिलोचन राणा,शिशिर राणा,बूथ अध्यक्ष प्रिती राणा समेत कई भाजपा कार्यकर्ता महीला एवं पुरुष शामिल थे।

टीम बैरम खान ने सीमिदीरी पंचायत में योजनाओं के लाभ के लिए लगाया शिविर

पूसू प्रतिनिधि,चक्रधरपुर। टीम बैरम खान के सक्रिय सदस्यों ने सीमिदीरी पंचायत में सरकारी योजना के लाभ दिलाने हेतु शिविर का आयोजन किया। साथ जिसमें राशनकार्ड, आयुष्मान कार्ड,वोटर कार्ड, हैल्थ कार्ड,पैंशन से संबंधित कार्य कराया गया। आंचल कार्यालय से संवैय सेवक कुलदीप सिंहदेव के निगरानी पर वोटर कार्ड का कार्य हुआ। शिविर के बारे अख्तर नफीस ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में लगाने का मकसद यही है लोगों को सरकारी योजना से ज्यादा से ज्यादा जोड़ना दूसरा समाज के युवा वर्ग को इस तरह के काम से प्रेरित करना। तारिक सुल्तान ने बताया की टीम बैरम खान व्हाट्सएप ग्रुप एक प्रयोग है और हम लोग इसमें सफल हो रहे हैं समाज के सभी व्हाट्सएप ग्रुप से हमारा निवेदन है कि हम लोग व्हाट्सएप की दुनिया से बाहर आए और नेक मकसद के साथ कार्य करें। गिलमान अनवर ने कहा कि सभी को अपने दस्तावेज को सुधार करने के लिए इस तरह के शिविर ज्यादा लाभ देते हैं।और भविष्य में हमलोग शहर के सभी संस्थाओं एवम व्हाट्सएप ग्रुप के साथ एक मेगा शिविर का आयोजन करेंगे। शिविर को सफल बनाने में अंजुमन इस्लामिया के उप सचिव, सद्दाम हुसैन, कोषाध्यक्ष तौकीर आलम,के साथ साथ सादिक हुसैन,मो नाईम,मो सलाम, ज़ाकिर हुसैन,रहमत अली,मासुम रज़ा,शामशाद, परवेज गद्दी, सलीम मलिक,मो सज्जाद,इत्यादि उपस्थित रहे।

कृतज्ञ शहर ने टाटा साहब को दी श्रद्धांजलि, चेयरमैन, एमडी समेत अन्य पदाधिकारियों ने कंपनी परिसर में किया नमन

शहर को संवारने का कार्य जारी रखेगी कंपनी : एन चंद्रशेखरन

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा को उनकी 185वीं जयंती पर रविवार को कृतज्ञ शहर ने श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य कार्यक्रम टाटा स्टील वर्क्स एवं बिष्टुपुर पोस्टल पार्क में आयोजित किया गया। दोनों जगहों पर टाटा समूह के चेयरमैन नटराज चंद्रशेखरन, ग्लोबल सीईओ सह एमडी टीवी नरेंद्रन समेत कंपनी के सभी वरीय पदाधिकारियों ने अपने संस्थापक को श्रद्धा के फूल अर्पित कर नमन किया। इस दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए चेयरमैन ने कहा कि 'हमारे संस्थापक, जमशेदजी टाटा ने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की थी जहां उद्योग सकारात्मक बदलाव के लिए एक बड़ी ताकत होगा। यह बहुत गर्व की बात है कि हम उनकी विरासत को बरकरार रख रहे हैं। इस अवसर पर, हम अखंडता, सामाजिक जिम्मेदारी के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं। जिन्होंने कंपनी की स्थापना के बाद से हमारा मार्गदर्शन किया है। हम जमशेदपुर और इसके निवासियों के लिए एक उज्जवल, अधिक समृद्ध भविष्य बनाने के लिए समुदाय के साथ मिलकर काम करना जारी रखेंगे।' पोस्टल पार्क में श्रद्धांजलि के बाद चेयरमैन ने टाटा वर्कर्स यूनियन में यूनियन पदाधिकारियों से मुलाकात की। इसके अलावा, जमशेदपुर वर्क्स के स्टीलेनियम हॉल में प्रदर्शनी का उद्घाटन उनके द्वारा किया गया था। विभिन्न विभागों ने थीम के अनुरूप अपनी प्रौद्योगिकी-आधारित पहल प्रस्तुत की ज्ञात हो कि इस वर्ष की थीम 'टेक्नोलॉजी फॉर पीपल एंड प्लेनेट' है।

कई राज्यों में आयोजित हुआ कार्यक्रम : संस्थापक दिवस समारोह देश भर में टाटा स्टील के प्लांटो एवं वर्क्स में आयोजित किया गया। जहां सभी ने जेएन टाटा को याद किया। जिन राज्यों में कार्यक्रम आयोजित हुए उनमें कलिंगानगर, मेरामंडली और झारखंड तथा ओडिशा में रॉ मटेरियल लोकेशन्स सहित अन्य स्थानों और कार्यालय शामिल हैं। दूसरी ओर संस्थापक दिवस के उपलक्ष्य में टाटा स्टील स्पोर्ट्स डिवीजन ने 2 और 3 मार्च को जमशेदपुर के जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया।

कांग्रेसियों ने पोस्टल पार्क में जेएन टाटा को दी श्रद्धांजलि

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा के जन्म दिवस के मौके पर कांग्रेस के कार्यकारी जिला अध्यक्ष (नगर) धर्मेंद्र सोनकर के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया। जिला उपाध्यक्ष बबलू झा ने कहा की दूरदृष्टि, विश्व प्रसिद्ध उद्योग घराना जमशेदजी के सपनों का शहर उनके जन्म दिवस पर दुल्हन की तरह सज धज कर तैयार है। टाटा समूह दूसरों की मदद करने और समाज में योगदान करते रहने के आदर्शों एवं सपनों के साथ अग्रसर है। इस मौके पर अजितेश उज्जैन सुरेंद्र शर्मा, एस आर के कमलेश, जित्तू,समिम गद्दी, दीपक, लाडला, अमित सिंह करण सोनकर उपस्थित रहे।

वरिष्ठ नागरिकों ने टाटा साहब को किया याद

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। सिंहभूम केंद्रीय वरिष्ठ नागरिक समिति के सदस्यों ने अध्यक्ष शिव पूजन सिंह के नेतृत्व में टाटा स्टील के संस्थापक जमशेद जी नसरवान जी टाटा का जन्मोत्सव मनाया। सबों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। समिति ने टाटा साहब को पराधीन भारत काल के औद्योगिक क्रांति का दूरदर्शी शख्सियत बताया।

सिख परिवार ने अपनी निजी जमीन पर स्थापित की जेएन टाटा की प्रतिमा

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। जमशेदपुर शहर और टाटा संस के संस्थापक जेएन टाटा की जयंती के मौके पर टेल्को बिरसानगर के सरदार केवल सिंह परिवार ने टेल्को के बिरसानगर में अपनी निजी जमीन पर जे एन टाटा की प्रतिमा लगाकर उन्हें अपने तरीके से नमन किया। प्रतिमा का अनावरण झारखंड प्रदेश गुरुद्वारा कमेटी के प्रधान एवं सीजीपीसी के चेयरमैन सरदार शैलेंद्र सिंह ने किया। इस दौरान केक काटकर टाटा साहब का जन्म दिन मनाया गया। इस विशेष मौके पर सरदार शैलेंद्र सिंह ने जे एन टाटा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें शहर का अन्नदाता बताया साथ ही श्रद्धांजलि अर्पित की एवं सरदार केवल सिंह उनकी पत्नी रीता कौर पुत्र जगजीत सिंह की प्रशंसा करते हुए निस्वार्थ रूप से जमशेदपुर के अन्नदाता जेएन टाटा की प्रतिमा लगाकर यह साबित कर दिया कि आज भी निस्वार्थ लोग दुनिया में मौजूद है इस मौके पर सरदार केवल सिंह परिवार को सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं केंद्रीय सिख स्त्री सत्संग सभा ने शॉल भेंटकर उन्हें सम्मानित किया।

टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन के रक्तदान में बना रिकार्ड

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन द्वारा संस्थापक दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर एक बार फिर ऐतिहासिक रहा। देर शाम तक कुल 2314 लोगों ने रक्तदान किये। सुबह 6 बजे से ही रक्तदान के लिए यूनियन परिसर में रक्तदाताओं का तांता लगा रहा। रक्तदान शिविर के सुगम एवं सुव्यवस्थित संचालन के लिए यूनियन की पहल काबिले तारीफ था। यहां रजिस्ट्रेशन से लेकर, फार्म भराने एचबी टेस्ट एवं रक्तदान तक की प्रक्रिया में यूनियन के सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। उधर विशिष्ट लोगों के अगुआई से लेकर जलपान आदि के लिए भी यूनियन के कमेटी मेंबर, पदाधिकारी मुस्तैद दिखे। भारी भीड़ के बावजूद रक्तदान शिविर की पूरी व्यवस्था अध्यक्ष गुरमीत सिंह एवं महामंत्री आरके सिंह के कुशल नेतृत्व में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। सबों ने यूनियन की इस पहल की सराहना की। उधर यूनियन के अध्यक्ष गुरमीत सिंह एवं महामंत्री आरके सिंह ने सबों के प्रति आभार जताया।

शिविर में आम से लेकर खास हुए शामिल : टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में पूर्व केन्द्रीय मंत्री सह कांग्रेसी नेता सुबोधकांत सहाय , रामाश्रय प्रसाद, जिप उपाध्यक्ष पंकज सिंहा, पूर्व जिप सदस्य गणेश सोलंकी, पूर्व विधायक अरविंद सिंह, सांसद विद्युत वरण महतो, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, विधायक सरयू राय, पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस, अमरप्रीत सिंह काले, चंद्रगुप्त सिंह, शिव शंकर सिंह, रामबाबू तिवारी, आनंद बिहारी दुबे, सुधांशु ओझा, अभय सिंह, गुंजन यादव, चंद्रशेखर मिश्रा , धर्मेंद्र सोनकर , दिनेश कुमार , राणा सिंह , कविता परमार , परितोष सिंह, मंजू सिंह, बबलू झा, डॉ संजय गिरी, राकेशेश्वर पांडे, रघुनाथ पांडे आदि शामिल हुये। वहीं रक्तदाताओं के हौसला अफजाई के लिए प्रबंधन की ओर से एमडी गिरीश बाग, वी पी विशाल बादशाह, प्लांट हेड रविंद्र कुलकर्णी, एचआर हेड, ई आर हेड समेत टाटा मोटर्स वरीय पदाधिकारीगण, टाटा मोटर्स हॉस्पिटल के डॉक्टर संजय कुमार समेत गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सिंहभूम चैंबर ने चेयरमैन को भेंट की टाटा समूह के विभूतियों की चित्र

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। जमशेदपुर-संस्थापक दिवस के अवसर पर कोल्हान के उधमियों एवं व्यवसायियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था सिंहभूम चैम्बर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों ने टाटा स्टील के संस्थापक जे एन टाटा को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सिंहभूम चैम्बर के सदस्यों नें बिस्टुपुर स्थित टाटा जी प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए एवं टाटा स्टील द्वारा आयोजित मार्च पास्ट में अपनी अभिनव झांकी के साथ सहभागिता निभाई। इस अवसर पर चैम्बर नें एक विंटेज कार को फूलों से सजाया था एवं कार में अभी तक भारत सरकार द्वारा भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्मभूषण एवं अन्य सम्मान से अलंकृत टाटा समूह के पदाधिकारियों के सूची फोटो के साथ प्रदर्शित की गई थी। मार्च पास्ट के क्रम में टाटा स्टील के पदाधिकारी टीवी नरेंद्रन एवं एन चंद्रशेखरन नें भी चैम्बर की इस पहल की तारीफ की। इस अवसर पर मुख्य रूप से चैम्बर अध्यक्ष विजय आनंद मुनका, महासचिव मानव केडिया, उपाध्यक्ष (ट्रेड एंड कॉमर्स) अनिल मोदी, उपाध्यक्ष (पीआरडब्लू) अभिषेक अग्रवाल, सचिव भरत मकानी, सुरेश शर्मा, कोषाध्यक्ष अनिल अग्रवाल, दीपक चेतानी, उमेश खिरवाल, हेमेंद्र जैन, आकाश मोदी, शुभम सेन, सतीश सिंह, प्रीतम जैन, निखिल आडेसरा, पवन नारदी, विशाल तिवारी, ओम प्रकाश मुनका, कमल नरेडी, पीयूष गोयल, कमल लढ़ा, रमेश अग्रवाल एवं अन्य उपस्थित थे।

बन्ना गुप्ता ने जेएन टाटा को अर्पित की श्रद्धांजलि

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन की ओर से जमशेदजी टाटा की 185वीं जयंती के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने आज के ऐतिहासिक दिन पर रक्तदान करने वालों का मनोबल बढ़ाया।

इससे प पहले उन्होंने रक्तदान स्थल पर मौजूद जेएन टाटा को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा है कि कर्मस्थली जमशेदपुर से हूँ तो टाटाजी के साथ भावनात्मक लगाव हैं, मैं उन्हें जीवंत देवता मानता हूँ, जमशेदपुर के जनक के रूप में सदैव वे पूजनीय रहेंगे।

कदमा पीपलधारी शिव मंदिर समिति ने संस्थापक दिवस पर अर्पित की कृतज्ञता

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। संस्थापक दिवस के मौके पर रविवार को कदमा शास्त्रीनगर स्थित पीपलधारी शिव हनुमान मन्दिर में टाटा समूह के संस्थापक जेएन टाटा को पुष्प अर्पित कर उनके अप्रतिम योगदानों के लिए याद किया गया। पीपलधारी मन्दिर समिति के सदस्यों ने मन्दिर परिसर के बगीचे में ही टाटा जी की प्रतिमा स्थापित किया है। सुबह उक्त प्रतिमा पर लोगों के द्वारा माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित की गई। मौके पर विशेष रूप से टाटा वर्कर्स यूनियन के कमिटी मेंबर दीप राज रजक की उपस्थिति रही। इस दौरान पीपलधारी शिव हनुमान मन्दिर के अध्यक्ष रूपेश सिंह, फिरतु यादव, धीरज शर्मा, अमित सिंह एवं अन्य मौजूद रहें।

संक्षिप्त खबरें

अर्पण ने बेटी की शादी में किया सहयोग

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। शहर की सामाजिक संस्था अर्पण ने चार अलग-अलग जरुरतमंद परिवारों में बेटी की शादी के लिये सहयोग करते हुए राशन सामग्री उपलब्ध कराई। इस सेवा कार्य को सम्पन्न कराने में संस्था के जूगुन पांडे, महेश मिश्रा, बिभाष मजुमदार, प्रिंस सिंह, दीपक सिंह, रंजीत कुमार, शेखर मुखी, धीरज चौधरी, सनोज चंद्र, आशीष, बिट्टू मुखी, शुरू पात्रों, पिंटू भिरभिरिया, सागर चौबे, लख्खीकांतो घोष, गणपत नाग, उत्तम मुखी, दर्शन सिंह, प्रवीण कुमार एवं अन्य का सराहनीय योगदान रहा।

'आई एम वेरिफायड वोटर' अभियान आज से

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त अनन्य मित्तल ने लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के मद्देनजर सभी ईआरओ एवं एईआरओ के साथ ऑनलाइन बैठक की। बैठक सभी पदाधिकारिओं को वोटर हेल्पलाइन एप वीएचए डाउनलोड करने और आम लोगों को भी डाउनलोड करने के लिए प्रेरित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि 4 मार्च को सुबह 10.00 बजे से जिले के सभी मतदान केंद्रों पर सोशल मीडिया के माध्यम से 'आई एम वेरिफायड वोटर' अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत सभी मतदाताओं में जागरूकता लाने एवं मतदाता सूची में उनके नामों का सत्यापन किया जायेगा। उन्होंने सभी ईआरओ एवं एईआरओ को बूथों का निरीक्षण करने तथा ज्यादा से ज्यादा मतदाता अपना नाम मतदाता सूची में शामिल होने की पुष्टि करने के लिए कहा। अभियान के दौरान सभी बीएलओ अपने बूथ पर नियमित रूप से उपस्थित रहेंगे। यदि किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है अथवा कोई अन्य त्रुटि है तो नाम पंजीकरण करने एवं सुधार के लिए फॉर्म 6 या फॉर्म 8 भरने तथा जमा कराने के लिए कहा। यदि किसी का नाम वोटर लिस्ट में नहीं है तो फॉर्म 6 और जिनको कुछ सुधार करवाना है तो फॉर्म 8 भरा जायेगा साथ ही उन्होंने 85 वर्ष से अधिक के वरिष्ट मतदाताओं के सूची का आकलन जल्द पूर्ण करने का निर्देश दिया। बैठक में उप विकास आयुक्त, एसडीएम धालभूम, अपर उपायुक्त समेत अन्य पदाधिकारी ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित थे।

राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लें : काले

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। मां भारती के वीर सपूत भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के बलिदान दिवस पर 'नमन' द्वारा संस्थापक अमरप्रीत सिंह काले के नेतृत्व में 23 मार्च को आयोजित तिरंगा यात्रा को सफल बनाने हेतु इस्प्लांट बस्ती, सामुदायिक भवन, सीतारामडेरा, बंगाली कालोनी, साकची, गुरुद्वारा बस्ती, मूंशा सिंह बगान, इस्प्लांट बस्ती रोड नं 5, श्री श्री कामाख्या काली मंदिर प्रांगण बिरसानगर जोन नं 6 सामुदायिक भवन, मोहरदा, बिरसानगर जोन 5, हरि मंदिर, तारापोर स्कूल सीतारामडेरा, जुगसलाई गौशाला, सीतारामडेरा, तूरी भवन सहित अन्य स्थानों पर बैठकों में उपस्थित होकर तिरंगा यात्रा में शामिल होने का आग्रह किया। इस मौके पर श्री काले ने कहा कि राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाने में समर्पित सेवा के लिए सदैव तत्पर रहें, राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लेकर इस तिरंगा यात्रा में शामिल होकर देश की एकता और अखंडता के खिलाफ जो ताकतें काम कर रही है उन्हें मुंह तोड़ जवाब दें।

फुटबॉल प्रतियोगिता में शामिल हुए मंगल कालिंदी

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। जमशेदपुर प्रखंड मनपीटा क्षेत्र के प्राईमरी स्कूल मैदान में ग्राम विकास सेवा समिति, मनपीटा द्वारा आयोजित दो दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता में बतौर मुख्य अतिथि जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी उपस्थित हुए और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। इस दौरान विधायक द्वारा विजेता टीम राम जाने को 70,000 रुपए का चेक और ट्रॉफी देकर फर्स्ट पुरस्कार और राजेश ब्रदर्स को 50,000 और ट्रॉफी देकर दूसरा पुरस्कार सोपा और उन्हें बधाई दी। मौके पर विधायक मंगल कालिंदी ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिता से गांव के युवाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलता है. मौके पर लखन लोहार, जितेन लोहार, सुनील कर्मकार, शिवा लोहार, प्रभाकर हंसदा, राजू लोहार, रवि लोहार, बुका हो, महाराज कर्मकार, नकुल लोहार आदि स्थानीय लोग उपस्थित थे।

प्रियंका सवैयां के नेतृत्व में पश्चिमी सिंहभूम महिला क्रिकेट टीम की घोषणा

पूसू प्रतिनिधि, चाईबासा। झारखण्ड राज्य क्रिकेट संघ के तत्वावधान में आगामी 11 मार्च से शुरू हो रहे अंतर जिला सीनियर महिला क्रिकेट प्रतियोगिता, 2023-24 में भाग लेने के लिए पश्चिमी सिंहभूम टीम की घोषणा कर दी गई है। चाईबासा की प्रियंका सवैयां को एक बार पुन: टीम का कप्तान बनाया गया है। टीम में रश्मि गुड़िया (उपकप्तान), अनामिका कुमारी, जया कुमारी, पिंकी तिर्की, चाँदमुनी पुर्ति, सुष्मिता पुरकैत, शांति कुमारी, इसरानी सोरेन, अंजली दास, सीता सिंकु, यशोदा कुमारी, पूनम कौवा, दीपा गागराई, शीला मछुवा एवं प्रगति यादव को शामिल किया गया है।

सुरभि शाखा के सामूहिक विवाह में एक-दूजे के हुए 11 जोड़े

मारवाड़ी समाज ने नव दंपतियों को उपहार स्वरूप दिया गृहस्थ सामग्री

पूसू प्रतिनिधि, जमशेदपुर। रविवार को मारवाड़ी युवा मंच स्टील सिटी सुरभि शाखा द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर 11 बेटियों का सामूहिक विवाह कराया गया। साकची स्थित धालभूम क्लब (श्री अग्रसेन भवन के पास) परिसर में 11 जोड़ों ने सात जन्मों के बंधन में बंधने के लिए फेरे लिए। गाजे बाजे के साथ 11 दुल्हों की बारात एक साथ आयी। बारात आने से पहले मारवाड़ी समाज के युवाओं की टीम ने मायरा भरने का शानदार आयोजन किया। मायरा कार्यक्रम के दौरान राजस्थानी भजनों पर नृत्य भी किया गया। इस दौरान मुख्य कार्यक्रम में मंच पर बतौर अतिथि विधायक मंगल कालिंदी, मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेन्द्र भटर, झारखंड प्रांतीय अध्यक्ष अरुण गुप्ता, समाजसेवी ओमप्रकाश रिंगसिया, अशोक भालोटिया, राजकुमार चंदूका, अशोक चौधरी, संदीप मुरारका, अरूण बांकरेवाल, सुरभि शाखा अध्यक्ष निशा सिंघल, सचिव कविता अग्रवाल, कार्यक्रम सायोंजिका रेणू अग्रवाल मौजूद थे। सभी अतिथियों को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। मंच का सफल संचालन सचिव कविता अग्रवाल एवं स्थानीय भजन गायक मनोज शर्मा मोनु ने संयुक्त रूप से किया। मंच से सभी अतिथियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए मारवाड़ी युवा मंच स्टील सिटी सुरभि शाखा की अध्यक्ष निशा सिंघल समेत पूरी टीम के द्धारा समाज हित में किये जा रहे कार्यो की प्रशांसा करते हुए रह संभव सहयोग का आश्वासन दिया। विधायक मंगल कालिंदी ने सुरभि शाखा के मानव सेवा हेजु कियो जा रहे कई कार्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि इसकी जितनी भी प्रशांसा की जाये कम हैं। इन कार्यक्रमों में वर-वधू के साथ ही उनके परिजनों ने भी हिस्सेदारी की। समारोह को भव्यतापूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए सुरभि शाखा की टीम द्धारा पहले से ही आवश्यक तैयारियां पूरी की गई थीं। विवाह के बाद सभी नव दंपतियों को गृहस्थ के लिए आवश्यक सामग्री उपहार स्वरूप भेंट किया गया। सभी ने लजीज व्यंजन का आनंद भी लिया। इसे सफल बनाने में सुरभि शाखा की पूरी टीम का योगदान रहा।

परिणय सूत्र में बंधे 11 जोड़े

(1) दीपक कुमार संग बबली कुंडू (परसुडीह), (2) छवि रानी संग भास्कर पत्र (परसुडीह), (3) सीमा संग बंटी (काशीडीह), (4) चीकू संग खुशबू (साकची), (5) कोमल संग टिंकू (मानगो), (6) नितेश संग सावनी (टेल्को), (7) अरुण बाग संग सुमित्रा तंगी (संबलपुर), (8) सहदेव संग रिंकी (बरिपदा), (9) मेनका संग सचिन कालिंदी (नोवामुंडी), (10) सुमन संग अमित (पोटकां), (11) राहुल संग नेहा (कदमा)।

इन्होंने किया कन्यादान

समाजसेवी विवेक चौधरी, नेहा-सुशील अग्रवाल, उषा-विलोम चौधरी, सुनीता-गणेश मित्तल, सुमन-संजय अग्रवाल, सीताराम (आदित्यपुर), मधु-संजय मोदी, माया-पप्पू बंसल, विजय मित्तल, संतोष खेतन, पवन कृष्ण पोद्दार, शाह परिवार, जिला अग्रवाल सम्मेलन की टीम ने कन्यादान किया।

इनकी रही उपस्थिति

मौके पर प्रमुख रूप से समाजसेवी संतोष अग्रवाल, बजरंग लाल अग्रवाल, मुकेश मित्तल, कमल किशोर अग्रवाल,विमल गुप्ता नरेन्द्र जैन, रमेश अग्रवाल, सीताराम, सार्थक अग्रवाल, पंकज छावछरिया, विमल अग्रवाल, सुरेश कांवटिया, अभिषेक अग्रवाल गोल्डी, लिप्पू शर्मा, बिनोद शाह, घनश्याम अग्रवाल, कमल सिंघल, मोहित शाह समेत कई गणमान्य लोगों ने भी पहुंचकर नव दंपतियों को आशीर्वाद प्रदान कर मंगलमय जीवन की कामना की।

ट्रैक्टर से दबकर ईंट भट्ठा के सुरक्षा गार्ड की मौत

पूसू प्रतिनिधि, पोटका। पोटका थाना अंतर्गत पिछली गांव के कूदादा पोटका रोड पर स्थित देव इंटरप्राइजेज के मालिक शिव प्रकाश जायसवाल के ईंट भट्ठा फैक्ट्री में सुरक्षा गार्ड के रूप में कार्यरत मुकेश दास (20) की रविवार को ट्रैक्टर से दबकर मौत हो गयी। मुकेश चाईबासा का रहने वाला है। इस घटना पर मृतक के घरवालों ने हत्या का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार शिव प्रकाश जायसवाल का ईंटभट्ठा फैक्ट्री के समीप ही सीमेंट का दुकान भी है। रविवार को दिन के दस बजे जब भट्ठा के स्टाफ दुकान खोलने के लिए आए तो ईंट भट्ठा का मुख्य गेट बंद पाया। काफी देर दरवाजा पीटने के बाद भी भीतर से कोई नहीं खोला तो सीमेंट दुकान का स्टाफ एक सीढ़ी के सहारे दीवाल फांदकर अंदर गया तो वह भीतर का स्थिति देखकर दंग रह गया। उसने देखा कि सुरक्षा गार्ड मुकेश एक नाला के पास ट्रैक्टर के अगले चक्का के नीचे दबा हुआ है। वह मृत अवस्था में है। भट्ठा के मालिक को जब इसकी जानकारी मिली तो वे परसुडीह से आये तथा पुलिस व स्थानीय मुख्य लोगों को सूचित किया। बताया जाता है कि मुकेश दास अकेले ईंट भट्ठा परिसर में रहकर रखवाली करता था। भट्ठा परिसर चारो ओर से ऊंची चहारदीवारी से घिरा हुआ है। ऐसी स्थिति में क्या मुकेश दास स्वयं टैक्टर के नीचे कैसे आ गया, यह जांच का विषय है। दूसरी ओर इस घटना की जानकारी मिलने के बाद इंस्पेक्टर इंद्र देव राम, थाना प्रभारी समीर तिर्की अपने दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुचकर जांच पड़ताल की।

पूर्व मुखिया भगीरथ हांसदा, जिला कांग्रेस महासचिव नेता अजय मंडल, ग्राम प्रधान जीते सरदार तथा उप मुखिया कालिंदी सरदार के उपस्थिति में समझौता किया गया जिसमे मृतक के परिवार को मालिक द्वारा साढ़े तीन लाख रुपए देने की बात कही गई, जिसमें एक लाख रुपए तत्काल दिया गया 50 हजार रुपए एक सप्ताह दिया जाएगा, बाकी 2 लाख रुपए एक माह में दिया जाएगा।

प्री-वेडिंग पार्टी में क्यों नहीं शामिल हुईं प्रियंका

इन दिनों हर तरफ अंबानी परिवार के चर्चे हो रहे हैं। पूरा बॉलीवुड मुकेश अंबानी और नीता अंबानी के छोटे बेटे अनंत और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए जामनगर पहुंच चुका है। बीती रात रात प्री-वेडिंग की कॉकटेल पार्टी में शाहरुख खान से लेकर सलमान खान फिल्मी गानों पर थिरकते दिखाई दिए। वहीं ईशा अंबानी की दोस्त और अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की गैर-मौजूदगी को सबने नोटिस किया। कल मीडिया ने प्रियंका की मां मधु चोपड़ा से इस विषय में सवाल कई सवाल पूछे।

पुराना सपना सच हुआ

अंबानी परिवार की खुशियों में शामिल होने के लिए प्रियंका चोपड़ा की मां जामनगर पहुंच चुकी हैं। हाल ही में जब उनसे पूछा गया कि वे इस कार्यक्रम में शामिल होकर कैसा महसूस कर रही हैं। इस सवाल के जवाब में मधु कहती हैं, मैं काफी समय से जामनगर आना चाहती थी, लेकिन कभी आ नहीं पाई। अब अनंत और राधिका की वजह से मुझे यहां आने का मौका मिला है। मेरी कुछ पुरानी यादें जुड़ी हैं जामनगर से इसलिए मैं यहां आकर काफी खुश हूं।

प्रियंका करेंगी भरपाई

देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा दूल्हे अनंत की बहन ईशा अंबानी की खास सहेली हैं। ईशा प्रियंका की शादी में शामिल भी हुई थीं। वहीं, अनंत के प्री-वेडिंग कार्यक्रम में प्रियंका की नामौजूदगी लोगों को खल रही है। जब मधु चोपड़ा से इस विषय में पूछा गया तब उन्होंने कहा, प्रियंका चाहती थीं कि वे इस भव्य कार्यक्रम का हिस्सा बनें लेकिन यह संभव नहीं हो पाया। प्रियंका जल्द ही भारत आएंगी और सबसे मिलेंगी भी। बस थोड़ा इंतजार कीजिए।

अनंत-राधिका की कॉकटेल पार्टी

बॉडीकॉन ड्रेस में कियारा ने दिखाया किलर फिगर

मिसेज मल्होत्रा की तस्वीरों से नजरें नहीं हटेंगी हुजूर !

बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी बी-टाउन की सबसे ज्यादा ग्लैमरस और बोल्ड एक्ट्रेसेस में से एक हैं।

कियारा जब भी कोई आउटफिट कैरी करती हैं तो लोगों के होश उड़ा देती हैं। वहीं इस हसीना ने जब अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग फंक्शन की कॉकलेट पार्टी में अपने लुक को इतना किलर रखा कि जो देख वो कायल हो जाए। स्लिम-फिट फिगर की मालकिन कियारा ने आउटफिट भी ऐसी चुनी जो उनके कर्व्स को बेहद खूबसूरती के साथ उभारे। पार्टी के लिए कियारा ने लबिना डिला के कलेक्शन से फ्लोरलेंथ ब्लैक गाउन चुना था। इसकी फिटिंग बॉडीकॉन रखी गई थी जिस वजह से एक्ट्रेस का बार्बी डॉल जैसा फिगर हाइलाइट हो रहा था। ऑफ शोल्डर गाउन में प्लंजिंग नेकलाइन दी गई थी और अपर हेम कट को शार्प पीक लुक दिया गया था। नेक के दोनों पोर्शन को ट्रांसपैरेंट मेश से अटैच किया गया था ताकि नेकलाइन अपनी जगह पर टिकी रहे। ड्रेस के गले का ये डिजाइन लुक में जबरदस्त ऊम्फ फैक्टर ऐड कर गया।

अनंत-राधिका प्री वेडिंग फंक्शन के होस्ट बने शाहरुख

लगाए जय श्री राम के नारे

अभिनेता शाहरुख खान सहित कई मशहूर हस्तियों ने गुजरात के जामनगर में अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के तीन दिवसीय प्री वेडिंग फंक्शन में भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार शाम को अभिनेता के कई वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सामने आईं। अब शाहरुख खान का एक वीडियो सामने आया, जिसने फैंस का दिल जीत लिया। दरअसल, शाहरुख खान कुछ देर के लिए अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री वेडिंग फंक्शन पार्टी के होस्ट बने। एक वीडियो में शाहरुख काला कुर्ता, जैकेट और पायजामा पहनकर स्टेज पर पहुंचे। उन्होंने समारोह में जय श्री राम के नारे लगाए। उन्होंने कहा, और बहुत अच्छे उपाय के लिए जय श्री राम। भगवान आप सब का भला करे। भगवान आप सभी को आशीर्वाद दें।

आपने नृत्य प्रदर्शन देखा है। भाइयों ने डांस किया है, बहनों ने डांस किया है, लेकिन जो एकजुटता कर सकती है, वह है प्रार्थना और आशीर्वाद के बिना आगे मत बढ़ो। इसके बाद शाहरुख ने अंबानी परिवार के वरिष्ठ सदस्यों से परिचय कराया, जिन्होंने जल्द ही शादी करने वाले जोड़े अनंत और राधिका को आशीर्वाद दिया। शाहरुख ने राधिका और अनंत को आशीर्वाद देने के लिए कोकिलाबेन अंबानी, पूर्णिमा दलाल और देवयानी खिमजी को स्क्रीन पर पेश किया।

मुंगेर की मनीषा रानी ने जीता झलक दिखला जा 11

मिले 30 लाख रुपये

सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर और वाइल्डकार्ड से प्रवेश पाने वाली मनीषा रानी को शनिवार रात सेलिब्रिटी डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा के सीजन 11 की विजेता का ताज पहनाया गया।मनीषा को विजेता ट्रॉफी के अलावा 30 लाख रुपये का चेक मिला, जबकि उनके कोरियोग्राफर आशुतोष पवार को 10 लाख रुपये मिले। दोनों ने यस द्वीप, अबू धाबी की यात्रा का टिकट भी जीता।समापन समारोह में मर्डर मुबारक के कलाकार - सारा अली खान, विजय वर्मा और संजय कपूर मौजूद थे, जो नृत्य के लिए मंच पर प्रतियोगियों के साथ शामिल हुए।पांच फाइनलिस्ट मनीषा रानी, शोएब इब्राहिम, धनश्री वर्मा, अद्रिजा सिन्हा और श्रीराम चंद्रा थे, लेकिन केवल मनीषा, शोएब और अद्रिजा ही शीर्ष तीन में जगह बना सके।मनीषा का अंतिम प्रदर्शन ठुमकेश्वरी, डू यू लव मी, परम सुंदरी और सामी सामी ट्रैक पर था।

शोएब ने शाहरुख खान अभिनीत फिल्म जवान के गाने जिंदा बंदा पर धमाकेदार परफॉर्मेंस दी। इसके बाद उन्होंने बादशाह ओ बादशाह गाना गाया, जो 1999 में अब्बास-मस्तान की फिल्म बादशाह में शाहरुख खान और ट्विंकल खन्ना पर फिल्माया गया था।अद्रिजा ने छम्मक छल्लो, नदिया के पार और मूव योर बॉडी के संगीत पर कोरियोग्राफ किए गए अपने नृत्य से भी सबका दिल जीता।बिहार के मुंगेर से आने वाली मनीषा ने अपनी जीत को एक सपना के सच होना बताया।उन्होंने कहा, ÷मैं जजों और दर्शकों के प्यार, समर्थन और प्रोत्साहन की आभारी हूं। मुझे पता था कि यह अनुभव मेरे जीवन को बदल देगा और यह वास्तव में बदल गया है। एक वाइल्डकार्ड प्रविष्टि के रूप में मुझे खुद को साबित करने के लिए दोगुनी मेहनत करनी पड़ी और मेरा हर पल उत्साह से भरा रहा है और एक नर्तकी के रूप में मेरा विकास हुआ है।

मनीषा, जो कोविड लॉकडाउन के दौरान इंस्टाग्राम के बाद टिकटॉक पर अपने डांस रीलों से प्रमुखता से उभरीं, ने इससे पहले बिग बॉस ओटीटी 2 में सेकेंड रनर-अप का पुरस्कार जीता था।मनीषा ने अपने कोरियोग्राफर आशुतोष के प्रति आभार जताते हुए कहा ÷÷वह बहुत समझदार रहे हैं और हर हफ्ते, उन्होंने मुझे अपने क्षितिज को व्यापक बनाने और मेरी नृत्य क्षमताओं के नए पहलुओं की खोज करने के लिए प्रेरित किया है। यह जीत सिर्फ मेरी नहीं है, यह उन सभी की है, जिन्होंने मुझमें विश्वास किया और मेरा समर्थन किया।÷शो के तीन जजों में से एक, कोरियोग्राफर-फिल्म निर्माता फराह खान ने कहा ÷÷मनीषा ने नृत्य के लिए अपनी प्राकृतिक योग्यता से वास्तव में मंच पर आग लगा दी है। उन्होंने लगातार अपनी सीमाओं से परे खुद को आगे बढ़ाया है और सुंदरता के साथ नृत्य शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रदर्शन किया है।

साथी जज अरशद वारसी ने कहा- मनीषा ने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा और मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रदर्शन से हर किसी के दिल में तेजी से जगह बनाई है। हर हफ्ते, वह अपनी अविश्वसनीय बहुमुखी प्रतिभा से हमें मंत्रमुग्ध कर देती है और प्रत्येक प्रदर्शन में उसका समर्पण, शालीनता और कौशल के साथ कड़ी मेहनत स्पष्ट होती है।÷तीसरी जज, मलाइका अरोड़ा ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला ÷÷पूरे शो में उनका प्रदर्शन उत्कृष्ट था।

वह वास्तव में मेरी बहुमुखी रानी हैं, हफ्ते दर हफ्ते परफॉर्मेंस देती हैं, जिससे हम सभी हैरान रह जाते हैं।अपनी नृत्य प्रतिभा से परे, मनीषा ने अपने गतिशील व्यक्तित्व और मधुर व्यवहार से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।उन्होंने अपनी अदाओं से अभिनेता शाहिद कपूर को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे वह सोचने लगे कि क्या उन्हें उनसे डांसिंग टिप्स लेनी चाहिए। उन्होंने जूही चावला को पापराजी के लिए पोज देने के लिए कुछ टिप्स देने का अवसर भी लिया और नोरा फतेही को अपने बेली डांसिंग कौशल से हैरान कर दिया।फिनाले में मैडनेस मचाएंगे इंडिया को हंसाएंगे की टीम - हुमा कुरैशी, होस्ट हर्ष गुजराल और कॉमेडियन इंदर साहनी भी नजर आए।

इंस्टाग्राम पर नयनतारा के सीक्रेट मैसेज से विग्नेश के बारे में अटकलें तेज

साउथ फिल्म इंडस्ट्री की सुपरस्टार नयनतारा ने अपने सोशल मीडिया पर एक सीक्रेट मैसेज शेयर किया, जिससे उनके फैंस चिंतित हो गए। एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम के स्टोरीज़ सेक्शन में टेक्स्ट साझा किया, जिसमें लिखा था कि वह आंखों में आंसू होने पर भी हमेशा यही कहेंगी कि मुझे यह मिल गया। इंस्टाग्राम पर यह सीक्रेट मैसेज इस अफवाह के बाद आया है कि उन्होंने अपने पति, तमिल निर्देशक विग्नेश शिवन को अनफॉलो कर दिया है। एक रेडिट यूजर ने एक स्क्रीनशॉट शेयर किया, जिसमें नयनतारा किसे फॉलो करती हैं, उसकी जानकारी थी, हालांकि, इस स्क्रीनशॉट से विग्नेश गायब थे। हालांकि, विग्नेश फोटो-शेयरिंग ऐप पर नयनतारा की फ़ॉलोइंग लिस्ट में दिख रहे हैं। पिछले हफ्ते, नयनतारा ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटो शेयर की, जिसमें वह विग्नेश के साथ खड़ी देखी जा सकती हैं। नयनतारा ने कुछ नहीं लिखा, उन्होंने खो गए हम कहां गाना स्टोरी में जोड़ा था। नयनतारा आखिरी बार बॉलीवुड मेगास्टार शाहरुख खान के साथ फिल्म जवान में नजर आईं थीं।

लव सेक्स और धोखा 2 में नहीं होंगी निर्मित कौर

लव सेक्स एंड धोखा ने सच में ऑडियंस के लिए एक अलग तरह के कंटेंट को दिखाने का सही माहौल बनाया है। बोल्डनेस, सेंशुअलिटी, टैलेंटेड कास्ट, दिलचस्प तीन जिंदगी से इंस्पायर्ड यह कहानियां, और बिना भूले सबसे पॉपुलर गाना इमोशनल अत्याचार के साथ, ये फिल्म एक ऐसी एंटरटेनर के रूप में सामने आई है जो अपने आप में एक अलग श्रेणी की है। अब जिस तरह के अनोखे और अलग तरह के कंटेंट ने ऑडियंस को दिए हैं, उसे अगले चैप्टर में बिना किसी शक एक लेवल ऊपर लेकर जाना पड़ेगा। इसी बीच खबर सामने आ रही हैं कि निर्मित कौर ने इस फिल्म को छोड़ दिया है।

निर्मित कौर ने छोड़ी लव सेक्स और धोखा 2

लव सेक्स और धोखा 2 के साथ मेकर्स एक लंबे इंतजार के बाद अपनी वापसी के लिए बिल्कुल तैयार हैं। जैसा की फिल्म के लिए मेकर्स इस बार उसके लेवल को ऊपर उठाने जा रहे हैं, ऐसे में उसके लिए फिल्म के सीन्स को और बोल्ड करने की जरूरत पड़ेगी। इसी बीच हमें सुनने को मिला है कि निर्मित कौर ने बोल्ड सीन्स के कारण लव सेक्स और धोखा 2 में अपनी भूमिका छोड़ दी है।

उपेंद्र लिमये मडगांव एक्सप्रेस की कास्ट में हुए शामिल

एक्टर उपेंद्र लिमये, जो एनिमल में सबके चहिते फ्रेडी के रूप ने नजर आए थे, वह अब मच अवेटेड मडगांव एक्सप्रेस में गैंगस्टर मेंडोज़ा भाई बनकर सामने आने वाले हैं। कास्ट को ज्वाइन करते हुए उन्होंने फिल्म में एंटरटेनमेंट की एक और बेजोड़ कड़ी जोड़ दी है। इस मजेदार सफर वाली फिल्म को पावरहाउस जोड़ी, रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर द्वारा एक्सेल एंटरटेनमेंट बैनर के तले बनाया गया है, जबकि इसका निर्देशन कुणाल खेमू ने किया है।

उपेन्द्र लिमये के मेंडोज़ा भाई के रूप में कदम रखने के साथ ही, तैयार हो जाइये नॉन-स्टॉप हंसी के ठहाको के लिए, क्योंकि वो अपने ह्यूमर का तड़का लगाने वाले हरकतों से सबको लोटपोट करने वाले हैं! मडगांव एक्सप्रेस के मेकर्स ने धमाकेदार अंदाज में शुरुआत करने के लिए बहुत ही मजेदार वीडियो और जबरदस्त पोस्टर रिलीज किया है, उसे देख फैंस फिल्म ने होने वाली मस्ती और खूब सारी खुरफाती का अंदाजा लगा सकते हैं। यह फिल्म कुणाल खेमू का डायरेक्टोरियल डेब्यू है, जिसे रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर ने प्रोड्यूस किया है। ऐसे में इस फिल्म के लिए यह कहना गलत नहीं होगा कि यह एक हंसी के तूफान को लेकर आने वाली है, जिसे आज से पहले किसी ने नहीं देखा है।

एनिमल में फ्रेडी के रोल के बाद, उपेन्द्र लिमये की वापसी से फैंस खुश हैं। ट्रेलर 5 मार्च को आएगा और फिल्म 22 मार्च 2024 को रिलीज होगी। तो दोस्ती, बहुत सारे ट्विस्ट टर्न और मजेदार एडवेंचर्स के लिए तैयार रहें!

नई सोशल मीडिया तस्वीरों में माइली साइरस हुई टॉपलेस

लॉस एंजेलिस । गायिका-गीतकार माइली साइरस ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम पर कुछ आकर्षक तस्वीरें साझा की हैं। माइली ने 2024 ग्रैमी में फ्लावर्स के लिए रिकॉर्ड ऑफ द ईयर और सर्वश्रेष्ठ पॉप सोलो परफॉर्मेंस का पुरस्कार जीता था। रिपोर्ट के अनुसार, गायिका ने अपना नया सोलो डॉक्टर (वर्क इट आउट) भी जारी किया, जिसके लिए उन्होंने जेन लोव और फैरेल विलियम्स के साथ सहयोग किया है। परिवार में कथित तनाव के बीच जारी किया गया है।

एक वीकली के अनुसार, साइरस परिवार के सबसे हालिया घटनाक्रम में, उनकी 56 वर्षीय मां टीश साइरस के बारे में अफवाह है कि उन्होंने नूह साइरस के प्रेमी से शादी कर ली है। टीश हाल ही में माइली के कैलिफ़ोर्निया एस्टेट में 54 वर्षीय डोमिनिक परसेल के साथ शादी के बंधन में बंध गई। 24 साल की नूह समारोह में नहीं थी थी और कुछ रिपोर्टों से पता चला है कि उन्हें बुलाया ही नहीं गया था। अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, नूह डोमिनिक को डेट कर रही थी, जिसके बारे में टीश को पता था, लेकिन फिर भी उन्होंने उनसे शादी कर ली।

लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड करण शर्मा के साथ शादी के बंधन में बंधीं 'सुरभि चंदना'

एक्ट्रेस सुरभि चंदना, फिल्मी स्टाइल में ली एंट्री

मशहूर टीवी एक्ट्रेस 'नागिन' फेम सुरभि चंदना शादी के बंधन में बंध चुकी हैं। उन्होंने 2 मार्च को अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड करण शर्मा के साथ शादी कर ली है। जिसके तमाम वीडियो और तस्वीरें सामने आ रही हैं। 1 मार्च को उनकी पहले मेहंदी हुई और फिर सगाई हुई। एक्ट्रेस की शादी में टीवी इंडस्ट्री के तमाम दिग्गज सितारे पहुंचे।

सुरभि की शादी का वीडियो काफी खूबसूरत है। उन्होंने बॉलीवुड ब्राइड की तरह एंट्री ली और फिर करण ने आकर उनका हाथ थामा। कपल ने साल 2023 में एक दूसरे के साथ गोवा में रोका किया था और अब इन्होंने जयपुर में डेस्टिनेशन वेडिंग की है। एक्ट्रेस की हल्दी, मेहंदी से लेकर शादी तक का लुक काफी खूबसूरत है। उन्होंने लड़कियों के लिए शादी का नया गोल सेट कर दिया है। सुरभि ने शादी में हल्के नीले और पिंक कलर का लहंगा पहना था। वेडिंग का जो वीडियो सामने आया है उसमें सुरभि आइल पर आती नजर आ रही हैं। सुरभि 'कहानी सुनो' गाने पर परफॉर्म करते हुए एंट्री ले रही हैं। इस दौरान उनके चेहरे पर खुशी साफ नजर आ रही है।

तभी करण भी गाने पर परफॉर्म करते हुए आते हैं और उन्हें गले लगा लेते हैं। सुरभि ने लहंगे के साथ कस्टम-कट, फुल-स्लीव चोली पहनी थी, जिसमें एक स्वीटहार्ट नेकलाइन थी। सुरभि ने हल्का मेकअप किया था और गले में चोकर, मांग टीका और गोल्डन कलीरों के साथ पिंक चूड़ा पहना था। उनके दूल्हे करण ने मैचिंग शेरवानी पहनी थी। शादी से पहले सुरभि की चूड़ा सेरेमनी का वीडियो सामने आया था। इसके साथ ही सगाई और हल्दी के भी कई वीडियो उनके दोस्तों ने शेयर किए हैं। सगाई पर सुरभि ने ब्लैक कलर की सीक्वेंस वाली ड्रेस पहनी थी और मेहंदी के लिए उन्होंने ब्लू और ग्रीन कॉम्बिनेशन में आउटफिट वियर किया था। सुरभि का हल्दी वाला आउटफिट काफी खूबसूरत था, जिसकी चोली मल्टीकलर के सीक्वेंस से बनी थी।

टीम इंडिया में वापसी के लिए आईपीएल 2024 काफी नहीं !

ईशान और श्रेयस के सेलेक्शन पर संकट

नईदिल्ली, एजेंसी। श्रेयस अय्यर और ईशान किशन को उस समय अपने करियर का अब तक का सबसे बड़ा झटका लगा होगा, जब उनका नाम बीसीसीआई के एनुअल सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट 2023-24 में नहीं दिखा होगा। बीसीसीआई ने सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट जारी करते हुए एक बात लिखी थी कि बोर्ड ने श्रेयस अय्यर और ईशान किशन को इसलिए अनुबंध की सूची में शामिल नहीं किया है, क्योंकि चयनकर्ताओं ने उनकी सिफारिश नहीं की है।

इसके पीछे का कारण ये सामने आया है कि इन दोनों खिलाड़ियों ने बीसीसीआई की रणजी ट्रॉफी खेलने की चेतावनी को नजरअंदाज किया था। अब खबर है कि इन दोनों की टीम इंडिया में वापसी भी बहुत ही ज्यादा कठिन होने वाली है। बता दें कि नेशनल ड्यूटी से मानसिक थकान का हवाला देकर ब्रेक लेने वाले ईशान किशन पार्टी करते नजर आए थे और आईपीएल की तैयारियां कर रहे थे। वहीं, श्रेयस अय्यर चोट के बहाना बनाकर रणजी ट्रॉफी के क्वॉर्टर फाइनल से हटे और कोलकाता नाइट राइडर्स के कैंप में नजर आए। अब इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट कहते है कि दोनों खिलाड़ी आईपीएल भले ही खेलें, लेकिन टीम सेलेक्शन के लिए अभी कंसीडर नहीं किए जाएंगे। उनको फिर से घरेलू क्रिकेट खेलने होगी और फिर टीम में जगह बनानी होगी।

सूत्र ने बताया, ईशान को वह अवकाश मिल गया जो वह चाहते थे, लेकिन उन्होंने एनसीए या राज्य इकाई को रिपोर्ट नहीं किया है, लेकिन अकेले प्रशिक्षण जारी रखा। इन परिस्थितियों में, बीसीसीआई के पास केंद्रीय अनुबंध की पेशकश करने का कोई मौका नहीं था। इसी तरह श्रेयस के साथ भी हम मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार चले। उनके लिए अभी भी दरवाजे खुले हैं, बशर्ते वे नियमित रूप से घरेलू क्रिकेट खेलें। आईपीएल के आधार पर टी20 वर्ल्ड कप के लिए सेलेक्शन होना है। ऐसे में दोनों का सेलेक्शन भी संदेह के घेरे में है।

लियोन ने रचा इतिहास

डब्ल्यूटीसी के इतिहास में यह कमाल करने वाले पहले गेंदबाज

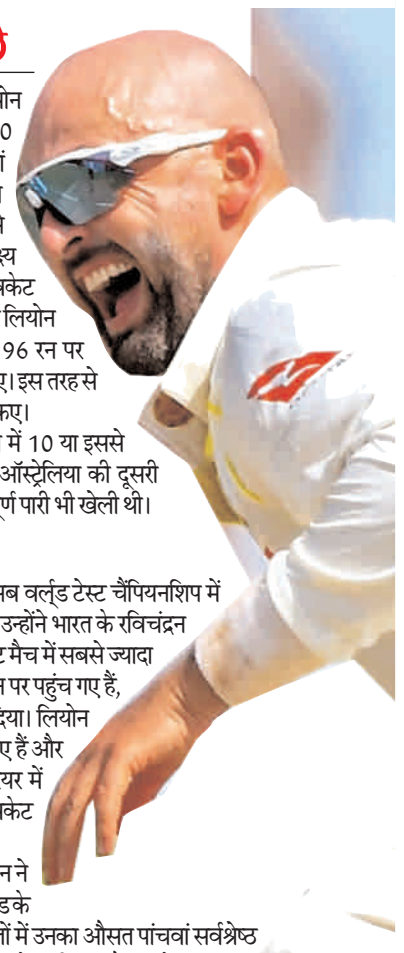

रवि अश्विन भी रह गए पीछे

वेलिंग्टन, एजेंसी। ऑफ स्पिनर नाथन लियोन ने अपनी फिरकी का जादू दिखा कर मैच में 10 विकेट लिए, जिससे ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को यहां पहले टेस्ट क्रिकेट मैच में न्यूजीलैंड को 172 रन से करारी शिकस्त देकर दो मैच की सीरीज में 1-0 से बढ़त बनाई। न्यूजीलैंड के सामने 369 रन का लक्ष्य था। उसने चौथे दिन सुबह अपनी दूसरी पारी तीन विकेट पर 111 रन से आगे बढ़ाई, लेकिन उसके बल्लेबाज लियोन के सामने टिक नहीं पाए और उसकी पूरी टीम 196 रन पर आउट हो गई। लियोन ने 64 रन देकर 6 विकेट लिए। इस तरह से उन्होंने मैच में 108 रन देकर 10 विकेट हासिल किए।

अपने करियर में लियोन ने पांचवीं बार मैच में 10 या इससे अधिक विकेट लेने का कारनामा किया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में नाइटवॉचमैन के रूप में 41 रन की महत्वपूर्ण पारी भी खेली थी।

नाथन लियोन ने बनाए ये रिकॉर्ड्स

ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर नाथन लियोन के नाम अब वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में सबसे ज्यादा (10) फाइव विकेट हॉल हो गए हैं, उन्होंने भारत के रविचंद्रन अश्विन (नौ) को पछाड़ दिया है। लियोन अब टेस्ट मैच में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में सातवें स्थान पर पहुंच गए हैं, उन्होंने दिग्गज क्रिकेटर कर्टनी वॉल्श को पछाड़ दिया। लियोन के नाम अब 128 टेस्ट मैचों में 527 विकेट हो गए हैं और उनका औसत 30.35 का है। उन्होंने अपने करियर में उन्होंने 24 बार पांच विकेट और पांच बार 10 विकेट लिए हैं।

न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने 11 मैच में लियोन ने 18.90 की औसत से 60 विकेट लिए हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ कम से कम 50 विकेट लेने वाले गेंदबाजों में उनका औसत पांचवां सर्वश्रेष्ठ है। लियोन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन बार पांच विकेट भी लिए हैं। इसके अलावा वह न्यूजीलैंड में छह विकेट लेने वाले पहले ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर बन गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

रिटायरमेंट के 10 बाद ही टीम में वापसी करेंगे नील वैंगनर?

वेलिंग्टन, एजेंसी। न्यूजीलैंड की टीम अपने ही घर पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहला टेस्ट मुकाबला हार गई। ऑस्ट्रेलिया ने वेलिंगटन टेस्ट में मेजबान कीवी टीम को 174 रन से मात दी। इस हार के बाद कप्तान टिम सउदी ने इशारा दिया कि 5 दिन पहले संन्यास लेने वाले नील वैंगनर वापसी कर सकते हैं। वैंगनर की वापसी की चर्चा के पीछे का कारण है विल ओ'रोरके का चोटिल होना। टेस्ट के तीसरे दिन रोरके को हैमस्ट्रिंग में खिंचाव हो गया था। वह अपने 8वें ओवर में पांच गेंदे करके मैदान से बाहर चले गए थे। ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में उनकी वापसी नहीं हुई। चौथे दिन उन्होंने बल्लेबाजी की लेकिन वह विकेट्स के बीच दौड़ने में असहज दिखाई दे रहे थे। कीवी कप्तान टिम सउदी ने माना कि दूसरे टेस्ट के लिए उनके टीम सेलेक्शन में गलती हुई। उन्हें चार तेज गेंदबाजों को नहीं खिलाना चाहिए था। यहां गेंद स्पिन हुई। दूसरा टेस्ट मैच क्राइस्टचर्च में खेल जाएगा। यहां कि पिच ज्यादा स्पिन नहीं होती है। अगर रोरके दूसरे टेस्ट के लिए फिट नहीं होते तो टीम को चौथे तेज गेंदबाज की जरूरत होगी और ऐसे में वैंगनर के नाम पर चर्चा हो सकती है। सउदी ने कहा, 'हमने बहुत ज्यादा चर्चा नहीं की है। हम देखेंगे कि विल के हालात कैसे है। फीजियो ने अब तक यह अपडेट नहीं दिया कि विल कब तक फिट होंगे। अगले कुछ दिन में क्या होगा हम नहीं जानते हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'हमें फैसला लेना है कि क्राइस्टचर्च में क्या होगा। वैंगनर को पिछले हफ्ते शानदार स्वागत मिला था। वह फैंसके पसंदीदा गेंदबाज रहे हैं। हम ट्रेंट बोल्ट को नहीं बुलाएंगे क्योंकि उनका ध्यान टी20 पर है।'

भारतीय टीम ने हासिल किया नंबर-1 का ताज

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया ने पहले टेस्ट मैच में न्यूजीलैंड की टीम को 172 रनों से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलियाई टीम ने सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। ऑस्ट्रेलिया के लिए मैच में गेंदबाजों और बल्लेबाजों ने कमाल का प्रदर्शन किया। कैमरून ग्रीन ने बेहतरीन बल्लेबाजी का नमूना पेश किया और उनकी वजह से ही ऑस्ट्रेलियाई टीम मैच जीतने में सफल रही। उन्होंने मैच में 174 रनों की पारी खेली। लेकिन ऑस्ट्रेलिया की जीत से भारतीय टीम को तगड़ा फायदा हुआ है। भारतीय टीम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप प्वाइंट्स टेबल में पहले नंबर पर पहुंच गई है और न्यूजीलैंड को नुकसान हुआ है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच हारते ही न्यूजीलैंड की टीम को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप की प्वाइंट्स टेबल में एक स्थान का नुकसान हुआ है।

हैदराबाद की कप्तान करते दिख सकते हैं कमिंस, स्टेन को लेकर ये है अपडेट

आईपीएल- 2024

नई दिल्ली, एजेंसी। दक्षिण अफ्रीका के महान तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के गेंदबाजी कोच के रूप में अपनी भूमिका से ब्रेक का अनुरोध किया है, भले ही फ्रेंचाइजी 22 मार्च से शुरू होने वाले टूर्नामेंट के आगामी सीज़न के लिए कप्तान के रूप में पैट कमिंस की घोषणा कर सकती है। एक रिपोर्ट के अनुसार, कहा जा रहा है कि स्टेन ने फ्रेंचाइजी से इस साल के लिए हैदराबाद में अपनी कोचिंग भूमिका से ब्रेक के बारे में पूछा है। इसमें कहा गया है कि फ्रेंचाइजी अब नए गेंदबाजी कोच की तलाश कर रही है और इस संबंध में जल्द ही घोषणा की जा सकती है।

दक्षिण अफ्रीका के लिए अपने शानदार अंतरराष्ट्रीय करियर में 93 टेस्ट, 125 वनडे और 47 टी20 मैच खेलने के अलावा, स्टेन ने आईपीएल में अब बंद हो चुकी डेक्कन चार्जर्स, सनराइजर्स हैदराबाद और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए भी खेला था। 2022 में, स्टेन एक गेंदबाजी कोच की भूमिका में हैदराबाद फ्रेंचाइजी में शामिल हो गए और उन्हें तेज गेंदबाज उमरान मलिक के विकास में एक बड़ी भूमिका निभाने का श्रेय दिया गया, जिन्होंने टी20 और वनडे में भारत की कैप हासिल की और हाल ही में उन्हें बीसीसीआई से तेज गेंदबाजी अनुबंध का मौका मिला। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सभी आवश्यक व्यवस्थाएं और आवश्यकताएं पूरी होने तक स्टेन के अगले सीज़न में फ्रैंचाइज़ी में लौटने की उम्मीद है। पिछले साल अंक तालिका में सबसे नीचे रहने के बाद, हैदराबाद को न्यूजीलैंड के पूर्व बाएं हाथ के स्पिनर डेनियल विटोरी के रूप में नया मुख्य कोच मिला, जो वर्तमान में ऑस्ट्रेलियाई टीम के सहायक कोच हैं। इस बीच, आईपीएल 2024 के लिए हैदराबाद कप्तानी के बारे में बात करते हुए, उम्मीद है कि पिछले साल दुबई में नीलामी में 20.5 करोड़ रुपये में उन्हें हासिल करने के बाद फ्रेंचाइजी कमिंस को अपना नया कप्तान घोषित करेगी।

कमिंस ने ऑस्ट्रेलिया के कप्तान के रूप में 2023 विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) और पुरुष वनडे विश्व कप जीता था। पिछले दो सीज़न में हैदराबाद की कप्तानी एडेन मार्करम ने की थी, लेकिन उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। हालाँकि, मार्करम ने एसए20 के पहले दो सीज़न में हैदराबाद फ्रैंचाइज़ी की सहयोगी टीम सनराइजर्स ईस्टर्न केप को सफलतापूर्वक ट्रॉफी तक पहुंचाया। आईपीएल 2016 की विजेता सनराइजर्स हैदराबाद 23 मार्च को ईडन गार्डन्स में दो बार की विजेता कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ अपने 2024 अभियान की शुरुआत करेगी, इसके बाद 27 मार्च को हैदराबाद के राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में पांच बार की विजेता मुंबई इंडियंस.के खिलाफ अपना पहला घरेलू मैच खेलेगी।

विराट कोहली को लेकर

इमाम-उल-हक ने बोला था ये झूठ

● आगा सलमान ने किया खुलासा, कहा- मैंने मैसेज किया था लेकिन...

नईदिल्ली, एजेंसी। विराट कोहली और गौतम गंभीर की आईपीएल 2023 के दौरान नोकझोंक हो गई थी, जिसकी काफी चर्चा रही। इस घटना के बाद पाकिस्तानी क्रिकेटर आगा सलमान ने इंस्टाग्राम पर मैसेज भेजा था। वहीं, पाकिस्तानी बल्लेबाज इमाम-उल-हक ने एक इंटरव्यू में दावा किया था कि सलमान ने मैसेज में कोहली को ईजी हो जा बच्चे लिखा। सलमान को इसपर काफी आलोचना का सामना करना पड़ा था। हालांकि, सलमान ने अब खुलासा किया है कि इमाम ने झूठ बोला था। उन्होंने कहा कि मैंने कोहली को मैसेज जरूर किया था लेकिन बच्चा नहीं कहा।

सलमान इन दिनों पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) 2024 में खेल रहे हैं। वह पीएसएल में इस्लामाबाद युनाइटेड फ्रेंचाइजी का हिस्सा हैं। सलमान ने इस्लामाबाद युनाइटेड को इंटरव्यू दिया, जिसमें उनसे पूछा गया कि आपने विराट को क्या मैसेज किया था. इसपर सलमान ने कहा, इमाम की आधी बातें माना ही ना करें। यह फ्लो में बात काट जाता है और बाद में कवर करते-करते टाइम गुजर जाता है। मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा। मुझे भारतीय लोगों से बहुत गाली पड़ी हैं। हर कोई विराट का सम्मान करता है। कौन सा क्रिकेटर है, जो उनका सम्मान नहीं करता। मैंने उन्हें मैसेज किया था लेकिन ऐसा कुछ नहीं बोला कि ईजी हो जा बच्चे। उन्होंने कहा, कोहली की गंभीर से लड़ाई हुई थी। हीटेड मोमेंट था। फिर इस तरह की सिचुएशन हो गई कि वो फनी ले में जाने लगा। जो देखने वाले थे, वो कहने लगे कि ये क्या कर रहे हैं ग्राउंड में।

मैंने उसके बाद मैसेज किया। उसका जो स्टार्ट था वो विराट भाई है। बाकी आप अंदाजा लगा सकते हैं। मैंने शादाब खान को मैसेज के बारे में बता दिया था। आपने एक वीडियो देखी होगी, जिसमें मैं, शादाब और विराट एकसाथ खड़े (एशिया कप 2023 के दौरान) हैं। सलमान ने आगे कहा, शादाब ने फिर विराट को बताया था कि इसने आपको मैसेज किया। हमने काफी मजाकिया वे में लिया और मैंने उनको बताया कि मैसेज किया था। वो मजाक था। यह शादाब की कारिस्तानी थी। शादाब इंतजार कर रहा था कि एशिया कप आने दे फिर बताऊंगा। शादाब ने जब विराट को बताया तो उन्होंने मजाकिया तौर पर लिया। मैंने उनसे कहा कि आपने मैसेज नहीं देखा। जाहिर बात है, वो कहां मेरा मैसेज देखेंगे। विराट ने कहा कि जाकर देखता हूं और उसका स्क्रीनशॉट लगाऊंगा। मैं विराट की बहुत रिस्पेक्ट करता हूं।

महिला प्रीमियर लीग 2024 - मुंबई इंडियंस ने रॉयल चैलेंजर्स को 7 विकेट से हराया

बेंगलुरू, एजेंसी। यहां के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में शनिवार को महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) सीजन 2 के 9वें मैच में गत चैंपियन मुंबई इंडियंस ने अपने पिछले मैच में हार से उबरकर शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन करते हुए रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) को सात विकेट से हरा दिया।

मुंबई इंडियंस ने पहले क्षेत्ररक्षण करते हुए तीन शुरुआती विकेट चटकाए और फिर एलिसे पेरी की 38 गेंदों में नाबाद 44 रनों की पारी के बावजूद 20 ओवरों में 131/6 के मामूली स्कोर तक पहुंच गई। जहां पेरी ने अपनी 38 गेंदों की पारी के दौरान पांच चौके लगाए, वहीं जॉर्जिया वेयरहैम 27 रन के साथ दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे।जीत के लिए 132 रनों का पीछा करते हुए मुंबई इंडियंस ने एलिसे पेरी, यास्तिका भाटिया और नैट साइवर-ब्रंट के योगदान की बदौलत 15.1 ओवर में 133/3 का स्कोर बना लिया और 29 गेंद शेष रहते मैच जीत लिया।

दिल्ली कैपिटल्स पर शुरुआती दौर में जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत करने के बाद मुंबई इंडियंस को अपने पिछले मैच में यूपी वारियर्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। शनिवार की जीत के बाद मुंबई इंडियंस चार मैचों में छह अंकों के साथ आगे है, जबकि दिल्ली कैपिटल्स चार अंकों पर बनी हुई है।

दिग्गज गोल्फर टाइगर वुड्स को बॉब जोन्स पुरस्कार

फार हिल्स (अमेरिका), एजेंसी। दिग्गज गोल्फर टाइगर वुड्स को अमेरिकी गोल्फ एसोसिएशन (यूएसजीए) के सर्वोच्च सम्मान बॉब जोन्स पुरस्कार के लिए चुना गया है। वुड्स ने पीजीए टूर में अपने करियर में 82 जीत हासिल की, जिनमें 15 मेजर खिताब भी शामिल हैं।

वुड्स 9 बार के यूएसजीए चैंपियन हैं। वुड्स को 2022 में विश्व गोल्फ हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था। उन्हें 2019 में डोनाल्ड ट्रम्प से प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम सम्मान मिला था। वुड्स ने बयान में कहा, 'बॉब जोन्स जिस निष्ठा के साथ खेलते थे, उसके कारण वह हमारे खेल का एक स्तंभ थे और मैं उनके नाम पर यह पुरस्कार पाकर और इससे पहले यह पुरस्कार पाने वाले खिलाड़ियों की सूची में शामिल होकर वास्तव में गौरवान्वित हूं।

वुड्स को 12 जून को उत्तरी कैरोलिना में यूएस ओपन के दौरान सम्मानित किया जाएगा।

राजनीति में डेब्यू करेंगे पैरालिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट देवेंद्र झाझरिया

नईदिल्ली, एजेंसी। बीजेपी ने शनिवार को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए 195 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी। इस लिस्ट में राजस्थान के 15 उम्मीदवारों का नाम भी शामिल है। इन 15 सीटों में चुरू के मौजूदा सांसद राहुल कासवां का नाम शामिल नहीं है। बीजेपी बीते 33 साल से इस सीट पर कासवां परिवार को ही टिकट दे रही थी लेकिन इस बार उन्होंने पैरालंपिक खेलों में दो बार गोल्ड मेडल जीतने वाले देवेंद्र झाझरिया पर भरोसा जताया है।

33 साल से बीजेपी के टिकट पर लड़ रहा है कासवां परिवार

कास्वां परिवार बीते कई सालों से राजनीति में है। वह बीते 33 साल से चुरू में बीजेपी के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। राहुल कासवां 2014 से इस सीट से सांसद हैं। इससे पहले उनके पिता भी तीन बार इसी सीट से सांसद रहे थे। इसके बावजूद बीजेपी ने इस बार इस परिवार को टिकट नहीं दिया है। राहुल कास्वां और राजेंद्र राठौड़ के बीच हुए विवाद को इसका कारण बताया जा रहा है।

राजेंद्र राठौड़ और राहुल कासवां का विवाद

पिछले साल राजस्थान में हुए विधानसभा चुनाव में सात बार के विधायक राजेंद्र राठौड़ तारानगर सीट से चुनाव हार गए थे। इसके बाद उन्होंने कहा कुछ जयचंद है जिनके भितरघात के कारण वह चुनाव हार गए। वहीं उनके समर्थकों ने खुलकर राहुल कासवां को जयचंद बताया था। इसी के बाद विवाद शुरू हुआ था। दोनों के बीच बयानबाजी जारी रही और इसे ही कास्वां का नाम कटने का कारण बताया जा रहा है।

कासवां से बीजेपी ने पैरालंपिक खिलाड़ी देवेंद्र को मौका दिया जो टिकट मिलने पर काफी खुश हैं। उन्होंने कहा, ये मेरे लिए बड़ी खुशी का पल है, देश के 5 से 7 करोड़ दिव्यांग लोगों में खुशी है कि आज भाजपा ने एक दिव्यांग व्यक्ति को टिकट दिया है।

कौन हैं देवेंद्र झाझरिया

42 साल के झाझरिया को बचपन की त्रासदी जिसके कारण उनका बायां हाथ काटना पड़ा, वह उन कई बाधाओं में से एक थी, जिनसे झाझरिया ने सफलता की सीढ़ी चढ़ने के लिए संघर्ष किया। झाझरिया ने 2004 और 2016 के ओलंपिक खेलों में गोल्ड मेडल जीता था। वहीं टोक्यो खेलों में सिल्वर मेडल जीता था। वह 2014 एशियाई पैरा खेलों में रजत विजेता होने के अलावा दो बार पैरा विश्व चैंपियनशिप पदक विजेता भी हैं। वह विश्व रिकॉर्ड धारक भी रह चुके है।

संक्षिप्त समाचार

जल शक्ति मंत्रालय ने शुरू की स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग पहल

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र ने भारत के पर्यटन क्षेत्र में स्वच्छता प्रथाओं को बढ़ाने के प्रयासों के तहत लोकप्रिय स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने के लिए स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग नामक पहल शुरू की है। यह जानकारी केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने दी। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के तहत पेयजल और स्वच्छता विभाग ने केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय के साथ मिलकर इस अवधारणा को पेश किया है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर सौंदर्य और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने के लिए पर्यटकों के लिए विश्व स्तरीय स्वच्छता युक्त सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया। शेखावत ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि हमारे देश के आतिथ्य और विकास के राजदूत के रूप में हमारी सभी पर्यटक सुविधाओं को हमारे पर्यटन स्थलों के सौंदर्य और स्वच्छता स्तर को बढ़ाने में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में नर्मदापुरम के मध्य मढ़ई में स्थित बाइसन रिसार्ट्स ने पहले पांच स्वच्छता ग्रीन लीफ रेटिंग प्रमाणपत्र प्राप्त कर अग्रणी स्थान हासिल किया है। यह सम्मान जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं के प्रति रिसार्ट की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दंगों में नुकसान पर धामी सरकार का होगा सख्त ऐक्शन, वूसली के लिए बनेगा सख्त कानून

देहरादून, एजेंसी। दंगा, हड़ताल और विरोध-प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति को होने वाले नुकसान की भरपाई का कानून सोमवार को प्रस्तावित कैबिनेट बैठक में आ रहा है। पुष्कर सिंह धामी सरकार उत्तराखंड में अध्यादेश के जरिए लागू कर सकती है। इस कानून के तहत सम्पत्ति को हुए नुकसान की भरपाई घटना के दिन वाले बाजार मूल्य के आधार पर उपद्रवियों से की जाएगी। विरोध-प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति को निशाने पर लेने की प्रवृत्ति पर लगाम कसने के लिए गृह विभाग ने उत्तराखंड लोक एवं निजी संपत्ति क्षति वसूली कानून तैयार कर लिया है। इसे सोमवार को प्रस्तावित कैबिनेट बैठक के एजेंडे में रखा गया है। इस कानून के तहत उपद्रवियों से तय समय के भीतर नुकसान की शत-प्रतिशत भरपाई की जाएगी। इसके अनुसार वसूली बाजार दर पर होगी, कुछ मामलों में यदि ट्रिब्यूनल को उचित लगता है। तो हर्जाने की वसूली कुल लागत से दोगुनी तक हो सकती है। सूत्रों के अनुसार, सरकार इस कानून को अध्यादेश के जरिए भी लागू कर सकती है। प्रस्तावित कानून के तहत नुकसान की भरपाई के लिए रिटायर जिजा जज की अध्यक्षता में स्वतंत्र ट्रिब्यूनल बनाया जाएगा, जिसे सिविल कोर्ट की शक्तियां प्रदान की जाएंगी। सार्वजनिक सम्पत्ति को हुए नुकसान की भरपाई के लिए विभागाध्यक्ष घटना के तीन महीने के भीतर ट्रिब्यूनल के सामने अपील करेंगे।

राजस्थान में 7 प्रत्याशी नए, शेखावत, मेघवाल और चौधरी समेत 8 प्रत्याशी रिपीट

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान की 25 लोकसभा सीटों में से 15 के लिए प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया है। बीजेपी ने 7 नए प्रत्याशियों को टिकट दिया है। जबकि 8 प्रत्याशी रिपीट किए है। मोदी कैबिनेट में शामिल तीनों मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, गजेंद्र सिंह शेखावत और कैलाश चौधरी पर फिर विश्वास जताया गया है। चूरू से रामसिंह कस्वां का टिकट काट दिया है। जबकि नागौर से ज्योति मिर्धा को टिकट दिया गया है। बता दें ज्योति मिर्धा को विधानसभा का चुनाव हारने के बाद भी टिकट दिया गया है। बीकानेर - अर्जुन राम मेघवाल, चुरू - देवेंद्र झाझड़िया,सीकर - सुमेधानंद सरस्वती. अलवर - भूपेंद्र यादव ,नागौर - ज्योति मिर्धा, पाली - पीपी चौधरी, जोधपुर - गजेंद्र सिंह शेखावत. बाड़मेर - कैलाश चौधरी, जालोर - लुंबाराम चौधरी,उदयपुर - मन्नालाल रावत, बांसवाड़ा - महेंद्रजीत सिंह मालवीय, चित्तौड़गढ़ - सीपी जोशी, कोटा - ओम बिरला झालावाड़ - दुष्यंत सिंह और भरतपुर - रामस्वरूप कोली को टिकट दिया है। बीजेपी ने अपनी पहली लिस्ट में राजस्थान के लिए 15 प्रत्याशियों के नाम की घोषणा कर दी है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव को अलवर से टिकट दिया है। भूपेंद्र यादव पहली बार चुनावी मैदान में उतरे है।

एनसीपी-शिवसेना में टूट के बाद बदल गई महाराष्ट्र की तस्वीर

मुंबई, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा चुनाव के लिए 195 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट की घोषणा कर दी है, लेकिन महाराष्ट्र को लेकर तस्वीर अभी तक स्पष्ट नहीं हो सकी है। एनडीए एवं विपक्षी गठबंधन दोनों का मानना है कि लोकसभा में उत्तर प्रदेश के बाद सर्वाधिक संख्या में सांसद भेजने वाले महाराष्ट्र में सीट आवंटन का एक मात्र फार्मूला जीत की संभावना है। महाराष्ट्र में 2019 के बाद से कई बार राजनीतिक उथल-पुथल देखने को मिली है। वर्ष 2019 में उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने भाजपा के साथ अपने पुराने गठबंधन को तोड़ दिया था फिर शिवसेना और शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) को भी दलों में विभाजन का सामना करना पड़ा।

शिवसेना के अधिकतर विधायक अब मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ हैं जिन्होंने भाजपा के साथ हाथ मिला लिया हैं। इसके अलावा अजित पवार भी अपने समर्थक पार्टी विधायकों के साथ पिछले साल शरद पवार नीत एनसीपी से अलग होकर सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल हो गए। सत्तारूढ़ एवं विपक्षी दलों के नेताओं ने बताया कि दलों के विभाजन के बाद समीकरण बदलने के कारण सीटों का बंटवारा एक मुश्किल काम हो गया है।

भाजपा ने तत्कालीन अविभाजित शिवसेना के साथ मिलकर 2019 में 41 सीट पर जीत हासिल की थी और इस बार भाजपा ने अपने राष्ट्रवादी जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को 45 सीट जिताने का लक्ष्य रखा है जबकि विपक्षी कांग्रेस 2019 का प्रदर्शन नहीं दोहराना चाहेगी जब उसे मात्र एक सीट पर जीत मिली थी। भाजपा की महाराष्ट्र इकाई के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि सीट बंटवारे के मामले पर केंद्रीय नेतृत्व के साथ चर्चा की जा रही है। विपक्षी गठबंधन 'महा विकास आघाडी' में ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी), एनसीपी का शरद पवार नीत धड़ा और कांग्रेस शामिल हैं। विपक्षी गठबंधन प्रकाश आंबेडकर नीत वंचित बहुजन आघाडी (वीबीए) को लुभाने की कोशिश कर रहा है लेकिन बाबा साहेब आंबेडकर के पौत्र ने इस बारे में अभी तक कोई औपचारिक घोषणा नहीं की है।

मार्च में पीएम समेत भाजपा के दिग्गज नेताओं का छत्तीसगढ़ दौरा

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव का आगाज हो चुका है। इसके साथ ही प्रदेश में आने वाले दिनों में भारतीय जनता पार्टी के कई दिग्गज नेताओं का दौरा है। फरवरी में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जांजगीर चांपा में एक बड़ी सभा को संबोधित कर लोकसभा चुनाव का बिल्कुल फूंक चुके हैं। वही अब मार्च के महीने में सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी छत्तीसगढ़ दौरे पर आ रहे हैं तो उसके बाद केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह छत्तीसगढ़ में बड़ी आमसभा करेंगे।

छत्तीसगढ़ में रामलला दर्शन योजना और महतारी वंदन योजना को लेकर जमकर चर्चा हो रही है। इन चर्चाओं के बीच लोकसभा चुनाव के ठीक पहले 8 मार्च को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजधानी रायपुर आ रहे हैं। रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में पीएम मोदी एक बड़ी आम सभा करेंगे। 8 मार्च को विश्व महिला दिवस के दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों प्रदेश की सभी पात्र महिलाओं को महतारी वंदन योजना के तहत मिलने वाली पहली किस्त की राशि 1000 रुपए उनके खाते में डालने की तैयारी की जा रही है। भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लगने से पहले महतारी वंदन योजना की पहली किस्त महिलाओं को दिलाने की तैयारी में जुट गई है। भाजपा की यह कोशिश है कि आचार संहिता लगने से पहले प्रधानमंत्री की ज्यादा से ज्यादा राज्यों में सभाएं की जा सके। जिससे कि केंद्र सरकार की योजना और मोदी की गारंटी को जल्द से जल्द जनता के बीच लागू किया जा सके। इसी तर्ज पर छत्तीसगढ़ में भी भारतीय जनता पार्टी एक-एक कर मोदी की गारंटी को पूरा करने में लगी है। छत्तीसगढ़ में 70 लाख से ज्यादा महिलाओं ने महतारी वंदन योजना को लेकर आवेदन कर दिया है। जिसमें पत्र महिलाओं की सूची लगभग तैयार हो गई है। माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों प्रदेश की महिलाओं को महतारी वंदन योजना की पहली किस्त 8 मार्च को दी जा सकेगी।

वहीं दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह छत्तीसगढ़ आ रहे है। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के ठीक दूसरे दिन केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह छत्तीसगढ़ में एक बड़ी आमसभा को संबोधित करेंगे। इसके अलावा वह भाजपा किसान मोर्चा के कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह का यह दौरा पहले दो या तीन मार्च को होने वाला था, लेकिन उसे आगे बढ़ा दिया गया है।

छात्र की मौत मामले में राज्यपाल की कार्रवाई, विश्वविद्यालय के कुलपति को किया निलंबित

तिरुवनंतपुरम। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शनिवार को केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एम आर शशिंद्रन को निलंबित कर दिया। राज्यपाल ने यह कार्रवाई हाल हीम में दूसरे वर्ष की छात्र की मौत मामले में की है।

मालूम हो कि सरकारी पशु चिकित्सा कॉलेज के एक छात्र ने 18 फरवरी को अपने छात्रावास के कमरे में फंदे से लटका हुआ पाया गया था। छात्र की पहचान जेएस सिद्धार्थ के रूप में की गई है। वहीं, राज्यपाल ने अपने निलंबन आदेश में कहा कि प्रोफेसर शशिंद्रन द्वारा दी गयी रिपोर्ट 18 फरवरी को 20 वर्षीय सिद्धार्थ की मौत से जुड़े घटनाक्रम के दौरान कुलपति की ओर से कर्तव्यों में घोर लापरवाही का प्रमाण है। उन्होंने कुलपति की लापरवाही पर चिंता व्यक्त करते हुए घटना की न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय के किसी मौजूदा या सेवानिवृत्त न्यायाधीश से इस पूरे घटना का जांच कराने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि केरल उच्च न्यायालय के महापंजीयक से इस मामले में उचित अनुरोध किया जाएगा। मृत छात्र के माता-पिता ने दावा किया है कि कॉलेज में पढ़ने वाले उसके कुछ अन्य सहपाठियों ने उन्हें बताया है कि स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के कुछ स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनके बेटे की पिटाई की थी।

बीजेपी ने एमएलसी की नौ सीटों के लिए भेजे 36 नाम

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी ने विधान परिषद की नौ सीटों के लिए करीब 36 नामों के पैनल को हरी झंडी दे दी। यूपी के लोकसभा चुनाव प्रभारी बैजयंत जय पांडा बैठक के बाद सूची लेकर दिल्ली रवाना हो गए। इससे पहले शनिवार को पांच कालिदास मार्ग स्थित मुख्यमंत्री आवास में सीएम योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में कोर कमेटी की बैठक हुई। खबर है कि जिन मौजूदा विधान परिषद सदस्यों का कार्यकाल खत्म हो रहा है, उनमें से अधिकांश के नाम भी पैनल में शामिल किए गए हैं। इसमें 10 सीटें भाजपा और एक उसके सहयोगी अपना दल (एस) के पास थीं। जबकि एक-एक सीट सपा और बसपा के पास है। संख्या बल के हिसाब से इस बार भाजपा और उसके सहयोगी दल के हिस्से 10 सीटें आएंगी। एक सीट से अपना दल (एस) से आशीष पटेल का परिषद जाना तय है। बाकी नौ सीटों पर संभावित दावेदारों की सूची पर भाजपा कोर कमेटी की बैठक में मंथन हुआ।पार्टी एमएलसी प्रत्याशियों के जरिए भी सामाजिक समीकरण साधने का प्रयास करेगी।

वरुण गांधी का टिकट कटना तय, मेनका को लेकर भी संशय

नईदिल्ली, एजेंसी। भाजपा ने लोकसभा चुनावों के लिए घोषित पहली सूची में प्रधानमत्री नरेंद्र मोदी समेत 195 उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए हैं, लेकिन इनमें बिहार, महाराष्ट्र व कर्नाटक जैसे बड़े राज्य बाकी हैं, जहां गठबंधन को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पार्टी ने उत्तर प्रदेश में अधिकांश पुराने चेहरों पर दिखाया भरोसा दिखाया है, लेकिन दिल्ली में भावी रणनीति को देखते हुए कई चेहरे बदले हैं। क्षत्रपों में भी फेरबदल किया गया है और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को केंद्रीय राजनीति में लाया जा रहा है। बिगड़े बोल वाले नेताओं से दूरी बनाई गई है। पार्टी ने राज्यसभा के 11 सांसदों को भी लोकसभा के मैदान में उतारा है। मंत्री स्मृति ईरानी, चंदौली से केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, लखीमपुर-खीरी से केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा (टेनी) महराजगंज से केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी और मोहनलालगंज से राज्य मंत्री कौशल किशोर को फिर से चुनाव मैदान में उतारा गया है।

सामने आई आंध्र प्रदेश में रेल हादसे की वजह, ड्राइवर मोबाइल पर देख रहा था क्रिकेट मैच; 14 लोगों ने चुकाई लापरवाही की कीमत

नई दिल्ली, एजेंसी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को दावा किया कि 29 अक्टूबर 2023 को आंध्र प्रदेश में जब दो यात्री रेलगाड़ियों की टक्कर हुई, तो उस समय एक ट्रेन का लोको पायलट और सहायक लोको पायलट मोबाइल फोन पर क्रिकेट मैच देख रहे थे। नए सुरक्षा उपायों के बारे में बात करते हुए उन्होंने इस दुर्घटना का जिक्र किया।

आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले के कंटाकापल्ली में हावड़ा-चेन्नई मार्ग पर रायगड़ा पैसेजर ट्रेन ने विशाखापत्तनम पलासा ट्रेन को पीछे से टक्कर मार दी थी। इस दुर्घटन जिसमें 14 लोगों की मौत हो गई थी और 50 से अधिक यात्री घायल हुए थे।

रेल मंत्री ने बताया कि आंध्र प्रदेश में यह दुर्घटना इस कारण हुई, क्योंकि लोको पायलट और सह-पायलट दोनों का ध्यान क्रिकेट मैच की वजह से भटक गया था। हम ऐसी प्रणाली स्थापित कर रहे हैं जो यह सुनिश्चित कर सकती है कि पायलट और सहायक पायलट का ध्यान पूरी तरह से ट्रेन चलाने पर रहे। हम हर घटना का मूल कारण जानने का प्रयास करते हैं ताकि इसकी पुनरावृत्ति न हो।

रेलवे सुरक्षा आयुक्तों (सीआरएस) की जांच रिपोर्ट अभी तक सार्वजनिक नहीं की गई है। हालांकि, घटना के एक दिन बाद प्रारंभिक रेलवे जांच के हवाले से कहा गया था कि ट्रेन हादसे के लिए रायगड़ा यात्री गाड़ी के लोको पायलट और सहायक लोको पायलट जिम्मेदार हैं तय नियमों का उल्लंघन किया। इस हादसे में चालक दल के दोनों सदस्यों की मौत हो गई थी। आने वाले वर्षों में बनेंगी एक हजार से अधिक अमृत भारत ट्रेन रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि भारत आने वाले वर्षों में नयी पीढ़ी की कम से कम 1,000 अमृत भारत ट्रेन का निर्माण करेगा। 250 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने वाली ट्रेन बनाने का काम जारी है। वैष्णव ने यह भी कहा कि रेलवे ने पहले ही वंदे भारत ट्रेनों के निर्यात पर काम करना शुरू कर दिया है और आने वाले पांच वर्षों में देश द्वारा पहला निर्यात किये जाने की उम्मीद है। नरेन्द्र मोदी नीत सरकार के पिछले 10 वर्षों में रेलवे द्वारा की गई परिवर्तनकारी पहलों पर उन्होंने कहा कि दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल-चिनाब पुल और कोलकाता मेट्रो के लिए नदी के नीचे पहली जल सुरंग रेल क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति है।

चार धाम यात्रा पर पड़ेगी महंगाई की मार, केदारनाथ हेली सेवा का 5 फीसदी बढ़ेगा किराया

देहरादून, एजेंसी। उत्तराखंड चार धाम यात्रा 2024 पर जाने वाले तीर्थ यात्रियों को महंगाई का सामना करना पड़ेगा। बदरीनाथ, गंगेत्री-यमुनोत्री समेत चारों धामों में यूपी, दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल से भारी संख्या में तीर्थ यात्री दर्शन करने को आते हैं। आगामी यात्रा सीजन में केदारनाथ धाम हेली सेवा किराया पिछले साल के मुकाबले बढ़ेगा। केदारनाथ हेली सेवा के किराये में पांच फीसदी तक बढ़ोतरी होगी। इस बार भी टिकट बुकिंग आईआरसीटीसी वेबसाइट के जरिए ही होगी।

केदारनाथ सहित चारों धामों के कपाट खुलने की तिथियां घोषित हो चुकी हैं। इसी के साथ उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूकाडा) के पास देशभर से हेली टिकट बुकिंग की पूछताछ आने लगी है। यूकाडा पिछले साल ही धाम के लिए तीन साल तक सेवा देने के लिए ऑपरेटर और किराया तय कर चुका है। तय शर्त के अनुसार ऑपरेटर बेसिक किराए में प्रतिवर्ष पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी कर पाएंगे, इस तरह इस बार मौजूदा किराए में पांच प्रतिशत की ही बढ़ोतरी हो पाएगी। पिछले साल हेली सेवाओं का एक तरफ का किराया सिरसी से 2749, फाटा से 2750 और गुप्तकाशी से 3870 रुपये तय किया गया था। इस बार भी केदारनाथ में नौ ऑपरेटर ही सेवाएं देंगे। इसमें एक मात्र बदलाव ट्रांसभारत के रूप में हुआ है, जिसने केस्ट्रल एविएशन की जगह ली है। गत वर्ष यात्रा शुरू होने से ठीक पहले केदारनाथ धाम में हेलीकॉप्टर रोटर की चपेट में आने से यूकाडा के वित्त नियंत्रक की मौत हो गई थी। इसके बाद यूकडा ने संबंधित हेली कंपनी केस्ट्रल पर रोक लगा दी है।

साय सरकार का ऐलान, 12 मार्च को किसानों के खातों में आएंगे 13 हजार करोड़ रुपए

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किसानों शनिवार को किसानों को लेकर बड़ा ऐलान किया है। प्रदेश के किसानो को धान की अंतर की राशि लगभग 13 हजार करोड़ रुपए आने वाले 12 मार्च को दिए जाने की घोषणा सीएम साय ने की है। इसके साथ ही सीएम ने पत्थलगांव में लिंक कोर्ट शुरू करने की बात कही है। बतादें कि सीएम विष्णुदेव साय आज जशपुर के दौरे पर थे जहां उन्होंने किसानों के साथ-साथ कई बड़ी घोषणा की है। छत्तीसगढ़ के सीएम आज जशपुर जिले के फरसाबहार विकासखंड के अंतर्गत ग्राम तामामुंडा में स्थित गिरी गोवर्धन धाम के सार्वजनिक सांस्कृतिक मंडप सहित अखिल भारतीय महाकुल समाज लोकार्पण समारोह में शामिल हुए। जहां सीएम साय ने 12 मार्च को किसानों को धान के अंतर की राशि लगभग 13 हजार करोड़ रुपए का भुगतान करने की बात कही है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने पत्थलगांव में लिंक कोर्ट प्रारंभ करने की घोषणा भी की। उन्होंने गिरी गोवर्धन पर्वत के सुगम सीसी मार्ग निर्माण के लिए 32 लाख रुपए, फरसाबहार में सांस्कृतिक मंडप के लिए 10 लाख रुपए, शिवमन्दिर से कासाटोली 12 लाख रुपए की राशि देने की घोषणा की। सीएम विष्णुदेव साय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मेरे पूरे राजनैतिक जीवन में पहली बार

स्वागत घी से तौल कर किया गया है। इसके लिए मैं पूरे यादव समाज का आभारी हूं। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि हमने ढाई महीने के भीतर छत्तीसगढ़ को विकास के पथ पर ले जाने का कार्य किया है। हमने 18 लाख लाख प्रधान मंत्री आवास स्वीकृत किए। हमने माताओं को महतारी वंदन योजना से आर्थिक रूप से सशक्त करने का प्रयास कर रहे है। इस साल हमने रिकार्ड धान की खरीदी की है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि 15 दिनों में तेंदुपत्ता की खरीदी समर्थन मूल्य में हो जाएगी। साथ ही तेंदुपत्ता संग्राहको के लिए चरण पादुका एवं बच्चो के लिए छात्रवृत्ति प्रारंभ की जाएगी। हमने मोदी के गारंटी के तहत कार्य करते हुए लोगों के सपने को साकार करने का कार्य कर रहे है।

हिमाचल कांग्रेस में रार बरकरार, सीएम सुक्खू के साथ तीखी बहस के बाद कैबिनेट मीटिंग छोड़ गए 2 मंत्री

शिमला, एजेंसी।
हिमाचल प्रदेश में सत्तारूढ़ कांग्रेस के भीतर और सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू के लिए संकट अभी खत्म होता नहीं दिख रहा है। शनिवार को सुक्खू कैबिनेट की बैठक के दौरान जबर्दस्त नाटकीय घटनाक्रम देखने को मिला। नीतिगत फैसलों को लेकर 'तीखी बहस' के बाद मंत्री जगत नेगी और रोहित ठाकुर बीच में ही बैठक छोड़कर चले गए।

सूत्रों ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि हालांकि उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री द्वारा कथित तौर पर मनाए जाने के बाद शिक्षा मंत्री ठाकुर बैठक में वापस लौट आए। कांग्रेस हिमाचल में अपने 6 विधायकों द्वारा राज्यसभा चुनाव में राज्य की एकमात्र सीट के लिए भाजपा उम्मीदवार हर्ष महाजन को वोट देने के बाद राज्य में उत्पन्न हुए राजनीतिक संकट को दूर करने का प्रयास कर रही है।

राजस्व मंत्री नेगी ने कहा कि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में बैठक निर्धारित समय दोपहर 11 बजे के बजाय दोपहर

लगभग 12:30 बजे शुरू हुई थी। उन्होंने कहा कि उन्हें किसी और कार्यक्रम में जाना था और उन्हें देर हो रही थी, इसलिए वह बैठक बीच में ही छोड़कर चले गए थे।

रोहित ठाकुर ने मीडियाकर्मियों को संबोधित करने के दौरान कैबिनेट मीटिंग बीच में छोड़कर जाने पर साफ दी। उन्होंने कहा कि वह किसी से मिलने के लिए कुछ देर के लिए बैठक छोड़कर चले गए थे, लेकिन बाद में वापस लौट आए थे। सूत्रों ने हालांकि बताया कि मंत्रियों के जाने से पहले, कुछ नीतिगत निर्णयों पर 'तीखी बहस' हुई थी। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने घटना का जिक्र करते हुए कहा कि राजनीति समझौतों का खेल है और पार्टी के हित में बेहतर समझ होनी चाहिए।

इससे पहले दिन में हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस के बागी विधायक राजेंद्र राणा ने दावा किया कि मुख्यमंत्री सुक्खू की कार्यशैली से 'घुटन महसूस कर रहे' पार्टी के नौ और विधायक उनके संपर्क में हैं। राणा ने कांग्रेस के पांच अन्य विधायकों के साथ राज्यसभा चुनावों में 'क्रॉस वोटिंग' की थी।

कैबिनेट ने इन कामों को दी मंजूरी

इस बीच, कैबिनेट ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए आबकारी नीति को मंजूरी दे दी और पशु चिकित्सा अधिकारियों का समर्थन करने के लिए पशुपालन विभाग में 1,000 श्रमिकों को शामिल करने की मंजूरी दे दी।

कैबिनेट ने लोक निर्माण विभाग में जेओए (आईटी) के 30 पद और लोक निर्माण विभाग की वास्तु इकाई में वरिष्ठ 'ड्राफ्ट्समैन' के चार रिक्त पद भरने को भी मंजूरी दी है।

वोट के बदले नोट मामला, सात जजों की संविधान बेंच सोमवार को सुनाएगी फैसला

नई दिल्ली, एजेंसी। सांसदों और विधायकों द्वारा सदन में वोट देने और मतदान करने के बदले रिश्वत लेने के मामले में सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की संविधान पीठ सोमवार को अपना फैसला सुनाएगी।

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने पांच अक्टूबर, 2023 को इस मुद्दे पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। दलीलों के दौरान केंद्र सरकार ने कहा था कि रिश्वतखोरी कभी छूट का विषय नहीं हो सकती है। संसदीय विशेषाधिकार का मतलब किसी सांसद या विधायक को कानून से ऊपर रखना नहीं है। अटॉर्नी जनरल, सॉलिसिटर जनरल और इस मामले में अदालत की सहायता कर रहे न्याय मित्र पीएस पटवालिया सहित कई वकीलों द्वारा की गई दो दिन की बहस के बाद फैसला सुरक्षित रखा गया था। सात न्यायाधीशों की पीठ झामुमो रिश्वत मामले में 1998 में शीर्ष अदालत की पांच न्यायाधीशों की पीठ द्वारा दिए गए फैसले पर पुनर्विचार कर रही है। उस फैसले में सांसदों और विधायकों को सदन में भाषण देने या वोट देने के लिए रिश्वत लेने पर अभियोजन से छूट दी गई थी। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने मामले में दलीलें रखते हुए अदालत से संविधान के अनुच्छेद 105 के तहत छूट के पहलू पर नहीं जाने का आग्रह किया था। मेहता ने कहा था कि रिश्वतखोरी का अपराध तब होता है जब रिश्वत दी जाए और कानून निर्माताओं (सांसद-विधायक) द्वारा स्वीकार की जाए। इससे भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत निपटा जा सकता है।

आरएनआई रजिस्ट्रेशन : जेएचएएचआईएन/2007/24306, समाचार पत्र के स्वामी,प्रकाशक,मुद्रक सुमन कुमार द्वारा शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड,काठीटांड,नियर टैंडर बगीचा,रातू,रांची(झारखंड)-835222 से मुद्रित एवं एच. आई.- 67,हरमू हाउसिंग कॉलोनी रांची (झारखंड)- 834002 से प्रकाशित,संपादकः सुमन कुमार। संपर्क नं. 9470578773,संपर्क नं. (का.) 0651-7960613,फैक्स नं. 0651- 7960613, ईमेलः purvanchalsurya@yahoo.co.in / purvanchalsurya0@gmail.com लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। न्यायालय से संबंधित सभी मामले रांची से ही निबटाये जाएंगे। (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार)